स्तोत्रसंहिता।

पहिला भाग।

१ क्या ही धन्य है वह पुरुष जो
दुष्टों की युक्ति पर नहीं चला
और न पापियों के मार्ग में खड़ा हुआ
न ठट्ठा करनेहारों के बैठक में बैठा है।
२ वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न
रहता
और उस की व्यवस्था पर रात दिन
ध्यान करता रहता है।
३ सो वह उस वृक्ष के समान होता है
जो बहती नालियों के किनारे
लगाया गया हो
और अपनी ऋतु में फलता हो
और जिस के पत्ते मुरझाने के नहीं
और जो कुछ वह पुरुष करे सो सुफल
होता है।
४ दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते
पर उस भूसी के समान होते हैं जो
पवन से उड़ जाती है।
५ सो दुष्ट लोग न्याय में स्थिर न रह सकेंगे
और न पापी धर्म्मियों की मण्डली में
ठहरेंगे।
६ क्योंकि यहोवा धर्म्मियों का मार्ग
जानता है
और दुष्टों का मार्ग लोप हो जावेगा।

२ जातियां हुल्लड़ क्यों मचातीं १
और जाति जाति के लोग क्यों
व्यर्थ बात सोच रहे हैं।
यहोवा के और उस के अभिषिक्त के २
विरुद्ध
पृथिवी के राजा खड़े होते हैं
और हाकिम आपस में सम्मति करते
हैं कि
आओ हम उन के बान्धे हुए बन्धनों ३
को तोड़ डालें
और उन बन्धन की रस्सियों को फेंक
देवें।
जो स्वर्ग में बिराजमान् है सो हंसेगा ४
प्रभु उन को ठट्ठों में उड़ावेगा।
तब वह उन से कोप करके बोलेगा ५
और अपना भड़का हुआ क्रोध दिखाके
उन्हें घबरावेगा।
पर मैं तो अपने ठहराये हुए राजा को ६
अपने पवित्र पर्ब्बत सिय्योन् की गद्दी
पर बैठा चुका हूं।
मैं इस वचन का प्रचार करूंगा ७
कि यहोवा ही ने मुझ से कहा तू
मेरा पुत्र है
आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।

८ तू मुझ से [illegible] ा मैं [illegible] यों को
तेरे भाग मे कर देऊंगा
और पृथिवी के छोर लों के देशों को
तेरी निज भूमि कर दूंगा।
९ तू उन्हें लो[illegible] टुक[illegible]
करेगा
तू मिट्टी के बर्त्तन की नाईं उन्हें
चकनाचूर करेगा।
१० सो अब हे राजाओ बुद्धिमान होओ
हे पृथिवी के न्यायियो यह उपदेश
ग्रहण करो।
११ यहोवा की सेवा डरते हुए करो
और थरथराते हुए मगन होओ।
१२ पुत्र को चूमो न हो कि वह कोप करे
और तुम मार्ग ही में नष्ट हो जाओ
क्योंकि क्षण भर में उस का कोप भड़केगा
क्या ही धन्य हैं वे सब जो उस के
शरणागत हैं।

३ दाऊद का स्तोत्र। उस समय का जब वह अपने पुत्र अबशालोम् के साम्हने से भागा जाता था।

१ हे यहोवा मेरे सतानेहारे क्या ही बढ़
गये हैं
बहुत से लोग मेरे बिरुद्ध उठे हैं।
२ बहुत से लोग मेरे विषय में कहते हैं
कि उस का बचाव परमेश्वर से नहीं
हो सकता। सेला।
३ पर हे यहोवा तू तो मानो मेरी चारों
ओर ढाल है
तू मेरी महिमा का मूल और मेरा
सिर ऊंचा करनेहारा है।
मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं ४
और वह अपने पवित्र पर्व्वत पर से
मुझे उत्तर देता है। सेला।
मैं तो लेटा और सो गया ५
फिर जाग उठा क्योंकि यहोवा मुझे
संभाले था।
मैं प्रजा में से दस दस हजार से भी ६
नहीं डरता
जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बांधे
खड़े हैं।
हे यहोवा उठ हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ७
क्योंकि तू मेरे सब शत्रुओं के जभड़ों
पर मारता आया है
तू ने दुष्टों की दाढ़ों को तोड़ डाला है।
उद्धार यहोवा ही से होता है ८
हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा
पर होवे। सेला।

४ प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का स्तोत्र जो तारवाले बाजों के साथ गाया जावे।

हे मेरे धर्म्ममय परमेश्वर जब मैं १
पुकारूं तब तू मुझे उत्तर दे
जब जब मैं सकेती में पड़ा तब तब
तू ने मुझे फैलाव दिया
सो अब भी मुझ पर अनुग्रह करके
मेरी प्रार्थना सुन ले।
हे प्रसिद्ध पुरुषो मेरी महिमा के बदले २
कब लों अनादर होता रहेगा
तुम कब लों व्यर्थ बात में प्रीति
रक्खोगे और झूठी युक्ति बिचारते
रहोगे। सेला।

३ पर य[illegible]ान [illegible]ा कि यहोवा ने
भक्त को अपने लिये अलग कर
रक्खा है
जब मैं यहोवा को पुकारूं तब वह
सुनेगा ।
४ क्रोध तो करो पर पाप मत करो
अपने अपने बिछौने पर पड़े हुए मन
ही मन सोचो और चुपके रहो। सेला।
५ बलिदान धर्म्म से चढ़ाओ
और यहोवा पर भरोसा रक्खो ।
६ बहुत से लोग तो कहते हैं कि कौन
हम को सुखभोग करावेगा
हे यहोवा हमारी ओर कृपादृष्टि
करके हमें प्रकाशित कर ।
७ तू ने मेरे मन में ऐसा आनन्द उप-
जाया है
जो उन के उस समय के आनन्द से
भी अधिक है जब उन का अन्न
और नया दाखमधु बढ़ गया
था ।
८ मैं शान्ति से लेटते ही सो जाऊंगा
क्योंकि हे यहोवा तू मुझ को एकान्त
में निडर रहने देता है ।

५ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र जो बांसुलियों के साथ गाया जावे ।

१ हे यहोवा मेरी बातों पर कान धर
मेरे ध्यान करने की ओर मन लगा ।
२ हे मेरे राजा हे मेरे परमेश्वर मेरी
दोहाई पर ध्यान दे
क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं ।
हे यहोवा भोर को मेरा शब्द तेरे ३
कान में पड़ेगा
भोर ही को मैं तेरे लिये अपनी भेंट
संजोके ताकता रहूंगा ।
क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता ४
से प्रसन्न होवे
बुराई तेरे यहां देखने में न आवेगी ।
घमण्डी लोग तेरे साम्हने खड़े रहने ५
न पावेंगे
तू सब अनर्थकारियों से बैर रखता है ।
तू झूठ बोलनेहारों का नाश करेगा ६
हे यहोवा तू हत्यारे और छली पुरुष
से घिन करता है ।
पर मैं तो तेरी अपार करुणा के हेतु ७
तेरे भवन में आऊंगा
मैं तेरा भय मानके तेरे पवित्र मन्दिर
की ओर दण्डवत करूंगा ।
हे यहोवा मेरे द्रोहियों के कारण ८
अपने धर्म्म के मार्ग में मेरी
अगुआई कर
मुझे अपना सीधा मार्ग दिखा ।
क्योंकि उन की बातों का कुछ ठिकाना ९
नहीं
उन के अन्तःकरण में निरी दुष्टता है
उन का गला मानो खुली हुई कबर है
वे चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं ।
हे परमेश्वर उन को दोषी ठहराके १०
दण्ड दे
वे अपनी युक्तियों से आप ही गिर जावें
उन को बहुत से अपराधों में फंसे
हुए धकिया दे

क्योंकि वे ते॰ [illegible] द्रु उठे
११ पर जितने तेरे शरणागत हैं सो सब
आनन्द करें
वे सदा ऊंचे स्वर से गाते रहें और
तू उन
और तेरे नाम के प्रेमी तेरे कारण
प्रफुल्लित होवें ।
१२ क्योंकि हे यहोवा तू धर्म्मी को आशीष
देगा
तू उस को अपनी प्रसन्नतारूपी बड़ी
ढाल से आड़के बचावेगा ।

६ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का
स्तोत्र जो तारवाले बाजों के साथ
खर्ज में गाया जावे ।

१ हे यहोवा मुझे कोप करके न
डांट
न जलजलाहट में आके मेरी ताड़ना
कर ।
२ हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि
मैं कुम्हला गया हूं
हे यहोवा मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी
हड्डियां थरथरा गई हैं ।
३ बल्कि मेरा जीव भी बहुत थरथरा
उठा है
पर हे यहोवा तू कब लों देखता
रहेगा ।
४ हे यहोवा लौटके मेरा प्राण बचा
अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार
कर ।
५ क्योंकि मरने पर तेरा कुछ स्मरण
नहीं होता
अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद कर
सकता है ।
मैं कराहते कराहते थक गया ६
रात रात मेरा बिछौना आंसुओं से
भींगा करता है
मैं अपने पलंग को उन से भर देता
हूं ।
मेरी आंख शोक से धुंधली हो गई ७
मेरे सब सतानेहारों के कारण वह
धुंधला गई है ।
हे सब अनर्थकारियो मुझ से दूर हो ८
जाओ
क्योंकि यहोवा ने मेरा रोना सुना है ।
यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है ९
वह मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा ।
मेरे सब शत्रु लजावेंगे और बहुत ही १०
भभरेंगे
वे लौट जावेंगे और अकस्मात् लज्जित
होवेंगे ।

७ दाऊद का नाना भाववाला स्तोत्र जो
उस ने बिन्यामीनी कूश की बातों के
हेतु यहोवा के साम्हने गाया ।

हे मेरे परमेश्वर यहोवा मैं तेरा ही १
शरणागत हूं
मुझे सब खदेड़नहारों से बचा और
छुटकारा दे ।
न हो कि वे मुझ को सिंह की नाईं फाड़ें- २
बल्कि टुकड़े टुकड़े करें और कोई
मेरा छुड़ानेहारा न होवे ।
हे मेरे परमेश्वर यहोवा यदि मैं ने ३
यह किया हो

अर्थात [illegible]रे हा[illegible] से कुटिल कर्म्म
हुआ होवे ।
४ यदि मैं ने अपने मेल रखनेहारे से
कुव्यवहार किया हो
अथवा जो अकारण मेरा सतानेहारा
था उस को यदि मैं ने बचाया
भी न हो ।
५ तो शत्रु मेरा पीछा करके मुझे
पकड़े
बल्कि मुझ को भूमि पर रौंदे
और मेरी महिमा को मिट्टी में मिलावे।
सेला ।
६ हे यहोवा कोप करके उठ
रोष में आये हुए मेरे सतानेहारों के
बिरोध में उद्यत हो
और मेरे लिये जाग तू ने न्याय की
आज्ञा तो दिई है ।
७ और जाति जाति की मण्डली तेरी
चारों ओर आवेगी
और तू उन के ऊपर से होके उच्चस्थान
को फिर जा ।
८ हे यहोवा तू जाति जाति का न्याय
करेगा
सो मेरे धर्म्म और खराई के अनुसार
मेरा न्याय चुका ।
९ आह दुष्टों की बुराई का अन्त हो
जावे तो क्या ही अच्छा होगा और
धर्म्मी को तू स्थिर कर
क्योंकि तू जो धर्म्मी परमेश्वर है सो
अन्तःकरण और मर्म का जांचने-
हारा है ।
परमेश्वर मेरी ढाल लिये हुए रहता १०
है
वह सीधे मनवालों का बचानेहारा
है ।
परमेश्वर धार्म्मिक न्यायी है ११
और ऐसा ईश्वर है जो दिन दिन
क्रोध करता है ।
यदि मनुष्य न फिरे तो वह अपनी १२
तलवार पर सान चढ़ावेगा
बल्कि वह अपना धनुष चढ़ाके बाण
सन्धान चुका है ।
और उस दुष्ट के लिये उस ने मृत्यु के १३
हथियार लैस किये हैं
वह अपने बाणों को अग्निबाण बना-
वेगा ।
देख दुष्ट को अनर्थ काम की मानो १४
पीरें लगी हैं
पहिले तो उस को उत्पात का पेट
रहा और अब वह झूठ को जनता
है ।
उस ने गड़हा खोदके गहिरा किया १५
पर जो गड़हा उस ने खना उस में
वही आप गिरा ।
उस का उत्पात पलटके उसी के सिर १६
पर पड़ेगा
और उस का उपद्रव उसी के चोंड़े
पर पड़ेगा ।
मैं यहोवा के धर्म्म के अनुसार उस १७
का धन्यवाद करूंगा
और परमप्रधान यहोवा के नाम का
भजन गाऊंगा ।

८ प्रधान ब[illegible] के लिये [illegible] का स्तोत्र जो गत् नगर के राग मे गाया जावे ।

१ हे यहोवा हमारे प्रभु
तेरा नाम [illegible] पर
प्रतापमय ह
तू ने अपना बिभव स्वर्ग पर दिखाया है ।
२ बच्चों और दूधपिउवों के बचनों के द्वारा
तू ने सामर्थ्य की नेव डाली है
सो तेरे द्रोहियों के कारण हुआ
जिस्तें तू शत्रु को और जो अपना पलटा लेता है उस को रोक रक्खे ।
३ जब मैं आकाश को जो तेरे हाथों का कार्य्य है देखता हूं
अर्थात् चंद्रमा और तारागण को जो तू ने ठहराये हैं ।
४ तब यह भासता है कि मनुष्य क्या है कि तू उस का स्मरण करता है
और आदमबंशी क्या कि तू उस की सुधि लेता है ।
५ उस को तो तू ने परमेश्वर से थोड़ा ही घाट किया
और महिमा और प्रताप का मुकुट उस के सिर पर रक्खा है ।
६ तू ने उसे अपने हाथों के कार्य्यों पर प्रभुता दिई
तू ने उस के पांव तले सब कुछ कर दिया है ।
७ भेड़ बकरी और गाय बैल सब के सब जो हैं
और बनपशु भी ।
आकाशचारी पक्षी और समुद्र की मछलियां ८
और जितने जीव जन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं उन सभों को उस के बश कर दिया है ।
हे यहोवा हमारे प्रभु ९
तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है ।

९ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र जो मूतलब्बेन् नाम राग मे गाया जावे ।

हे यहोवा मैं अपने सारे मन से तेरा धन्यबाद करूंगा १
मैं तेरे सब आश्चर्य्यकर्म्मों का बर्णन करूंगा ।
मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित होऊंगा २
हे परमप्रधान मैं तेरे नाम का भजन गाऊंगा ।
क्योंकि मेरे शत्रु उलटे फिरे हैं ३
वे तेरे साम्हने से ठोकर खाके नष्ट होते हैं ।
तू ने मेरा न्याय और मुकद्दमा चुकाया है ४
तू सिंहासन पर बिराजमान होके धर्म्म से न्याय करता है ।
तू ने अन्यजातियों को घुड़का और दुष्ट का नाश किया ५
तू ने उस का नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया है ।

६ शत्रु जो थे सो बिलाय गये वे अनन्त-
काल के लिये उजड़ गये
और जिन नगरों को यहोवा ने ढा
दिया उन का नाम भी मिट गया
है।
७ पर यहोवा सदा के लिये बिराजमान है
उस ने अपना सिंहासन न्याय के लिये
सिद्ध किया है।
८ और वह आप जगत का न्याय धर्म्म
से करेगा
वह जाति जाति के लोगों का मुकद्दमा
खराई से निपटावेगा।
९ और यहोवा पिसे हुओं के लिये ऊंचे
गढ़ का काम देगा
वह संकट के समय के लिये मानो
ऊंचा गढ़ ठहरेगा।
१० इस लिये हे यहोवा जो तेरा नाम
जानते हैं सो तुझ पर भरोसा रक्खेंगे
क्योंकि तू ने अपने पास आनेहारों को
त्याग नहीं दिया।
११ यहोवा जो सिय्योन् में बिराजता है
उस का भजन गाओ
जाति जाति के लोगों के बीच उस के
महाकर्म्मों का प्रचार करो।
१२ क्योंकि उस ने लोहू का पलटा लेने के
समय दीन लोगों का स्मरण किया है
और उन की दोहाई को नहीं
बिसराया।
१३ हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर
तू जो मुझे मृत्यु की राजधानी के
फाटक के पास से उठाता है
इस दुःख को देख जो मेरे बैरी मुझे
दे रहे हैं।
जिस्ते मैं सिय्योन् के फाटकों के पास १४
तेरे सब गुणों का बर्णन करूं
और तेरे किये हुए उद्धार से मगन
होऊं।
अन्यजातिवालों ने जो गड़हा खोदा १५
था उसी में वे आप गिर पड़े
जो जाल उन्हों ने लगाया था उस में
उन्हीं का पांव फंस गया।
यहोवा ने अपने को प्रगट किया उस १६
ने न्याय चुकाया है
वह दुष्ट को उसी के हाथ के कर्म्मरूपी
जाल में फंसाता है। हिग्गायोन्। सेला।
दुष्ट लोग अर्थात् जितनी जातियां १७
परमेश्वर को भूल जाती हैं
सो सब अधोलोक में डाली जावेंगी।
और दरिद्र लोग अनन्तकाल लों बिसरे १८
न रहेंगे
नम्र लोगों की आशा सदा के लिये
नष्ट न होगी।
हे यहोवा उठ मनुष्य जो बिनाशी है १९
सो प्रबल न होवे
जातियों का न्याय तेरी ओर से
किया जावे।
हे यहोवा उन को भय दिखा २०
जातियां जान लेवें कि हम बिनाशी
मनुष्य ही हैं। सेला।

१० हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा १
रहता है
संकट के समय में क्यों छिपा रहता है।

२ दुष्टों के अहंक कारण मनुष्य
जल रहा है
जो युक्तियां उन्हों ने चतुराई से
निकाली हैं उन्हीं से वे आप
फंसाये
३ क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर
घमण्ड करता
और लोभी जन यहोवा का त्याग
बलिक उस का तिरस्कार भी
करता है ।
४ दुष्ट अपने अभिमान के कारण कहता
है वह लेखा नहीं लेने का
उस के सारे बिचारों का सार यही है
कि परमेश्वर है ही नहीं ।
५ वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना
रहता है
हे यहोवा तेरे न्याय के कर्म्म ऐसे ऊंचे
पर होते हैं कि उन को देख नहीं
पड़ते
जितने उस के बिरोधी हैं उन पर वह
फुफकारता है ।
६ उस ने अपने मन में कहा है मैं नहीं
टलने का
पीढ़ी से पीढ़ी लों मेरा बंश दुःख से
बचा रहेगा ।
७ उस का मुंह स्राप की बात से और छल
और अंधेर के बचनों से भरा है
वह उत्पात और अनर्थ की बात
बोला करता है ।
८ वह गांवों के ढूका लगने के स्थानों में
बैठा करता
और छिपने के स्थानों में निर्दोष को
घात करता है
उस की आंखें अनाथ को छिपके
ताकती हैं ।
जैसा सिंह अपनी झाड़ी में तैसा ही वह ९
भी छिपके घात में बैठा करता है
वह दीन जन को पकड़ने के लिये उस
की घात में लगता है
जब वह दीन जन को अपने जाल में
फंसाके घसीट लाता है
तब उसे पकड़ लेता है ।
वह झुक जाता और दबक बैठता है १०
और अनाथ लोग उस के बलवन्त
पंजों से गिर जाते हैं ।
उस ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर ११
तो भूल गया
उस ने अपना मुंह फेर लिया वह
कभी नहीं देखने का ।
हे यहोवा उठ हे ईश्वर अपना हाथ १२
उठा
दीन लोगों को भूल न जा ।
परमेश्वर का तिरस्कार दुष्ट क्यों करने १३
पावे
वह क्यों अपने मन में कहने पावे
कि तू लेखा न लेगा ।
तू ने तो देखा है क्योंकि तू उत्पात १४
और कलपाने पर दृष्टि रखता है
जिस्तें उस का पलटा लेवे
अनाथ अपना भार तुझी पर छोड़ता है
बपमूए का सहायक तू ही बना है ।
दुष्ट की भुजा को तोड़

और दुर्जन जो है उस की दुष्टता जब
लों दूर न होवे तब लों उस को
दण्ड देता रह ।
१६ हे यहोवा तू अनन्तकाल के लिये
राजा है
अन्यजातिवाले तेरे देश से नष्ट भये हैं ।
१७ हे यहोवा तू ने नम्र लोगों की अभि-
लाषा सुनी
तू उन का मन स्थिर करता तब ध्यान
देकर उन की प्रार्थना की ओर
कान लगाता है ।
१८ इस प्रकार से तू बपमूए और पिसे
हुए का न्याय चुकाता है
जिस्तें अविनाशी मनुष्य जिस की उत्पत्ति
मिट्टी से हुई फिर डराने न पावे ।

११ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद रचित ।

१ मैं तो यहोवा का शरणागत हूं
तुम लोग मुझ से क्योंकर कह सकते हो
कि चिड़िया की नाईं अपने पहाड़
पर उड़ जा ।
२ क्योंकि देख दुष्ट लोग अपना धनुष्
चढ़ाते
और अपना बाण प्रत्यंचा से जोड़ते हैं
जिस्तें सीधे मनवालों पर अंधेरे में
बाण चलावें ।
३ नेवें तो ढाई जाती हैं
और धर्म्मी से क्या बना ।
४ यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है
यहोवा जो है उस का सिंहासन स्वर्ग
मे है
वह अपनी आंखों से आदमवंशियों
को ताकता और आंख गड़ाके उन
को जांचता है ।
यहोवा धर्म्मी को जांचता है ५
और दुष्ट से और उपद्रव में प्रीति
रखनेहारे से वह जी से बैर
रखता है ।
वह दुष्टों के गले में फन्दे पर फन्दा ६
डालेगा
उन के कटोरे में आग और गन्धक
और प्रचण्ड लूहरूपी भाग भर
दिया जावेगा ।
क्योंकि यहोवा जो धर्म्ममय है सो ७
धर्म्म के कर्म्मों से प्रसन्न रहता है
सीधे लोग उस का दर्शन पावेंगे ।

१२ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र जो खर्ज में गाया जावे ।

हे यहोवा बचा क्योंकि एक भी भक्त १
नहीं रहा
आदमवंशियों में से बिश्वासयोग्य लोग
मिट गये हैं ।
सब कोई एक दूसरे से व्यर्थ ही बात २
बकते हैं
वे चापलूसी के साथ दुरंगी बातें
बोलते हैं ।
यहोवा सब चापलूसों को नष्ट करे ३
और उस जीभ को जो बड़ा बोल
बोलती है काट डाले ।
जो कहते हैं कि हम गाल बजाके जीतेंगे ४
हमारे मुंह हमारे बश में हैं हमारा
कौन प्रभु है उन को वह नष्ट करे ।

५ दीन लोगों [illegible] जाने [illegible] दरिद्रों
के कराहने के हेतु
यहोवा कहता है कि अब मैं उठूंगा
जिस पर दुष्ट लोग फुफकार मारते हैं
उस को [illegible] देऊं
६ यहोवा के बचन शुद्ध हैं
उस चांदी के समान जो पृथिवी पर
घड़िया में ताई गई
बल्कि सात बार निर्मल किई गई
होवे ।
७ हे यहोवा तू दीन लोगों की रक्षा
करेगा
तू उन को इस काल के लोगों से सदा
के लिये बचा रक्खेगा ।
८ जब आदमबंशियों में नीच लोग ऊंचे
होते हैं
तब दुष्ट लोग चारों ओर फूले फूले
फिरते हैं ।

१३

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र ।

१ हे यहोवा तू कब लों मुझे लगातार
भूला रहेगा
कब लों अपना मुख मुझ से फेरे रहेगा ।
२ मैं कब लों अपने जी से अनेक उपाय
निकालता रहूंगा
और दिन भर मेरा मन उदास रहेगा
कब लों मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा ।
३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर
निहारके मुझ उत्तर दे
मेरे नेत्रों में ज्योति आने दे न हो कि
मैं मृत्यु की निद्रा में पड़ूं ।
न हो कि मेरा शत्रु कहे कि मैं उस ४
पर प्रबल भया
न हो कि मेरे सतानेहारे मेरे डगमगाने
पर मगन होने पावें ।
पर मैं तो तेरी करुणा पर भरोसा रखता हूं ५
मेरा हृदय तेरे किये हुए उद्धार से
मगन होवेगा ।
मैं यहोवा के लिये गीत गाऊंगा ६
इस लिये कि उस ने मेरा उपकार
किया है ।

१४

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद रचित ।

मूढ़ों ने अपने मन में कहा है कि पर- १
मेश्वर है ही नहीं
वे बिगड़ गये उन्हों ने घिनौने कर्म्म
किये सुकर्म्मी कोई नहीं ।
यहोवा ने स्वर्ग में से आदमबंशियों २
पर ध्यान से दृष्टि किई है
कि देखे कोई बुद्धि से चलता
वा मुझ को पूछता है कि नहीं ।
वे सब के सब भटक गये सब एक साथ ३
सड़ गये
कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं ।
क्या किसी अनर्थकारी को कुछ ज्ञान ४
नहीं रहता
वे मेरी प्रजा को अपनी रोटी जानके
खा जाते हैं
और यहोवा को वे नहीं पुकारते ।
उधर वे भयभीत भये ५
क्योंकि परमेश्वर धर्म्मी लोगों के बीच
रहता है ।

६ तुम लोग तो दीन जन की युक्ति को
तुच्छ जानते हो
इस लिये कि वह यहोवा को अपना
शरणस्थान करके मानता है।
७ आह यदि इस्राएल् का उद्धार सिय्योन्
से प्रगट होवे तो क्या ही उत्तम होगा
जब यहोवा अपनी प्रजा को बन्धुवाई
से लौटा ले आवेगा
तब याकूब मगन और इस्राएल् आ-
नन्दित होवेगा।

१५ दाऊद का स्तोत्र।

१ हे यहोवा तेरे तम्बू में कौन टिकने
पावेगा
तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने
पावेगा।
२ जो खराई से चलता और धर्म्म का
कर्म्म करता
और मन से सच बोलता है।
३ जो चुगली नहीं करता
और न अपने भाईबन्धु से बुराई करता
न अपने पड़ोसी का दोष फैलाता है।
४ जिस के लेखे में निकम्मा मनुष्य तो
तुच्छ है
पर वह यहोवा के डरवैयों का आदर
करता है
जो किरिया खाने पर हानि भी देखके
नहीं बदलता।
५ जो अपना रूपा ब्याज पर नहीं देता
न निर्दोष की हानि करने के निमित्त
अकोर लेता है
जो कोई ऐसी चाल चलता है सो
कभी न टलेगा।

१६ दाऊद का मिक्ताम् नाम स्तोत्र।

हे ईश्वर मेरी रक्षा कर क्योंकि मैं १
तेरा शरणागत हूं।
मैं ने यहोवा से कहा है कि तू मेरा २
प्रभु है
तुझे छोड़ मेरा दूसरा सुखपदार्थ नहीं।
पृथिवी पर जो पवित्र लोग हैं ३
सोई आदर के योग्य हैं और उन्हीं
से मैं प्रसन्न रहता हूं।
जो पराये देवता को अपना स्वामी ४
करते हैं उन के दुःख बहुत ही होवेंगे
मैं उन के लोहूवाले तपावन नहीं
देने का
बल्कि उन देवताओं के नाम तक अपने
होंठों से नहीं लेने का।
मेरा भाग और मेरे कटोरे में का ५
अंश यहोवा है
हे यहोवा मेरे बांट को तू स्थिर
रखता है।
मेरे लिये माप की डोरी मनभावने ६
स्थान में पड़ी
और मेरा भाग मुझे भावता है।
मैं यहोवा को धन्य कहता हूं क्योंकि ७
उस ने मुझे सम्मति दिई
मेरा अन्तःकरण भी रात्रि समय में
मुझे चिता देता है।
मैं यहोवा को निरन्तर अपने सन्मुख ८
जानता आया हूं

वह जो मेरे [illegible] रहता [illegible]स लिये
मैं नहीं टलने का।
९ इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और
मेरा आत्मा मगन हुआ
बल्कि मेर[illegible] [illegible]टके [illegible]
१० इस लिये कि तू मेरे जीव को अधोलोक
में न छोड़ेगा
न अपने भक्त को सड़ने की दशा
भोगने देवेगा।
११ तू मुझे जीवन की बाट बतावेगा
जो तेरा दर्शन पावे सो आनन्द से
तृप्त होवे
तेरे दहिने हाथ में अनन्तकाल का
सुख है।

१७ दाऊद की प्रार्थना।

१ हे यहोवा धर्म्म के बचन सुन मेरी
गोहार की ओर ध्यान दे
मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट
मुंह से निकलती है कान लगा।
२ मेरे मुकद्दमे का निर्णय तू ही कर
तेरे नेत्र न्याय पर लगे रहें।
३ तू ने मेरे हृदय को जांचा तू रात्रि
समय देखने के लिये आया
तू ने मुझे ताया पर कुछ नहीं पाया
मैं ने ठान लिया है कि मेरे मुंह से
अपराध की बात न निकलेगी।
४ मनुष्यों के कर्म्म जो हों सो हों पर मैं
तेरे मुख के बचन के द्वारा
बरियाई करनेहारे की सी चाल चलने
से अपने को बचाये रहा।
मेरे पग तेरी डगरों में स्थिर हैं ५
मेरे कदम नहीं टलने के।
हे ईश्वर मैं ने तो यह जानके तुझे ६
पुकारा है कि तू मुझे उत्तर देवेगा
अपना कान मेरी ओर लगाके मेरी
बात को सुन।
तू जो अपने दहिने हाथ के द्वारा अपने ७
शरणागतों को उन के बिरोधियों
से बचाता है
अपनी अद्भुत करुणा दिखा।
आंख की पुतली की नाईं मेरी रक्षा ८
कर
अपने पंखों तले मुझे छिपा रख।
उन दुष्टों से मेरी रक्षा कर जो मेरा ९
नाश किया चाहते हैं
मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेरे
हुए हैं मुझे बचा।
उन के चर्बी छाई हुई है १०
वे अपने मुंह से घमण्ड की बात
बोलते हैं।
हमारे पगों को वे अब घेर चुके हैं ११
वे हम को भूमि पर पटक देने के
लिये टकटकी लगाये हुए हैं।
उन की उपमा सिंह की है जो फाड़ने १२
का अभिलाषी रहता है
और जवान सिंह की है जो छुका
लगने के स्थानों में बैठा रहता है।
हे यहोवा उठ १३
उसे छेंक उस को दबा दे
अपनी तलवार के द्वारा मेरे प्राण को
दुष्ट से बचा।

१४ अपने [illegible] के [illegible] हे यहोवा मुझे
मनुष्यों से बचा
अर्थात् संसार के मनुष्यों से बचा जिन
का भाग इसी जीवन में है
और जिन का पेट तू अपने भण्डार
में से भरता है
वे लड़कबालों से तृप्त होते
और जो वे बचाते हैं सो अपने बच्चों
के लिये छोड़ जाते हैं।
१५ पर मैं तो धर्म्मलोक में तेरे मुख को
निहारूंगा
जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप को
देखके तृप्त होऊंगा।

१८ प्रधान बजानेहारे के लिये। यहोवा के दास दाऊद का गीत जिस के बचन उस ने यहोवा के लिये उस समय गाये जब यहोवा ने उस को उस के सारे शत्रुओं के पंजे से और विशेष करके शाऊल् के हाथ से बचाया था सो उस ने कहा।

१ हे यहोवा तू जो मेरा बलमूल है सो
मैं तुझ से स्नेह रखता हूं।
२ यहोवा मेरी ढांग और मेरा अगम्य
स्थान और मेरा छुड़ानेहारा ठहरा
वह मेरा ईश्वर और मेरी चटान है
जिस का मैं शरणागत हूं
वह मेरी ढाल मेरा उद्धार करनेहारा
सींग और मेरा ऊंचा गढ़ ठहरा है।
३ मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है
पुकारूंगा
और यों अपने शत्रुओं से बचाया
जाऊंगा।
मैं मृत्यु की रस्सियों से चारों ओर ४
बन्ध गया
और अधममनुष्यरूपी प्रवाहों ने मुझ
को घबरा दिया था।
अधोलोक की रस्सियां मेरी चारों ५
ओर थीं
मैं मृत्यु के फंदों से घिर गया था।
अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा ६
मैं ने उसी की दोहाई दिई जो मेरा
परमेश्वर है
और उस ने मेरी बाणी को अपने
मन्दिर में से सुना
और मेरी दोहाई उस तक पहुंचके
उस के कानों में पड़ी।
तब यहोवा का क्रोध ऐसा भड़का कि ७
पृथिवी हिलने लगी और डोल उठी
और पहाड़ों की नेव कांप कांपके
बहुत ही हिल गई।
उस के नथनों से धूआं निकला ८
और उस के मुंह से आग निकलके
भस्म करने लगी
जिस से कोयले दहक उठे।
और वह स्वर्ग को नीचे करके उतर ९
आया
और उस के पांवों तले घोर अन्धकार
था।
और वह करूब् पर चढ़ा हुआ उड़ा १०
और पवन के पंखों पर चढ़के बेग से
उड़ आया।
उस ने अन्धियारे को अपने छिपने ११
का स्थान ठहराया

मेघों का अन्धकार और आकाश की
काली घटाएं उस की चारों ओर
मण्डप ठहरीं।
१२ उस के सन्मुख की झलक से उस की
काली घटाएं फट गईं
और ओले और अंगारे पड़े।
१३ तब यहोवा आकाश में गरजा
और जो परमप्रधान है तिस ने अपनी
बाणी सुनाई
इस से ओले और अंगारे पड़े।
१४ और उस ने बाण चला चलाके मेरे
शत्रुओं को छिन्न भिन्न किया
और बिजली गिरा गिराके उन को
घबरा दिया।
१५ तब जलनिधि की थाह देख पड़ी
और जगत की नेव भी खुल गई
सो हे यहोवा तेरे दपट से
और तेरे नथनों की सांस के झोंके
से भया
१६ उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाके मुझे
थांभ लिया
और महाजलनिधि में से खींच लिया।
१७ उस ने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से
छुड़ाया
और मेरे वैरियों से जो मुझ से अधिक
सामर्थी थे मुझे उबारा।
१८ उन्हों ने मेरी बिपत्ति के दिन मुझे
छेंका तो था
पर यहोवा मेरा आश्रय हो गया।
१९ और उस ने मुझे निकालके बेखटके
रक्खा

उस ने मुझ को इस लिये छुड़ाया कि
वह मुझ से प्रसन्न था।
यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म्म के अनुसार २०
व्यवहार किया
मेरे कर्म्मों की शुद्धता के अनुसार उस
ने मुझे बदला दिया।
क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता २१
रहा
और अपने परमेश्वर से फिरके दुष्ट
न बना।
उस के सारे न्यायबचन मेरे साम्हने २२
बने रहे
और उस की विधि जो हैं उन से मैं
हट न गया।
और मैं उस की ओर खराई से लगा रहा २३
और अपने को उस अधर्म्म से बचाये
रहा जिस में मेरे फंसने का डर था।
सो यहोवा ने मुझे मेरे धर्म्म के अनुसार २४
बदला दिया
मेरे कर्म्मों की उस शुद्धता के अनुसार
जो उस की दृष्टि में थी उस ने
मुझ से किया।
स्नेही के साथ तू अपने को भी स्नेही २५
दिखाता
खरे पुरुष के संग तू अपने को खरा
दिखाता है।
शुद्ध जन के साथ तू अपने को भी २६
शुद्ध दिखाता
और टेढ़े के संग तू तिर्छा बनता है।
क्योंकि तू जो है सो दीन लोगों का २७
उद्धार करता है

पर चढ़ी हुई आंखों को नीची
करता है ।
२८ तू ही मेरे दीपक को बारता है
हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू मेरे अन्धि-
यारे को दूर करके उजियाला कर
देता है ।
२९ तुझ से शक्ति पाके मैं दल पर धावा
करता
और अपने परमेश्वर की सहायता से
मैं शहरपनाह को डांक जाता हूं ।
३० ईश्वर जो है उस की गति खरी है
यहोवा का बचन मानो ताया हुआ है
वह अपने सब शरणागतों की ढाल
ठहरा है ।
३१ यहोवा को छोड़ तो ईश्वर कौन है
और हमारे परमेश्वर को छोड़ चटान
कौन ठहरा ।
३२ यह वही ईश्वर है जो मेरी कमर में
बल का फेंटा बांधता
और मेरे मार्ग को ठीक करता है ।
३३ वह मेरे पैरों को हरिणों के से करता
और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर खड़ा
करता है ।
३४ वह मुझे सिखाता है कि हाथों से
युद्ध करूं
यहां लों कि मेरे बाहुबल से पीतल
का धनुष भी झुकता है ।
३५ और हे यहोवा तू ने मुझ को अपनी
उद्धाररूपी ढाल दिई
और तू अपने दहिने हाथ से मुझे
सम्भाले है
और तेरी नम्रता मुझे बढ़ाती है ।
तू मेरे पगों के लिये स्थान चौड़ा ३६
करता है
और मेरे टखने नहीं डिगे ।
मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें ३७
पकड़ लूंगा
और जब लों उन का अन्त न करूं तब
लों न फिरूंगा ।
मैं उन्हें ऐसा मारूंगा कि वे उठ न ३८
सकेंगे
पर मेरे पांवों के नीचे पड़ेंगे ।
और तू मेरी कमर में युद्ध के लिये बल ३९
का फेंटा बांधेगा
और मेरे बिरोधियों को मेरे तले दबा
देवेगा ।
और तू मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे ४०
दिखावेगा
जिस्तें मैं अपने बैरियों को बिध्वंस करूं ।
वे दोहाई तो देंगे पर उन्हें कोई ४१
बचानेहारा न मिलेगा
बल्कि यहोवा की भी दोहाई देंगे पर
वह उन्हें उत्तर न देवेगा ।
तब मैं उन को कूट कूटके उस धूल के ४२
समान कर दूंगा जो पवन से उड़ाई
जाती है
मैं उन्हें ऐसा निकाल फेंकूंगा कि सड़कों
की कीच बन जावेंगे ।
तू मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाके ४३
जातियों का प्रधान ठहरावेगा
बल्कि जिन लोगों को मैं नहीं जानता
सो भी मेरे अधीन होवेंगे ।

४४ मेरा नाम कान से सुनते ही वे मेरे
वश में आवेंगे
परदेशियों को बरबस मुझ से दबना
पड़ेगा।
४५ परदेशी लोग मुर्झावेंगे
और अपने कोटों में से थरथराते हुए
निकलेंगे।
४६ यहोवा जीता है और जो मेरी चटान
ठहरा सो धन्य है
और मेरा उद्धार करनेहारा परमेश्वर
महान् ठहरे।
४७ वह ईश्वर धन्य है जो मेरा पलटा
लेनेहारा है
और जिस ने जाति जाति को मेरे
तले दबा दिया है।
४८ वह मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाता है
हे यहोवा तू मुझ को मेरे बिरोधियों
से ऊंचा करता
और उपद्रवी पुरुष से बचाता है।
४९ इस कारण मैं जातियों के बीच तेरा
धन्यबाद करूंगा
और तेरे नाम का भजन गाऊंगा।
५० यहोवा अपने ठहराये हुए राजा का
बड़ा उद्धार करता है
वह अपने अभिषिक्त पर अर्थात् दाऊद
और उस के बंश पर
युगानयुग करुणा करता रहेगा।

१९ प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का स्तोत्र।

१ आकाश ईश्वर की महिमा बर्णन कर
रहा है
आकाशमण्डल उस के हाथों के कार्य्य
प्रगट करता है।
दिन से दिन वाक्य कहता २
और रात को रात ज्ञान सिखाती है।
हां आकाश से वाक्य तो सुनने में ३
नहीं आते और न कथा
उस से कुछ शब्द सुनाई नहीं देता।
तौभी उस का स्वर सारी पृथिवी पर ४
और उस के बचन जगत के छोर लों
फैल गये हैं
उस में ईश्वर ने सूर्य्य के लिये एक
डेरा खड़ा किया है।
सूर्य्य एक बर के समान है जो अपने ५
मण्डप में से निकलता हो
वह बीर की नाईं अपनी दौड़ दौड़ने
को हर्षित होता है।
वह आकाश के एक छोर से निकलता है ६
और उस का चक्कर उस के दूसरे छोर
लों होता है
और उस की किरणें सब पर पड़ती हैं।
यहोवा की व्यवस्था खरी है जी में ७
जी ले आनेहारी
यहोवा की चितौनी बिश्वासयोग्य है
भोले को बुद्धि देनेहारी।
यहोवा के उपदेश सीधे हैं हृदय को ८
आनन्दित करनेहारे
यहोवा की आज्ञा स्वच्छ है नेत्रों में
ज्योति ले आनेहारी।
यहोवा के भय के ज्ञान का बचन ९
शुद्ध है अनन्तकाल लों ठहरने-
हारा

यहोवा के न्यायबचन सत्य और पूरी
रीति से धर्म्ममय हैं ।
१० वे तो सोने से बलिक बहुत कुन्दन से
भी अधिक मनभावन हैं
और मधु से बलिक छत्ते से टपकनेहारे
टटके मधु से भी अधिक मधुर हैं ।
११ फिर हे यहोवा मैं तेरा दास उन से
चौकस भी किया जाता हूं
उन के पालन करने से बड़ा ही बदला
मिलता है ।
१२ अपनी भूलचूक को कौन समझ सके
तू मुझे गुप्त पापों से निर्दोष ठहरा
दे ।
१३ और ढिठाई के पापों से भी तू मुझ
अपने दास को रोक रख
ऐसे पाप मुझ पर प्रभुता करने न
पावें तो मैं खरा होऊंगा
और बड़े अपराध से बचके निर्दोष
ठहरूंगा ।
१४ हे यहोवा तू जो मेरी चटान और
मेरा छुड़ानेहारा ठहरा है
सो मेरे मुंह के बचन और मेरे हृदय
का ध्यान तुझे ग्रहणयोग्य ठहरे ।

२०

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र ।

१ संकट के दिन यहोवा तुझे उत्तर देवे
याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊंचे
स्थान पर बैठावे ।
२ वह पवित्र स्थान से तेरे लिये सहायक
भेजे
और सिय्योन् से तुझे सम्भाल लेवे ।
वह तेरे सब अन्नबलियों को स्मरण ३
करे और तेरे होमबलि को चर्बी
के समान ग्रहण करे । सेला ।
वह तेरे मन की इच्छा पूरी करे ४
और तेरी सारी युक्ति को सुफल करे ।
तो हम तेरे उद्धार के कारण ऊंचे ५
स्वर से गावेंगे
और अपने परमेश्वर के नाम से अपने
झण्डे खड़े करेंगे
यहोवा तेरे सब मुंह मांगे बर देवे ।
अब मैं जान गया कि यहोवा अपने ६
अभिषिक्त का उद्धार करता है
वह अपने पवित्र स्वर्ग से उत्तर देके
अपने दहिने हाथ के त्राणदायक
पराक्रम के कर्म्मों से उस की सहा-
यता करेगा ।
कोई तो रथों की और कोई घोड़ों ७
की चर्चा करता है
पर हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा
के नाम ही की चर्चा करेंगे ।
वे तो झुक गये और गिर पड़े ८
पर हम लोग उठे और सीधे खड़े हैं ।
हे यहोवा बचा ले ९
जिस दिन हम पुकारें हे महाराजा
तू हम को उत्तर दे ।

२१

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र ।

हे यहोवा तेरे सामर्थ्य से राजा १
आनन्दित होगा
और तेरे किये हुए उद्धार से वह अति
मगन होवेगा ।

२ तू ने उस के मनोरथ का पूरा किया
और उस के मुंह से जो बिनती निकली
उस का तू ने अङ्गीकार नहीं किया ।
सेला ।
३ बल्कि तू उत्तम आशीषें देता हुआ
उस से मिलता है
तू उस के सिर पर कुन्दन का मुकुट
धरता है ।
४ जब उस ने तुझ से जीवन मांगा तब
तू ने उस का दिया
बल्कि युगानयुग की दीर्घायु भी ।
५ उस की महिमा तेरे किये हुए उद्धार
के हेतु बड़ी है
बिभव और ऐश्वर्य्य से तू उस का
आभूषित करता है ।
६ तू उस का अनन्तकाल की आशीषों
की खानि ठहराता है
तू उस का दर्शन देके आनन्द से
आह्लादित करता है ।
७ क्योंकि राजा यहोवा पर भरोसा
रखता है
और परमप्रधान की करुणा से वह
नहीं टलने का ।
८ हे राजा तू अपने हाथ से अपने सब
शत्रुओं का पकड़ेगा
अपने दहिने हाथ से अपने बैरियों
का गह लेगा ।
९ तू प्रगट होने के समय उन्हें जलते
हुए भट्ठे के समान जलावेगा
यहोवा अपने कोप से उन्हें बिध्वंस
करेगा
और वे आग से भस्म हो जावेंगे ।
तू उन के लड़केबालों का पृथिवी पर से १०
और उन के वंश का आदमवंशियों
में से नष्ट करेगा ।
क्योंकि उन्हों ने तेरी हानि का यत्न ११
किया
उन्हों ने चतुराई से युक्ति निकाली तो
है पर उस का पूरा न कर सकेंगे ।
क्योंकि जब तू अपना धनुष उन के १२
साम्हने चढ़ावेगा
तब वे पीठ दिखाके भागेंगे ।
हे यहोवा अपने सामर्थ्य से महान् हो १३
तो हम गावेंगे और तेरे पराक्रम का
भजन गावेंगे ।

२२

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र जो अय्येलेथश्शहर[1] नाम राग मे गाया जावे ।

हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे १
क्यों छोड़ दिया
मैं तो गोहराता रहता हूं पर तू मुझे
नहीं बचाता ।
हे मेरे परमेश्वर मैं दिन को पुकारता २
तो हूं पर तू उत्तर नहीं देता
और रात को भी मैं चुप नहीं रहता ।
पर हे इस्राएल की स्तुतिरूपी सिंहासन ३
पर बिराजमान ईश्वर
तू तो पवित्र है ।
हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे ४
वे भरोसा रखते थे और तू उन्हें
छुड़ाता भी था ।

(१) अर्थात् भोरवाली हरिणी.

५ वे तेरी ही ओर चिल्लाते और छुड़ाये
जाते थे
वे तुझी पर भरोसा रखते थे और
उन की आशा न टूटती थी ।
६ पर मैं तो कीड़ा हूं मनुष्य नहीं
मनुष्यों में नामधराई और प्रजा में
अपमान का कारण हूं ।
७ जितने मुझे देखते हैं सो ठट्ठा करते
और होंठ बिचकाते और सिर हिलाते
हैं ।
८ वे कहते हैं कि उस ने तो कहा था
कि यहोवा पर सब भार डाल सो
अब वह उस को छुड़ावे
वह उस को उबारे क्योंकि वह उस
से प्रसन्न तो है ।
९ सच है क्योंकि तू ही ने मुझे गर्भ से
निकाला
जब मैं दूध पिउवा बच्चा था तब भी
तू ने मुझे अपने पर भरोसा रखना
सिखाया ।
१० मैं जन्मते ही तुझ पर डाल दिया गया
माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है ।
११ मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है
और कोई सहायक नहीं ।
१२ बहुत से सांड़ों ने मुझे घेरा
बाशान् के बलवन्त पशु मेरी चारों
ओर आये हैं ।
१३ उन्हों ने मेरे लिये अपना मुंह पसारा है
वे फाड़ने और गरजनेहारे सिंह के
समान हुए हैं ।
१४ मैं जल की नाईं बहाया गया
और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गये
मेरा हृदय मोम सा गल गया
वह मेरी देह के भीतर पिघलके बह
गया है ।
मेरा लोहू सूख गया और मैं ठट्ठर हो १५
गया
और मेरी जीभ मेरे तालू में चिपक गई
और तू मुझे मारके मिट्टी में मिला
देता है ।
कुत्तों ने मुझे घेरा १६
अर्थात् कुकर्म्मियों की मण्डली मेरी
चारों ओर आई
उन्हों ने मेरे हाथों और पैरों को
छेदा है ।
मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं १७
वे लोग तो मुझे निहारते और देखके
सन्तुष्ट होते हैं ।
वे मेरे बस्त्र आपस में बांटते १८
और मेरे कपड़े पर चिट्ठी डालते हैं ।
पर तू हे यहोवा दूर न रह १९
तू जो मेरी शक्ति का मूल है सो मेरी
सहायता के लिये फुर्ती कर ।
मेरे प्राण को तलवार से २०
मेरी दुलारी बेटी को[१] कुत्ते के पंजे से
बचा ले ।
मुझे सिंह के मुंह से बचा २१
तू ने मुझे उत्तर देके बनैले बैलों के
सींगों के बीच से तो छुड़ाया है ।
अब मैं अपने भाइयों से तेरे नाम का २२
प्रचार करूंगा

(१) अर्थात्. जीव वा मन.

सभा के बीच में तेरी स्तुति करूंगा।
२३ हे यहोवा के डरवैयो उस की स्तुति करो
हे याकूब के सारे बंश तुम उस की महिमा करो
और हे इस्राएल् के सब बंशवालो तुम उस का भय मानो।
२४ क्योंकि उस ने दुःखी को तुच्छ नहीं जाना न उस से घिन किई है
और न उस से अपना मुख फेर लिया
पर जब उस ने उस की दोहाई दिई तब उस ने सुन लिया।
२५ बड़ी सभा में मेरे स्तुति करने का कारण यहोवा ही है
मैं अपनी मनौतियां उस के डरवैयों के साम्हने पूरी करूंगा।
२६ नम्र लोग भोजन करके तृप्त होवेंगे
जो यहोवा के पास आते हैं सो उस की स्तुति करेंगे
तुम अनन्तकाल लों सुख से जीते रहो।
२७ पृथिवी के सब दूर दूर देशों के लोग चेत करके यहोवा की ओर फिरेंगे
और हे यहोवा जाति जाति के सब कुल तेरे साम्हने दण्डवत करेंगे।
२८ क्योंकि राज्य यहोवा ही का है
और जातियों पर वही प्रभुता करनेहारा है।
२९ पृथिवी के सब हृष्ट पुष्ट लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे
जितने मरके मिट्टी में मिल जानेहारे हैं
बलिक एक एक जन जो अपना प्राण नहीं बचा सकता सो सब उसी के साम्हने घुटने टेकेंगे।
एक बंश उस की सेवा करेगा ३०
दूसरी पीढ़ी से प्रभु का बर्णन किया जावेगा।
लोग आके उस का धर्म्म बतावेंगे ३१
अर्थात् उस की उत्पन्न होनेहारी प्रजा से कहेंगे कि जो करना था सो उस ने किया है।

२३

दाऊद का स्तोत्र।

यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ भी घटी न होवेगी। १
वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता २
श्रम दूर करनेहारे जल के किनारे वह मुझे धीरे धीरे ले चलता है।
वह मेरे जी में जी ले आता है ३
धर्म्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।
चाहे मैं मृत्यु से छाये हुए खड्ड में होके चलूं ४
तौभी हानि से न डरूंगा क्योंकि तू मेरे संग है
तेरा सोंटा और लाठी जो हैं उन से मुझे शान्ति मिलती है।
तू मेरे सतानेहारों के देखते भी मेरे लिये मेज लगा रहा है ५
तू ने मेरे सिर पर तेल लगाया और मेरा कटोरा उमण्ड रहा है

६ सचमुच यहोवा की भलाई और करुणा
जीवन भर मेरे पीछे बनी रहेंगी
और मैं यहोवा के घर में पहुंचके ढेर
दिन लों बना रहूंगा ।

२४ दाऊद का स्तोत्र ।

१ पृथिवी और जो कुछ उस में है सो
यहोवा ही का है
जगत अपने बासियों समेत उसी का है।
२ क्योंकि उसी ने उस की नेव समुद्रों के
ऊपर डाली
और महानदों के ऊपर उसे स्थिर
किया है ।
३ यहोवा के पर्बत पर कौन चढ़ सकेगा
और उस के पवित्रस्थान में कौन खड़ा
हो सकेगा ।
४ जिस के हाथ निर्दोष और हृदय शुद्ध है
जिस ने अपने मन को व्यर्थ बात की
ओर नहीं लगाया
और न कपट से किरिया खाई है ।
५ वही मनुष्य यहोवा की ओर से आशीष
पावेगा
और अपने उद्धार करनेहारे परमेश्वर
की ओर से धर्म्मी ठहरेगा ।
६ उस के पास आनेहारे लोग वे ही हैं
जो तेरे दर्शन के खोजी हैं सोई
याकूबबंशी ठहरे हैं । सेला ।
७ हे फाटको खुल जाओ
और हे सनातन द्वारो तुम भी खुल जाओ
तो प्रतापी राजा प्रवेश करेगा ।
८ यह प्रतापी राजा कौन है
वह तो सामर्थी और पराक्रमी यहोवा है
वह तो युद्ध में पराक्रमी यहोवा ही है ।
हे फाटको खुल जाओ ९
और हे सनातन द्वारो तुम भी खुल
जाओ
तो प्रतापी राजा प्रवेश करेगा ।
यह जो प्रतापी राजा है सो कौन है १०
वह तो सेनाओं का यहोवा है वही
प्रतापी राजा है । सेला ।

२५ दाऊद रचित ।

हे यहोवा मैं अपने मन को तेरी ही १
ओर लगाता हूं ।
हे मेरे परमेश्वर मैं ने तुझी पर भरोसा २
रक्खा है
मुझे लज्जित होना न पड़े
मेरे शत्रु मुझ पर फुलसने न पावें ।
बल्कि जितने तेरी बाट जोहते हैं उन ३
में से कोई लज्जित न होवे
पर जो अकारण बिश्वासघाती हैं सोई
लज्जित होवें ।
हे यहोवा अपने मार्ग मुझ को बता दे ४
अपनी गति का ज्ञान मुझे दे ।
मुझे अपने सत्य मार्ग में चला और ५
शिक्षा दे
क्योंकि मेरा उद्धार करनेहारा परमे-
श्वर तू ही है
दिन भर मैं तेरी ही बाट जोहता
रहता हूं ।
हे यहोवा अपनी दया और करुणा ६
के कर्म्मों को स्मरण कर

क्योंकि वे तो सदा से होते आये हैं।
७ मेरी जवानी के पाप और मेरा कोई
अपराध स्मरण न कर
पर अपनी करुणा ही के अनुसार तू
मुझे स्मरण कर
हे यहोवा तू जो भला है इस हेतु
ऐसा कर।
८ यहोवा भला और सीधा है
इस लिये वह पापियों को अपना मार्ग
दिखावेगा।
९ वह नम्र लोगों को न्याय पर चलावेगा
और नम्र लोगों को अपना मार्ग
दिखावेगा।
१० जो यहोवा की बाचा और चितौनियों
को पालन करते हैं
उन के लिये उस का सारा व्यवहार
करुणा और सच्चाई का होता है।
११ हे यहोवा अपने नाम के निमित्त
मेरे अधर्म्म को जो बड़ा है क्षमा कर।
१२ कोई भी मनुष्य हो जो यहोवा का
भय मानता है
उस को यहोवा उस के चुने हुए मार्ग
में अगुवाई करेगा।
१३ वह कुशल से टिका करेगा
और उस का वंश पृथिवी का स्वामी
होवेगा।
१४ यहोवा का भेद उस के डरवैयों पर
खुलता है
और उस की बाचा भी उन पर ऐसी
खुलती है कि वे उसे समझ लेते हैं।
१५ मेरे नेत्र यहोवा की ओर लगातार लगे हैं
क्योंकि मेरे पांवों को जाल में से वही
छुड़ावेगा।
हे यहोवा मेरी ओर फिरके मुझ पर १६
अनुग्रह कर
क्योंकि मैं एकला और दीन हूं।
मेरे हृदय के क्लेश बढ़ गये १७
तू मुझे इस सकेती से निकाल।
मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर १८
और मेरे सारे पापों को क्षमा कर।
मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गये हैं १९
और मुझ से घोर बैर रखते हैं।
मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा २०
मुझे लज्जित होना न पड़े क्योंकि मैं
तेरा शरणागत हूं।
मेरी खराई और सीधाई के कारण २१
मेरी रक्षा होवे
क्योंकि मैं तेरी बाट जोहता हूं।
हे परमेश्वर इस्राएल् को २२
उस के सारे संकटों से छुड़ा ले।

२६ दाऊद रचित।

हे यहोवा मेरा न्याय चुका क्योंकि मैं १
खराई से चला हूं
और मेरा भरोसा यहोवा ही पर
अचल बना है।
हे यहोवा मुझ को जांच और परख २
मेरे अन्तःकरण और हृदय को ताव।
तेरी करुणा तो मुझे दीखती रहती है ३
और मैं तेरे सत्य मार्ग में चला फिरा हूं।
मैं निकम्मी चाल चलनेहारों के संग ४
नहीं बैठा

और न मैं कपटियों के साथ कहीं
जाऊंगा ।
५ मैं कुकर्म्मियों की सभा से बैर रखता हूं
और दुष्टों के संग न बैठूंगा ।
६ मैं अपने हाथों को निर्दोषतारूपी
जल में धोऊंगा
तब हे यहोवा मैं तेरी बेदी की प्रदक्षिणा
करूंगा ।
७ जिस्तें तेरा धन्यबाद ऊंचे शब्द से
करूं
और तेरे सब आश्चर्य्य कर्म्मों का बर्णन
करूं ।
८ हे यहोवा मैं तेरे धाम में
अर्थात् तेरी महिमा के निवासस्थान
में प्रीति रखता हूं ।
९ मेरे प्राण को पापियों में
और मेरे जीवन को हत्यारों में न
मिला दे ।
१० वे तो बदमाशी में लगे रहते हैं
और उन का दहिना हाथ घूंस से
भरा रहता है ।
११ पर मैं तो खराई से चलूंगा
सो तू मुझे छुड़ा ले और मुझ पर
अनुग्रह कर ।
१२ मेरा पांव चौरस स्थल में स्थिर है
सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा
करूंगा ।

२७

दाऊद रचित ।

१ यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार-
कर्त्ता है सो मैं किस से डरूं
यहोवा मेरे जीवन का मानो दृढ़ स्थान
है सो मैं किस का भय खाऊं ।
मेरे सतानेहारे बलिक मुझी से शत्रुता २
रखनेहारे जो थे
जब वे कुकर्म्मी मुझे खा डालने के
लिये मुझ पर चढ़ाई कर रहे थे
तब वे ही ठोकर खाके गिर पड़े ।
चाहे सेना भी मेरे बिरुद्ध छावनी करे ३
तौभी मैं न डरूंगा
चाहे मेरे बिरुद्ध लड़ाई उठे
उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे रहूंगा ।
एक बर मैं ने यहोवा से मांगा है उसी ४
के यत्न में लगा रहूंगा
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में
रहने पाऊं
जिस्तें यहोवा की मनोहरता पर
टकटकी लगाये रहूं
और उस के मन्दिर में खोज किया
करूं ।
वह तो मुझे बिपत्ति के दिन में अपने ५
मण्डप में छिपा रक्खेगा
अपने तम्बू के गुप्तस्थान में वह मुझे
गुप्त रक्खेगा
और चटान पर चढ़ाये रक्खेगा ।
सो अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के ६
शत्रुओं से ऊंचा होवेगा
और मैं उस के तम्बू में जयजयकार
के साथ बलिदान चढ़ाऊंगा
और यहोवा का भजन गाऊंगा ।
हे यहोवा सुन मैं ऊंचे शब्द से ७
पुकारता हूं

सो तू मुझ पर अनुग्रह करके उत्तर
दे।
८ तू ने जो कहा है कि मेरे दर्शन के
खोजी होओ इस लिये मेरा मन
तुझ से कहता है
हे यहोवा तेरे दर्शन का तो मैं खोजी
होता हूं।
९ अपना मुख मुझ से न फेर ले
मुझ अपने दास को कोप करके न
हटा
तू तो मेरा सहायक बना है
सो हे मेरे उद्धार करनेहारे परमेश्वर
मेरा त्याग न कर और मुझे छोड़
न दे।
१० मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़
दिया है
पर यहोवा मुझे रख लेवेगा।
११ हे यहोवा अपने मार्ग में मेरी अगुवाई
कर
और मेरे द्रोहियों के हेतु से
मुझ को समथर बाट पर ले चल।
१२ मुझ को मेरे सतानेहारों की इच्छा
पर न छोड़
क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने
की धुन में हैं सो मेरे बिरुद्ध उठे हैं।
१३ यदि मैं बिश्वास न करता कि यहोवा
की भलाई को
जीवन के लोक में देखने पाऊंगा तो
मैं नाश हो जाता।
१४ यहोवा की बाट जोह
हियाव बांध और तेरा हृदय दृढ़ रहे
फिर कहता हूं यहोवा की बाट जोहता
ही रह।

२८ दाऊद रचित।

हे यहोवा मैं तुझी को पुकारूंगा १
हे मेरे चटान सरीखे ईश्वर मेरी सुनी
अनसुनी न कर
नहीं तो यदि तू मुझ से चुप लगाये
रहे
तो मैं कबर में पड़े हुओं के समान
हो जाऊंगा।
जब मैं तेरी दोहाई देऊं २
और तेरे पवित्र स्थान की भीतरी
कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊं
तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुनना।
जो लोग अपने पड़ोसियों से बातें तो ३
मेल की बोलते हैं
पर हृदय में बुराई रखते हैं
उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग
मुझे न घसीट।
उन को उन के कर्म्मों का फल भुगता ४
और उन के कार्य्यों की बुराई के
अनुसार उन से बर्त्ताव कर
उन के हाथों के काम के अनुसार उन्हें
बदला दे
उन की कमाई उन्हें दे दे।
वे जो यहोवा की क्रिया को ५
और उस के हाथों के काम को नहीं
बिचारते
इस लिये वह उन्हें गिरावेगा और
फिर कभी न उठावेगा।

६ यहोवा धन्य है
क्योंकि उस ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है ।
७ यहोवा मेरा बलमूल और मेरी ढाल ठहरा है
उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है
इस लिये मेरा हृदय प्रफुल्लित है
और मैं गा गाके उस का धन्यवाद करूंगा ।
८ यहोवा अपनी प्रजा का बलमूल है
और अपने अभिषिक्त के बचाव के लिये दृढ़स्थान ठहरा ।
९ हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर
और अपने निज भाग के लोगों को आशीष दे
और अपनी प्रजारूपी भेड़ों की चरवाही कर और सदा लों उन्हें सम्भाले रह ।

२९ दाऊद का स्तोत्र ।

१ हे ईश्वर के पुत्रो यहोवा का गुणानुवाद करो
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य की चर्चा करो ।
२ यहोवा के नाम की महिमा की चर्चा करो
पवित्रता से शोभायमान होके यहोवा को दण्डवत् करो ।
३ यहोवा की वाणी मेघों के ऊपर सुन पड़ती है
महिमायुक्त ईश्वर गरजा है
यहोवा मेघों के बड़े दल के ऊपर रहता है ।
यहोवा की वाणी शक्तिमान है ४
यहोवा की वाणी प्रतापमय है ।
यहोवा की वाणी देवदारुओं को तोड़ डालती है ५
बल्कि यहोवा लबानोन् के देवदारुओं को तोड़ डालता है ।
और वह उन्हें बछड़े की नाईं कुदाता है ६
बल्कि लबानोन् और शिर्योन् को बनैली गायों के बच्चों के समान उछलाता है ।
यहोवा की वाणी अग्नि की लौवें को घटाओं में से निकालती है । ७
यहोवा की वाणी बन को कंपाती ८
यहोवा कादेश् के बन को कंपाता है ।
यहोवा की वाणी से हरिणियों का गर्भपात ९
और अरण्य में पतझड़ होती है
और उस के मन्दिर में सब कुछ महिमा महिमा यों बोलता रहता है ।
जलप्रलय के समय यहोवा बिराजमान था १०
और यहोवा सदा का राजा होके बिराजमान रहता है ।
यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा ११
यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देवेगा ।

३० दाऊद का स्तोत्र। भवन की प्रतिष्ठा का गीत।

१ हे यहोवा मैं तुझे सराहूंगा क्योंकि तू
ने मुझे माना कूए में से खींचके
निकाला है
और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द
करने नहीं दिया।
२ हे मेरे परमेश्वर यहोवा
मैं ने तेरी दोहाई दिई थी और तू
ने मुझे चंगा किया है।
३ हे यहोवा तू ने मेरे प्राण को अधो-
लोक में से निकाला है
तू ने मुझ को जीता रक्खा और कबर
में पड़ने से बचाया है।
४ हे यहोवा के भक्तो उस का भजन गाओ
और जिस पवित्र नाम से उस का
स्मरण होता है उस का धन्यबाद
करो।
५ क्योंकि उस का कोप क्षण भर का होता
पर उस की प्रसन्नता जीवन भर की
होती है
सांझ को रुलाई आके रहे तो रहे
पर बिहान को आनन्द के मारे ऊंचे
स्वर से गाना होगा।
६ और मैं ने तो अपने चैन के समय
कहा था
कि मैं कभी नहीं टलने का।
७ हे यहोवा तू ही ने अपनी प्रसन्नता से मेरे
पहाड़ को दृढ़ और स्थिर किया था
जब तू ने अपना मुख छिपाया तब मैं
भभर गया।
८ तब हे यहोवा मैं ने तुझी को पुकारा
और तुझी से मैं ने गिड़गिड़ाके यह
बिन्ती किई कि
९ मेरे लोहू के बहने से और कबर में
पड़ने से क्या लाभ होवेगा
क्या मिट्टी तेरा धन्यबाद कर सकती
क्या वह तेरी सच्चाई प्रचार कर
सकती है।
१० हे यहोवा सुनके मुझ पर अनुग्रह कर
हे यहोवा तू मेरा सहायक हो।
११ अब तू ने मेरे बिलाप को दूर करके
मुझे आनन्द से नचाया
तू ने मेरा टाट उतरवाके मेरी कमर में
आनन्द का फेंटा बांधा है।
१२ जिस्तें मेरा आत्मा बिना दम लिये
तेरा भजन गाता रहे
हे मेरे परमेश्वर यहोवा मैं सदा तेरा
धन्यबाद करता रहूंगा।

३१ प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का स्तोत्र।

१ हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं मुझ
को कभी लज्जित होना न पड़े
तू अपने धर्म्म के हेतु मुझे छुड़ा।
२ अपना कान मेरी ओर लगाके शीघ्र
मुझे छुड़ा
मेरे बचाने को दृढ़ चटान वा अगम्य
स्थान का काम दे।
३ क्योंकि तू मेरे लिये ढांग और अगम्य
स्थान ठहरा है
सो अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई
कर और मुझे धीरे धीरे ले चल।

४ जो जाल उन्हों ने मेरे लिये लगाया
है उस में से तू मुझ को छुड़ा
तू तो मेरा दृढ़ स्थान ठहरा है ।
५ मैं अपने आत्मा को तेरे ही हाथ में
सौंप देता हूं
हे यहोवा हे सत्यवादी ईश्वर तू ने
मुझे छुड़ा लिया है ।
६ जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर
मन लगाते हैं उन का तो मैं बैरी हूं
और मेरा भरोसा जो है सो यहोवा
ही पर है ।
७ मैं तेरी करुणा से मगन और आनन्दित
होऊंगा
क्योंकि तू ने मेरी दीनता पर दृष्टि
किई है
तू ने मुझ दुःखी पर चित्त लगाया है ।
८ और तू ने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने
नहीं दिया
बलिक चौड़े स्थान में खड़ा कर दिया
है ।
९ हे यहोवा मुझ पर करुणा कर क्योंकि
मैं संकट में हूं
मेरी आंखें शोक से धुंधली पड़ गईं
बलिक मेरा जीव और पेट भी सूख
गया है ।
१० मेरा जीवन शोक के मारे और मेरे
बरस कराहने से घट गये
मेरा बल मेरे अधर्म्म के हेतु जाता रहा
और मेरी हड्डियां घुन गई हैं ।
११ मेरे सब सतानेहारों के कारण मेरी
नामधराई हुई
और विशेष करके मेरे पड़ोसियों में
हुई और मैं अपने चिन्हारों को
डर का कारण हुआ
जिन्हों ने मुझ को सड़क में देखा सो
मुझ से भाग गये ।
मैं मुर्दे की नाईं लोगों के मन से बिसर १२
गया
मैं टूटे बासन के सदृश हो गया हूं ।
मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद १३
सुना
मेरी चारों ओर भय है
जब उन्हों ने मेरे बिरुद्ध आपस में
सम्मति किई
तब मेरे प्राण लेने की युक्ति किई ।
पर हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर १४
भरोसा रक्खा है
मैं ने कहा कि तू मेरा परमेश्वर है ।
मेरी समय समय की दशा तेरे हाथ १५
में है
तू मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ से और
मेरे पीछे पड़े हुओं से बचा ।
मुझ अपने दास को अपना प्रसन्न १६
मुख दिखा
अपनी करुणा से मेरा उद्धार कर ।
हे यहोवा मुझे लज्जित होना न पड़े १७
क्योंकि मैं ने तुझ को पुकारा है
पर दुष्ट लोग लज्जित होवें वे अधोलोक
में चुपचाप पड़े रहें ।
जो अहंकार और अपमान से १८
धर्म्मी के बिरुद्ध गाली बकते हैं
उन के झूठे मुंह बन्द किये जावें ।

१९ अहा तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो
तू ने अपने डरवैयों के लिये रख
छोड़ी
और अपने शरणागतों के लिये आदम-
वंशियों के साम्हने प्रगट भी किया
है।
२० तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्यों
की बुरी गोष्ठी से गुप्त रक्खेगा
तू उन को बकबक के झगड़े से अपने
मण्डप में छिपा रक्खेगा।
२१ यहोवा धन्य है
क्योंकि उस ने मुझे मानो गढ़वाले
नगर में रखके मुझ पर अद्भुत
करुणा किई है।
२२ और मैं ने तो भभरके कहा था कि
मैं तेरे नेत्रों से दूर हो गया
तौभी जब मैं ने तेरी दोहाई दिई तब
तू ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना।
२३ हे यहोवा के सब भक्तो उस से प्रेम
रक्खो
यहोवा सच्चे लोगों की रक्षा करता
पर जो अहंकार से काम करता है उस
को वह भली भांति बदला देता है।
२४ हे यहोवा पर सब आशा रखनेहारो
हियाव बांधो और तुम्हारे हृदय दृढ़
रहें।

३२

दाऊद रचित। मस्कील् नाम
स्तोत्र।

१ क्या ही धन्य है वह जिस का अपराध
क्षमा किया गया और जिस का
पाप ढांपा गया हो।
क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिस का २
अधर्म्म यहोवा लेखे में न लिखे
और जिस के आत्मा में कपट न हो।
जब लों मैं चुप रहा ३
तब लों दिन भर चिल्लाते चिल्लाते मेरी
हड्डियां घुनती गईं।
क्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के नीचे ४
पूरी रीति से दबा रहा
और मेरी तरावट धूपकाल की सी
झुराहट बनती गई। सेला।
पर हे यहोवा जब मैं ने अपना पाप ५
तुझ को प्रगट किया और अपना
अधर्म्म फिर न छिपाया
पर कहा कि मैं यहोवा के साम्हने
अपने अपराधों को अङ्गीकार करूंगा
तब तू ने मेरे अधर्म्म और पाप को
क्षमा किया। सेला।
इस कारण हर एक भक्त जब उस का ६
पाप उस को खुल जावे[1]
तब तुझ से प्रार्थना करेगा
जल की बड़ी बाढ़ हो तो हो पर
निश्चय जल उस भक्त के पास न
पहुंचेगा।
तू मेरे छिपने का स्थान है तू संकट ७
से मेरी रक्षा करेगा
तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के गीत
सुनवावेगा। सेला।
तू ने कहा है कि मैं तुझे बुद्धि देऊंगा ८
और जिस मार्ग में तुझे चलना हो
उस में तेरी अगुवाई करूंगा

(१) अथवा. जब तू मिल सकता है.

मैं तुझ पर कृपादृष्टि रक्खे हुए तुझे
सम्मति दिया करूंगा।
९ घोड़े और खच्चर के सदृश मत हो जो
समझ नहीं रखते
जिन की उमंग लगाम और बाग से
रोकनी पड़ती है
क्योंकि वे बिन रोके तेरे बश नहीं
आने के।
१० दुष्ट को बहुत पीड़ा होवेगी
पर जो यहोवा पर भरोसा रखता
है सो उस की करुणा से घिरा
रहेगा।
११ हे धर्म्मियो यहोवा के कारण आनन्दित
और मगन होओ
और हे सब सीधे मनवालो ऊंचे स्वर
से गाओ।

३३ हे धर्म्मियो यहोवा के
कारण ऊंचे स्वर से गाओ
क्योंकि सीधे लोगों को स्तुति करनी
सजती है।
२ बीणा बजा बजाके यहोवा का धन्य-
बाद करो
दसतारवाली सारङ्गी बजा बजाके उस
का भजन गाओ।
३ उस के लिये नया गीत गाओ
जयजयकार के साथ भली भांति
बजाओ।
४ क्योंकि यहोवा का बचन सीधा है
और उस का सारा काम सच्चाई से
होता है।
५ वह धर्म्म और न्याय में प्रीति रखता है
यहोवा की करुणा से पृथिवी परि-
पूर्ण है।
आकाशमण्डल यहोवा के बचन से ६
बन गया
और सारे नक्षत्रगण उस के मुंह की
सांस से बने।
वह समुद्र का जल ढेर की नाईं एकट्ठा ७
करता
वह महाजलनिधि को अपने भण्डार
में रखता है।
सारी पृथिवी के लोग यहोवा से डरें ८
जगत के सब निवासी उस का भय
मानें।
क्योंकि जब उस ने कहा तब हो गया ९
जब उस ने आज्ञा दिई तब स्थिर
हुआ।
यहोवा अन्यजातियों की युक्ति को १०
व्यर्थ कर देता
वह जाति जाति के लोगों की कल्पनाओं
को निष्फल करता है।
पर उस की युक्ति सदा स्थिर रहेगी ११
उस के मन की कल्पनाएं पीढ़ी से
पीढ़ी लों बनी रहेंगी।
क्या ही धन्य है वह जाति जिस का १२
परमेश्वर यहोवा है
और वह समाज जिसे उस ने अपना
निज भाग होने के लिये चुन
लिया है।
यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता १३
वह सारे आदमवंशियों को निहारता
रहता है।

१४ अपने निवास के स्थान से
वह पृथिवी के सब रहनेहारों को
ताकता है ।
१५ वही है जो उन सभों के मन में भाव
उदय करता
और उन के सब कामों को बूझ लेता है ।
१६ कोई ऐसा राजा नहीं जो सेना की
बहुतायत के कारण बच सके
और अपनी बड़ी शक्ति के हेतु छूट
नहीं जाता ।
१७ घोड़ा जो है सो बचाव के लिये व्यर्थ है
वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी
को नहीं बचा सकता ।
१८ देखो यहोवा की कृपादृष्टि उस के
डरवैयों पर
और उन पर जो उस की करुणा की
आशा रखते हैं बनी रहती है ।
१९ जिस्तें वह उन के प्राण को मृत्यु से
बचावे
और अकाल के समय उन को जीता
रक्खे ।
२० हम यहोवा का आसरा तकते आये हैं
वह हमारा सहायक और हमारी
ढाल ठहरा है ।
२१ हमारा हृदय उस के कारण आनन्दित
होवेगा
क्योंकि हम ने उस के पवित्र नाम का
भरोसा रक्खा है ।
२२ हे यहोवा हम ने जो तेरी आशा
रक्खी है
इस लिये तेरी करुणा हम पर होवे ।

३४

दाऊद का स्तोत्र जो उस ने उस समय रचा जब वह अबीमेलेक् के साम्हने बौरहा बना और अबीमेलेक् ने उसे दुर्दुराके निकाल दिया और वह चला गया ।

मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा १
करूंगा
उस की स्तुति निरन्तर मेरे मुख से
होती रहेगी ।
मैं यहोवा पर घमण्ड करूंगा २
नम्र लोग यह सुनके आनन्दित हो-
वेंगे ।
मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो ३
और आओ हम मिलके उस के नाम
को सराहें ।
मैं यहोवा के पास गया तब उस ने ४
मुझे उत्तर दिया
और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया ।
जिन्हों ने उस की ओर दृष्टि किई ५
उन्हों ने ज्योति पाई
और उन का मुंह कभी काला न
होवेगा ।
इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ६
ने सुन लिया
और उस को उस के सारे कष्टों से
उबार लिया ।
यहोवा के डरवैयों की चारों ओर ७
उस का दूत छावनी किये हुए
उन को बचाता है ।
परखके देखो कि यहोवा कैसा भला ८
है

क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उस
की शरण लेता है ।
९ हे यहोवा के पवित्र लोगो उस का
भय मानो
क्योंकि उस के डरवैयों को किसी बात
की घटी नहीं होती ।
१० हो तो सकता है कि जवान सिंहों को
घटी हो और वे भूखे रह जावें
पर यहोवा के पास आनेहारों को किसी
भली वस्तु की घटी न होवेगी ।
११ हे लड़को आओ मेरी सुनो
मैं तुम को यहोवा का भय मानना
सिखाऊंगा ।
१२ तुम में जो कोई जीवन की इच्छा
रखता
और दीर्घायु चाहता हो जिस्तें मैं
सुख भोगूं उस जन के लिये मेरा
यह उपदेश है कि
१३ अपना मुख बुराई से रोक रख
और उस की चौकसी कर कि उस से
छल की बात न निकले ।
१४ बुराई को छोड़ और भलाई कर
मेल को ढूंढ़ और उस का पीछा न
छोड़ ।
१५ यहोवा के नेत्र धर्म्मियों पर लगे रहते हैं
और उस के कान भी उन की दोहाई
की ओर लगे रहते हैं ।
१६ यहोवा बुराई करनेहारों के बिमुख
रहता है
जिस्तें उन का नाम पृथिवी पर से
मिटा डाले ।

जब धर्म्मी दोहाई देते तब यहोवा १७
सुनता
और उन को उन की सब प्रकार की
बिपत्तियों से छुड़ाता है ।
यहोवा खेदित लोगों के समीप रहता १८
है
और पश्चात्ताप करनेहारों का उद्धार
करता है ।
धर्म्मी पर बहुत सी बिपत्तियां पड़ती १९
तो हैं
पर यहोवा उस को उन सब से
छुड़ाता है ।
वह उस की हड्डी हड्डी की रक्षा २०
करता है
सो उन में से एक भी टूटने नहीं
पाती ।
दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मार डाला २१
जावेगा
और धर्म्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे ।
यहोवा अपने दासों के प्राण को बचा २२
लेता है
और जितने उस के शरणागत हैं उन
में से कोई दोषी न ठहरेगा ।

३५

दाऊद रचित ।

हे यहोवा जो मेरे साथ वादविवाद १
करते हैं उन के साथ तू वादविवाद
कर
जो मुझ से लड़ते हैं उन से तू लड़ ।
छोटी बड़ी दोनों भान्ति की ढाल लेके २
मेरी सहायता करने को खड़ा हो ।

३ श्रीर भाले को खींच श्रीर मेरा पीछा
करनेहारों के साम्हने श्राके उन
को रोक
श्रीर मुझ से कह कि मैं तेरे उद्धार
का मूल हूं।
४ जो मेरे प्राण के गाहक हैं सो लज्जित
श्रीर निरादर होवें
जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं
सो पीछे हटाये जावें श्रीर उन का
मुंह काला होवे।
५ वे वायु से उड़ जानेहारी भूसी के
समान हों
श्रीर यहोवा का दूत उन्हें धकियाता
जावे।
६ उन के मार्ग में अन्धियारा श्रीर
फिसलाहट होवे
श्रीर यहोवा का दूत उन को खदेड़ता
जावे।
७ क्योंकि श्रकारण उन्हों ने मेरे लिये
श्रपना जाल गड़हे में लगाया
श्रकारण उन्हों ने मेरे प्राण लेने के
लिये गड़हा खोदा है।
८ उन पर श्रकस्मात् महाबिपत्ति पड़े
श्रीर जो जाल उन्हों ने लगाया है
उसी में वे श्राप फंसें
उसी महाबिपत्ति में वे श्राप ही
पड़ें।
९ तब मैं यहोवा के कारण जी से मगन
होऊंगा
मैं उस के किये हुए उद्धार से हर्षित
होऊंगा।

मेरी हड्डी हड्डी कहेंगी कि हे यहोवा १०
तेरे तुल्य कौन है
जो दीन जन को बड़े बड़े बलवन्तों
से बचाता है
अर्थात् लुटेरों से दीन दरिद्र लोगों
की रक्षा करता है।
द्रोह करनेहारे साक्षी खड़े होते हैं ११
श्रीर जो बात मैं नहीं जानता वही
मेरे शत्रु मुझ से पूछते हैं।
वे मुझ से भलाई के पलटे में बुराई १२
करते हैं
सो मैं बन्धुहीन हुश्रा हूं।
मैं तो जब वे रोगी थे तब टाट पहिने १३
रहा
श्रीर उपवास कर करके दुःख उठाता
था
श्रीर मेरी प्रार्थना का फल मुझी को
मिलेगा।
मैं ऐसा भाव रखता था कि मानो वे १४
मेरे संगी वा भाई हैं
जैसा कोई माता के लिये बिलाप करता
हो वैसा ही मैं शोक का पहिरावा
पहिने हुए झुका चलता था।
पर वे लोग जब मैं लंगड़ाने लगा तब १५
श्रानन्दित होके एकट्ठे भये
नीच लोग श्रीर जिन्हें मैं जानता भी
न था सो मेरे बिरुद्ध एकट्ठे भये
वे मुझे बचन के बाणों से लगातार
बेधते रहे।
उन पाखण्डी भांडों की नाईं जो पेट १६
के लिये उपहास करते हैं

वे भी मुझ पर दांत पीसते हैं ।
१७ हे प्रभु तू कब लों इस दशा को देखता
रहेगा
इस महाबिपत्ति से जिस में उन्हों ने
मुझे डाला है मुझ को छुड़ा
जवान सिंहों से मेरी दुलारी[1] को
बचा ले ।
१८ तब मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद
करूंगा
बहुतेरे लोगों के बीच में तेरी स्तुति
करूंगा ।
१९ जो भूल में आके मुझ से शत्रुता रखते
हैं सो मेरे बिरुद्ध आनन्द न करने
पावें
जो अकारण मेरे बैरी हैं सो आपस
में नैन से सैन न करने पावें ।
२० क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते
पर देश में जो चुपचाप रहते हैं उन
के बिरुद्ध छल की कल्पनाएं करते
हैं ।
२१ और उन्हों ने मेरे लिये अपना मुंह
पसारा
और कहा आहा आहा हम ने अपनी
आंखों से देखा है ।
२२ हे यहोवा तू ने तो देखा है सो चुप
न रह
हे प्रभु मुझ से दूर न रह ।
२३ उठ मेरे न्याय के लिये जाग
हे मेरे परमेश्वर हे मेरे प्रभु मेरा
मुकद्दमा निपटाने के लिये आ ।

(१) अर्थात्. जीव वा मन.

हे मेरे परमेश्वर यहोवा अपने धर्म्म २४
के अनुसार मेरा न्याय चुका
और उन्हें मेरे बिरुद्ध आनन्द करने न दे ।
वे मन में न कहने पावें कि आहा २५
हमारी इच्छा पूरी भई
हम उस को निगल गये हैं ।
जो मेरी हानि से आनन्दित हैं उन के मुंह २६
लज्जा के मारे एक साथ काले होवें
जो मेरे बिरुद्ध बड़ाई मारते हैं सो
लज्जा और अनादर से ढंप जावें ।
जो मेरे धर्म्म से प्रसन्न रहते हैं सो २७
ऊंचे स्वर से गावें और आनन्द करें
और निरन्तर कहते रहें कि यहोवा
की बड़ाई होवे
जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न
होता है ।
तब मेरे मुंह से तेरे धर्म्म की चर्चा २८
होवेगी
और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी ।

३६

प्रधान बजानेहारे के लिये । यहोवा
के दास दाऊद रचित ।

दुष्ट जन के हृदय के भीतर अपराध १
की वाणी देववाणी के समान हुआ
करती है
उस के मन में परमेश्वर का कुछ भय
नहीं ।
बल्कि वह अपनी समझ में उस के २
साम्हने चापलूसी करता है
और समझता है कि मेरा अधर्म्म कभी
घिनौना न ठहरेगा ।
उस की बातें अनर्थ और छल की हैं ३

उस ने बुद्धि और भलाई के काम करने
से हाथ उठाया है।
४ वह अपने बिछौने पर पड़े पड़े अनर्थ
की कल्पना करता है
वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना
रहता है
बुराई का वह छोड़ता नहीं।
५ हे यहोवा तेरी करुणा तो स्वर्ग में है
तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची
है।
६ तेरा धर्म्म ईश्वर के पर्वतों के सदृश है
तेरे न्यायकर्म्म माना अथाह सागर हैं
हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों
की रक्षा करता है।
७ हे परमेश्वर तेरी करुणा कैसी ही
अनमोल है
और आदमवंशी तेरे पंखों के तले
शरण लेते हैं।
८ वे तेरे भवन में के चिकने भोजन से
भली भांति तृप्त होवेंगे
और तू अपनी सुखरूपी नदी में से
उन्हें पिलावेगा।
९ क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही
पास है
तेरा ही प्रकाश हमारे लिये सच्चा
प्रकाश है।
१० अपने जाननेहारों पर करुणा करता
रह
और अपने धर्म्म का ज्ञान सीधे मन-
वालों का देता रह।
११ अहंकारी मेरे विरुद्ध पांव उठाने न पावे
और न दुष्ट अपने हाथ से मुझे भगाने
पावे।
देखो उधर अनर्थकारी गिर पड़े हैं १२
वे ढकेल दिये गये और फिर उठ न
सकेंगे।

३७

दाऊद रचित।

कुकर्म्मियों के हेतु मत कुढ़ १
कुटिल कर्म्म करनेहारों के विषय डाह
न कर।
क्योंकि वे घास की नाईं शीघ्र कट २
जावेंगे
और हरी घास के समान मुर्झा जावेंगे।
यहोवा पर भरोसा रख और भला कर ३
देश में बसा हुआ सच्चाई में मन
लगाये रह।
यहोवा का अपने सुख का मूल जान ४
और वह तेरे मनोरथों का पूरा करेगा।
अपने मार्ग की चिन्ता का भार यहोवा ५
पर डाल
और उस पर भरोसा रख तो वह सब
कुछ बना देवेगा।
और वह तेरा धर्म्म ज्योति की नाईं ६
और तेरा न्याय दो पहर के उजियाले
के समान प्रगट करेगा।
यहोवा की ओर मन लगाये हुए चुप- ७
चाप रह और धीरज से उस का
आसरा रख
उन लोगों के कारण मत कुढ़ जो बुरी
बुरी युक्तियां निकालते हैं और
उन के कार्य्य सुफल होते हैं

८ क्रोध को परे रख और जलजलाहट
को छोड़ दे
मत कुढ़ नहीं तो उस से बुराई ही
निकलेगी ।
९ क्योंकि कुकर्म्मी लोग लोप किये जावेंगे
और जो यहोवा की बाट जोहते हैं
सोई पृथिवी के स्वामी होवेंगे ।
१० थोड़े दिन पीछे दुष्ट रहेगा
भी नहीं
और तू उस के स्थान को भली भान्ति
खोजने से भी न पावेगा ।
११ पर नम्र लोग पृथिवी के स्वामी होवेंगे
और शान्ति की बहुतायत से सुख
मानेंगे ।
१२ दुष्ट धर्म्मी के बिरुद्ध बुरी युक्ति निकालता
और उस के बिरुद्ध दांत पीसता है ।
१३ प्रभु उस पर हंसेगा
क्योंकि वह देखता है कि उस के बिनाश
का दिन आनेहारा है ।
१४ दुष्ट लोग अपनी तलवारें खींचते और
अपने धनुष चढ़ाते हैं
जिस्तें दीन दरिद्र जन को गिरा दें
और सीधी चालवालों को बध करें ।
१५ पर उन की तलवार से उन्हीं के हृदय
छिदेंगे
और उन के धनुष तोड़े जावेंगे ।
१६ धर्म्मी का थोड़ा सा भी धन
बहुत से दुष्टों के ढेर धन से उत्तम है ।
१७ दुष्टों की भुजाएं तोड़ी जावेंगी
पर यहोवा धर्म्मियों को संभालता
रहेगा ।

यहोवा खरे लोगों के जीवन की दशा १८
पर चित्त लगाता है
और उन का भाग सदा लों बना
रहेगा ।
बिपत्ति के समय उन की आशा न १९
टूटेगी
और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे ।
पर दुष्ट लोग नष्ट होवेंगे २०
और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी
घास की नाईं सूखेंगे
वे मिट जावेंगे वे धूआं होके बिलाय
जावेंगे ।
दुष्ट ऋण तो लेता पर भर नहीं सकता २१
पर धर्म्मी अनुग्रह करके दान देता
है ।
क्योंकि जो यहोवा से आशीष पाते हैं २२
सो पृथिवी के स्वामी होवेंगे
पर जो उस से स्रापित हुए हैं सो
नष्ट हो जावेंगे ।
यहोवा जो है सो सज्जन के पग दृढ़ २३
करता है
और उस के चलन से प्रसन्न रहता है ।
चाहे वह गिरने पर हो पर भूमि पर २४
न गिरेगा
क्योंकि यहोवा उस का हाथ थांभे
रहता है ।
मैं लड़कपन से ले बुढ़ापे लों देखता २५
आया हूं
पर न तो कभी धर्म्मी को त्यागा हुआ
और न उस के बंश को टुकड़े मांगते
देखा है ।

२६ वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके
ऋण देता है
क्योंकि उस के बंश पर आशीष फलती
रहती है।
२७ बुराई को छोड़ और भलाई कर
तो तू सदा लों बना रहेगा।
२८ क्योंकि यहोवा न्याय में प्रीति रखता
और अपने भक्तों को न तजेगा
वे सदा के लिये रक्षित हैं
पर दुष्टों का बंश लोप हो जावेगा।
२९ धर्म्मी लोग पृथिवी के स्वामी होवेंगे
और उस पर अनन्तकाल लों बसे
रहेंगे।
३० धर्म्मी अपने मुंह से ज्ञान की चर्चा
करता
और न्याय की बात बोलता है।
३१ उस के परमेश्वर की व्यवस्था उस के
हृदय में बनी रहती है
इस से उस के पैर न फिसलेंगे।
३२ दुष्ट धर्म्मी की ताक में रहता
और उस के मार डालने का यत्न
करता तो है।
३३ पर यहोवा धर्म्मी को उस के हाथ में
न छोड़ेगा
और जब उस का बिचार किया जावे
तब यहोवा उसे दोषी न ठहरा-
वेगा।
३४ यहोवा की बाट जोहता रह और
उस के मार्ग पर बना रह
और वह तुझे बढ़ाके पृथिवी का
स्वामी कर देगा
जब दुष्ट लोप होवेंगे तब तू देखेगा।
मैं ने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी और ऐसा ३५
फैलता हुआ देखा
जैसा कोई हरा पेड़ अपने निज देश
में फैले।
पर जब लोग उस के यहां से होके ३६
चले गये तब क्या देखा कि वह
है ही नहीं
बल्कि मैं ने भी उसे ढूंढ़के कहीं न
पाया।
खरे को ताक और सीधे को देख रख ३७
क्योंकि ऐसे पुरुष का अन्तफल शान्ति
है।
पर अपराधी एक साथ बिध्वंस किये ३८
जावेंगे
दुष्टों का अन्तफल बिनाश ही है।
पर धर्म्मियों का बचाव यहोवा की ३९
ओर से होता है
संकट के समय वह उन का दृढ़ स्थान
ठहरता है।
और यहोवा उन की सहायता करके ४०
उन को छुड़ाता है
वह उन को दुष्टों से छुड़ाके उन का
उद्धार करता है
इस लिये कि वे उस के शरणागत हैं।

दाऊद का स्मरण करानेहारा
स्तोत्र।

हे यहोवा क्रोध करके मुझे न डांट १
न जलजलाहट में आके मेरी ताड़ना
कर।
क्योंकि तेरे बाण मेरे बिध गये २

और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूं ।
३ तेरे रोष के कारण मेरे शरीर में कुछ आरोग्यता नहीं
मेरे पाप के हेतु मेरी हड्डियों में कुछ चैन नहीं ।
४ क्योंकि मेरे अधर्म्म के कर्म्मों में मेरा सिर भी डूब गया
और वे अत्यन्त भारी बोझ की नाईं मेरे सहने की शक्ति से बाहर हैं ।
५ मेरी मूढ़ता के कारण
मेरे कोड़े खाने के घाव बसाते और सड़ते जाते हैं ।
६ मैं झुक गया मैं बहुत ही निहुड़ गया
दिन भर मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए चलता हूं ।
७ क्योंकि मेरी कटि भर में जलन है
और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं ।
८ मैं निर्बल और बहुत ही चूर्ण हो गया
मैं अपने मन की घबराहट से चिल्लाता हूं ।
९ हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सन्मुख है
और मेरा कराहना तुझ को सुन पड़ता है ।
१० मेरा हृदय धड़कता है मेरा बल जाता रहा
बल्कि मेरे नेत्रों में भी कुछ ज्योति नहीं रही ।
११ मेरे मित्र और संगी मेरी बिपत्ति में अलग खड़े हैं
बल्कि मेरे कुटुम्बी भी दूर खड़े हो गये हैं ।
और मेरे प्राण के गाहक फन्दे लगाते १२
और मेरी हानि के यत्न करनेहारे दुष्टता की बात बोलते
और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं ।
पर मैं तो बहिरे की नाईं सुनता नहीं १३
और गूंगे के समान हूं जो बोल नहीं सकता ।
मैं ऐसे मनुष्य के सदृश हूं जो कुछ १४ नहीं सुनता
और जिस के मुंह से विवाद की कोई बात नहीं निकलती ।
क्योंकि हे यहोवा मैं ने तेरी ही १५ आशा लगाई है
हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर तू ही मेरी सन्ती उत्तर देवेगा ।
मैं ने कहा ऐसा न हो कि वे मुझ १६ पर आनन्द करें
क्योंकि जब मेरा पांव टल जाता तब वे मुझ पर बड़ाई मारते हैं ।
और मैं तो अब लंगड़ाने ही पर हूं १७
और मैं लगातार पीड़ा ही भोगता रहता हूं ।
मैं तो अपना अधर्म्म खोलके कहूंगा १८
मैं अपने पाप के कारण खेदित रहूंगा ।
पर मेरे शत्रु फुर्तीले और सामर्थी हैं १९
और जो भूल में आके मुझ से बैर रखते हैं सो बहुत हो गये हैं ।
और जो भलाई के पलटे में बुराई २० करते हैं

सो मेरे भलाई के यत्न करने के पलटे
में मुझ से बिरोध ही करते हैं।
२१ हे यहोवा मुझे न छोड़
हे मेरे परमेश्वर मुझ से दूर न रह।
२२ हे यहोवा तू जो मेरा उद्धारकर्त्ता है
सो मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर।

३९ यदूतून् प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद रचित।

१ मैं ने कहा मैं अपनी चालचलन में
चौकसी करूंगा
न हो कि बचन से पाप करूं
जब लों दुष्ट मेरे साम्हने रहे
तब लों मैं मानो ढाठी लगाये अपने
मुंह को बन्द किये रहूंगा।
२ मैं मौन गहके गूंगा बन गया बलिक
भली बात भी न बोला
और इस से मेरी पीड़ा बढ़ती गई।
३ मेरा हृदय जल उठा
मेरे सोचते सोचते आग भड़क उठी
तब मैं बोल उठा कि
४ हे यहोवा मेरा अन्त मुझे जता
अर्थात् मेरे और कितने दिन रह गये हैं
जिस से मैं जान लेऊं कि कैसा अनित्य
हूं।
५ देख तू ने मेरी आयुर्दा को मानो
चौवा भर की किया
बलिक मेरी आयुर्दा तेरी दृष्टि में
मानो कुछ है ही नहीं
सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों
न होवें तौभी वे बुलबुले ठहरे हैं।
सेला।

सचमुच मनुष्य भ्रम की छाया में चलता ६
फिरता है
सचमुच उन की घबराहट ब्यर्थ ही है
वह धन का संचय तो करता है पर
नहीं जानता कि किस के भण्डार
में पड़ेगा।
और अब हे प्रभु मैं किस बात की ७
बाट जोहूं
मेरी आशा तो तेरी ही ओर लगी है।
मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से ८
छुड़ा
मूढ़ जन को मेरी नामधराई न करने
दे।
मैं गूंगा बन गया और मुंह न खोला ९
क्योंकि तू ही ने यह काम किया है।
तू ने जो विपत्ति मुझ पर डाली है १०
उसे दूर कर
मैं तेरे हाथ की मार से मिटने
लगा।
जब तू मनुष्य को अधर्म्म के कारण ११
दपट दपटके ताड़ना देता है
तब तू उस की मनभावनी बस्तुओं का
कीड़े की नाईं नाश करता है
सचमुच सब मनुष्य बुलबुले ठहरे हैं।
सेला।
हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन और १२
मेरी दोहाई पर कान धर
मेरा रोना सुनने से कान न मूंद
क्योंकि मैं अपने सब पुरखाओं के
समान तेरे संग उपरी और परदेशी
होके रहता हूं।

१३ उस से पहिले कि मैं जाता रहूं और
आगे को न रहूं
मुझे तनिक सांस लेने दे कि मेरा मन
हरा हो जावे ।

४०

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद रचित ।

१ मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता
रहा
और उस ने मेरी ओर झुकके मेरी
दोहाई सुनी ।
२ और उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे
और दलदल की कीच में से उबारा
और मुझ को ढांग पर खड़ा करके
मेरे पैरों को दृढ़ किया है ।
३ और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया
सो उसी हमारे परमेश्वर की स्तुति
का गीत है
बहुतेरे यह देखके डरेंगे
और यहोवा पर भरोसा रक्खेंगे ।
४ क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने
यहोवा को अपना आधार माना है
और अभिमानियों और मिथ्या की
ओर फिरनेहारों को नहीं ताकता।
५ हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू ने तो
बहुत से काम किये हैं
जो आश्चर्य्यकर्म्म और कल्पनाएं तू
हमारे लिये करता है सो बहुत सी हैं
उन का कुछ ब्योरा किसी से तेरे
साम्हने दिया नहीं जाता
मैं तो चाहता हूं कि खोल खोलके
उन की चर्चा करूं
पर उन की गिनती कुछ भी नहीं हो
सकती ।
मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न ६
नहीं होता
तू ने मेरे कान मानो खोदके खोले हैं
होमबलि और पापबलि भी तू ने
नहीं चाहा ।
इस लिये मैं ने कहा देख मैं आया हूं ७
क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही
लिखा हुआ है ।
हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी ८
करने से प्रसन्न हूं
और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में
बनी है ।
मैं ने बड़ी सभा में धर्म्म का शुभ ९
समाचार प्रचारा है
देख मैं ने अपना मुंह बन्द नहीं किया
हे यहोवा तू तो इसे जानता है ।
मैं ने तेरा धर्म्म मन ही में नहीं रक्खा १०
मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे किये हुए
उद्धार की चर्चा किई है
मैं ने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी
सभा से गुप्त नहीं रक्खी ।
हे यहोवा तू भी अपनी बड़ी दया ११
मुझ पर से न हटा ले
तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर
मेरी रक्षा होती रहे ।
क्योंकि मैं अनगिनित बुराइयों से घिरा १२
हुआ हूं
मेरे अधर्म्म के कर्म्मों ने मुझे आ पकड़ा
और मैं ऊपर दृष्टि नहीं कर सकता

वे गिनती में मेरे सिर के बालों से
भी अधिक हैं सो मेरे जी में जी
नहीं रहा।
१३ हे यहोवा कृपा करके मुझे छुड़ा
हे यहोवा मेरी सहायता के लिये
फुर्ती कर।
१४ जो मेरे प्राण की खोज में हैं
सो एक साथ लज्जित होवें और उन
के मुंह काले होवें
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं
सो पीछे हटाये और निरादर किये
जावें।
१५ जो मुझ से आहा आहा करते हैं
सो अपने लज्जा के काम के पलटे में
उजड़ जावें।
१६ जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सो सब तेरे कारण
हर्षित और आनन्दित होवें
जो तुझ से उद्धार पाने के अभिलाषी
हैं सो निरन्तर कहते रहें
कि यहोवा की बड़ाई होवे।
१७ और मैं तो दीन और दरिद्र हूं
तौभी हे प्रभु तू मेरी चिन्ता करता
है
तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है
हे मेरे परमेश्वर बिलम्ब न कर।

४१

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद रचित।

१ क्या ही धन्य है वह जो कंगाल की
सुधि रखता है
क्योंकि बिपत्ति के दिन यहोवा उस
को बचावेगा।
यहोवा उस की रक्षा करके उस को २
जीता रक्खेगा और वह पृथिवी
पर भाग्यवान होगा
और हे यहोवा तू उस को शत्रुओं
की इच्छा पर न छोड़।
जब वह व्याधि के मारे सेज पर पड़ा ३
हो तब यहोवा उसे संभालेगा
हे यहोवा तू रोग में उस के सारे
बिछौने को उलटके ठीक करेगा।
मैं ने तो कहा हे यहोवा मुझ पर ४
अनुग्रह कर
मुझ को चंगा कर मैं ने तेरे बिरुद्ध
पाप किया है।
मेरे शत्रु मेरी बुराई मना रहे हैं ५
कि वह कब मरेगा और उस का नाम
कब मिटेगा।
और जब उन में से कोई मुझे देखने ६
आता है तब वह व्यर्थ बातें
बकता है
वह मन में अनर्थ की बातें संचय
करता है
और बाहर जाके गली गली उन की
चर्चा करता फिरता है।
मेरे सब बैरी मिलके मेरे बिरुद्ध काना- ७
फूसी करते हैं
वे मेरे ही बिरुद्ध होके मेरी हानि की
कल्पनाएं करते हैं।
वे कहते हैं कि वह अपनी किसी बद- ८
माशी का फल भोग रहा है
और अब जो वह पड़ा है सो फिर न
उठेगा।

९ बलिक मेरा परम मित्र जिस पर मैं
भरोसा रखता था और वह मेरी
रोटी में से खाता था
उस ने भी मेरे बिरुद्ध लात उठाई है।
१० पर हे यहोवा तू मुझ पर अनुग्रह
करके मुझ को उठा
कि मैं उन को बदला देऊं।
११ मेरा शत्रु जो मुझ पर जय जयकार करने
नहीं पाता
इस से मैं ने जान लिया है कि तू
मुझ से प्रसन्न है।
और मुझे तो तू खराई के मार्ग में १२
सम्भालता
और सदा के लिये अपने सन्मुख स्थिर
करता है।
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा १३
अनादिकाल से अनन्तकाल लों धन्य है
आमेन् फिर आमेन्॥

दूसरा भाग।

४२ प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरह-
बंशियों का मस्कील् नाम स्तोत्र।

१ जैसे हरिणी नदी के जल के लिये
हांफती रहती है
तैसे ही हे परमेश्वर मैं तेरे लिये
हांफता रहता हूं।
२ परमेश्वर जो जीवता ईश्वर है उसी
का मैं प्यासा हूं
मैं कब जाके परमेश्वर को अपना
मुंह दिखाऊंगा।
३ रोटी की सन्ती मेरे मुंह में आंसू ही
जाते हैं
और लोग दिन भर मुझ से कहते
रहते हैं कि तेरा परमेश्वर कहां
रहा।
४ ये बातें स्मरण कर करके मैं शोकसागर
में डूबा जाता हूं
मैं तो भीड़ के संग संग जाया करता था
अर्थात् ऊंचे स्वर के गीत से धन्यबाद
करता हुआ उत्सव करनेहारी
भीड़ के बीच होके परमेश्वर के
भवन लों धूमधाम से जाया करता
था।
हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता ५
और भीतर ही भीतर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह क्योंकि
मैं उस के दर्शन से उद्धार पाके
फिर उस का धन्यबाद करने पाऊंगा।
हे मेरे परमेश्वर मेरा जीव ढया जाता ६
तो है
इस लिये मैं यर्दन के पासवाले देश में
और हेर्मोन् के पहाड़ों और मिस्आर्
की पहाड़ी के पास रहते हुए तुझे
स्मरण करूंगा।
मानो तेरे मेघमुण्डों का शब्द सुनके ७
जल जल को पुकारता है

तेरे सारे तरंगों और ढेवों से मैं डूब
गया हूं।
८ पर दिन को तो यहोवा अपनी शक्ति
और करुणा प्रगट करेगा
और रात को भी उस का गीत मेरे
मुंह से निकलेगा
और मेरे जीवनदाता ईश्वर से मेरी
प्रार्थना होवेगी।
९ मैं ईश्वर से जो मेरी ढांग ठहरा है
कहूंगा कि तू ने मुझे क्यों बिसरा
दिया है
मुझे शत्रु के अन्धेर के मारे क्यों शोक
का पहिरावा पहिने हुए चलना
पड़ता है।
१० मेरे सतानेहारे जो मुझे चिढ़ाते हैं
उस से मानो मेरी हड्डियां कटार
से छिदी जाती हैं
क्योंकि वे दिन भर मुझ से कहते रहते
हैं कि तेरा परमेश्वर कहां रहा।
११ हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता
और भीतर ही भीतर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह क्योंकि
मैं फिर उस का धन्यबाद करने
पाऊंगा
जो मेरे मुख की चमक का कारण और
मेरा परमेश्वर है।

४३

हे मेरे परमेश्वर मेरा न्याय
चुका और अभक्त जाति से
मेरा मुकद्दमा लड़
मुझ को छली और कुटिल पुरुष से
छुड़ा।
क्योंकि हे परमेश्वर तू तो मेरा दृढ़- २
स्थान ठहरा है सो तू ने क्यों मुझे
मन से उतार दिया है
मुझे शत्रु के अन्धेर के मारे शोक का
पहिरावा पहिने हुए क्यों चलना
पड़ता है।
अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को ३
प्रगट कर कि उन से मेरी अगुवाई
होवे
मानो वे मुझ को तेरे पवित्र पर्बत पर
बलिक तेरे निवास में पहुंचावें।
तब हे परमेश्वर तू जो मेरा मगन ४
करनेहारा आनन्दमूल ईश्वर है
मैं तेरी बेदी के पास जाऊंगा
और हे परमेश्वर तू जो मेरा परमेश्वर
है मैं बीणा बजा बजाके तेरा
धन्यबाद करूंगा।
हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता ५
और भीतर ही भीतर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह क्योंकि
मैं फिर उस का धन्यबाद करने
पाऊंगा
जो मेरे मुख की चमक का कारण और
मेरा परमेश्वर है।

४४

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरह-
वंशियों का मस्कील् नाम स्तोत्र।

हे परमेश्वर हमारे बापदादों ने हम १
से बर्णन किया सो हम ने अपने
कानों से सुना
कि तू ने उन के दिनों और प्राचीन-
काल में भी क्या क्या काम किये थे।

२ तू ने तो अपने हाथ से जातियों को निकालके अपनी प्रजा को बसाया
तू ने जाति जाति के लोगों को दुःख दिया और अपने लोगों को फैला दिया ।
३ क्योंकि वे अपनी तलवार के बल से देश के अधिकारी न भये
और न अपने बाहुबल से जयवन्त हो गये
पर तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख ही के कारण वे जयवन्त हुए
क्योंकि तू उन को चाहता था ।
४ हे परमेश्वर तू ही हमारा राजा है
याकूब के उद्धार की आज्ञा दे ।
५ तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को ढकेलके गिरा देंगे
तेरे नाम के प्रताप से हम अपने बिरोधियों को रौंदेंगे ।
६ क्योंकि हम अपने धनुष पर भरोसा न रक्खेंगे
और न अपनी तलवार के बल से बचेंगे ।
७ तू ही हम को द्रोहियों से बचाता
और हमारे बैरियों को लज्जित करता आया है ।
८ हम परमेश्वर पर दिन भर घमण्ड करते हैं
और सदा लों तेरे नाम का धन्यबाद करते रहेंगे । सेला ।
९ पर अब तू ने हम को मन से उतार दिया और हमारा अनादर किया है
और हमारी सेना के साथ पयान नहीं करता ।
तू हम को शत्रु के साम्हने पीछे हटा देता है १०
और हमारे बैरी मनमानते लूट लेते हैं ।
तू हमारा मांस भेड़ों की नाईं औरों को खाने के लिये देता है ११
और हम को अन्यजातियों में तितर बितर करता है ।
तू अपनी प्रजा को सेंतमेंत दे डालता है १२
और उन का कुछ मोल नहीं होता जिस से तू धनी हो जाता ।
तू ऐसा करता है कि हमारे पड़ोसी हमारी नामधराई करते हैं १३
और हमारी चारों ओर के रहनेहारे हम से ठट्ठा और हंसी करते हैं ।
तू हम को ऐसा दुःखी बनाता है कि अन्यजातियां हमारा पटतर देती हैं १४
और जाति जाति के लोग हमारे बिरुद्ध सिर हिलाते हैं ।
दिन भर हमें अनादर सहना पड़ता है १५
और हमारे मुंह पर लज्जा छा गई है ।
इस सब का कारण उस चिढ़ाने और निन्दा करनेहारे का बोल है १६
जो शत्रु होके पलटा लेता है ।
यद्यपि यह सब कुछ हम पर बीता तौभी हम तुझे नहीं भूले १७
न तेरी बाचा के विषय बिश्वासघात किया है ।
हमारा मन पीछे नहीं हटा १८
न हमारे पग तेरी बाट से फिर गये हैं ।

१९ पर तौभी तू ने हमें गीदड़ों के स्थान में ले आके पीस डाला
और हम पर मृत्यु की सी छाया छवा दिई है ।
२० यदि हम तुझ अपने परमेश्वर का नाम भूल जाते
अथवा किसी पराये देवता की ओर अपने हाथ फैलाते ।
२१ तो हे परमेश्वर क्या तू इस का बिचार न करता
तू तो मन की गुप्त बातों को जानता है ।
२२ परन्तु देख हम लोग तेरे ही निमित्त दिन भर मार डाले जाते हैं
और बध होनेहारी भेड़ों की नाईं गिने जाते हैं ।
२३ हे प्रभु उठ क्यों सोता है
जाग हम को अनन्तकाल के लिये मन से न उतार ।
२४ तू क्यों अपना मुख फेर लेता
और हमारे दुःख और अन्धेर को भूल जाता है
२५ हमारा शरीर मिट्टी से लग गया
हमारा पेट भूमि से सट गया है ।
२६ हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा हो
और अपनी करुणा के निमित्त हम को छुड़ा ले ।

४५ प्रधान बजानेहारे के लिये । कोरह-बंशियों का मस्कील् नाम स्तोत्र जो शोशन नाम राग से गाया जावे । प्रेम प्रीति का गीत ।

१ मेरे मन में भली बात उबल रही है
जो कुछ मैं ने राजा के विषय में बनाया है उस को सुनाता हूं
मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी बनी है ।
हे राजा तू अति सुन्दर बल्कि सारे आदमबंशियों में से अधिक सुन्दर है २
तेरे होंठों से अनुग्रह टपकता है
इस कारण परमेश्वर ने तुझे सदा की आशीष दिई है ।
हे बीर अपनी बिभव और प्रतापरूपी तलवार को बान्धके ३
अपनी जांघ पर लटका ।
और अपने प्रताप के साथ घोड़े पर चढ़के ४
सत्यता नम्रता और धार्म्मिकता के निमित्त लड़ने में जयवन्त होवे
और अपने दहिने हाथ से भयानक भयानक काम करता जावे ।
तेरे बाण तो तीक्ष्ण हैं ५
उन के द्वारा जाति जाति के लोग तुझ से जूझ जूझके गिरते हैं
हे राजा तेरे शत्रुओं के हृदय उन से छिदते हैं ।
हे परमेश्वर तेरा सिंहासन अनन्तकाल लों बना रहेगा ६
तेरा राजदण्ड न्याय का है ।
तू ने धर्म्म में प्रीति और दुष्टता से बैर रक्खा है ७
इस कारण परमेश्वर जो तेरा परमेश्वर है उस ने

तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष-
रूपी तेल से चुपड़ा है ।
८ तेरे सारे बस्त्र गन्धरस अगर और तज
से सुगन्धित हैं
तू हाथीदांत के बने मन्दिरों में तार-
वाले बाजों के कारण आनन्दित
हुआ है ।
९ तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजकुमारियां
भी हैं
तेरी दहिनी ओर पटरानी ओपीर्
के कुन्दन से बिभूषित होके खड़ी
है ।
१० हे राजकुमारी सुन और कान लगाके
ध्यान दे
और अपने लोगों और अपने पिता
के घर को भूल जा ।
११ ऐसा करने से राजा तेरी सुन्दरता
से मोहित होवेगा
और वह तो तेरा प्रभु है सो तू उसे
दण्डवत् करना ।
१२ और सोर् की राजकुमारी भी भेंट
लिये हुए उपस्थित होगी
प्रजा में के धनवन्त लोग तुझे प्रसन्न
करने का यत्न करेंगे ।
१३ हे राजा तेरी पटरानी जो राजा की
पुत्री है सो रनवास में पूरी रीति
से शोभायमान है
उस के बस्त्र में सोनहले बूटे कढ़े
हुए हैं ।
१४ वह बूटेदार बस्त्र पहिने हुए तेरे पास
पहुंचाई जावेगी
जो कुमारियां उस की सहेली होके
उस के पीछे पीछे चलती हैं
सो भी तेरे पास पहुंचाई जा-
वेंगी ।
वे आनन्दित और मगन होके पहुंचाई १५
जावेंगी
और तेरे मन्दिर में प्रवेश करेंगी ।
हे राजा तेरे पुरुखाओं की अपेक्षा तेरे १६
पुत्र ही प्रसिद्ध होवेंगे
जिन को तू सारी पृथिवी पर हाकिम
ठहरावेगा ।
मैं पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरे नाम की १७
चर्चा कराऊंगा
इस कारण जाति जाति के लोग
अनन्तकाल लों तेरा धन्यबाद करते
रहेंगे ।

४६

प्रधान बजानेहारे के लिये । कोरह-
बंशियों का गीत जो अलामोत्
नाम राग में गाया जावे ।

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और १
बलमूल ठहरा है
वह ऐसा सहायक है जो संकट में
अति सहज से मिलता है ।
इस कारण हम न डरेंगे चाहे पृथिवी
उलट जावे
और पहाड़ समुद्रों के मध्य में डोल
उठें ।
चाहे समुद्र गरजें और फेनावें
और पहाड़ उन के जल के उछलने के
टक्कर से कांप उठें तौभी न डरेंगे ।
सेला ।

४ एक महानद है जिस की नहरों के कारण परमेश्वर के नगर में
अर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास में आनन्द होता है।
५ परमेश्वर उस नगर के बीच में है सो वह नहीं टलने का
परमेश्वर पह फटते ही उस की सहायता करेगा।
६ अन्यजातियां गरज उठीं राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे
तब वह बोल उठा और पृथिवी पिघल गई।
७ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ ठहरा है। सेला।
८ आओ यहोवा के महाकर्म्म देखो
कि उस ने पृथिवी पर कैसा उजाड़ किया है।
९ वह पृथिवी के छोर तक की लड़ाइयों को मिटाता है
वह धनुष को तोड़ता और भाले को दो टुकड़े करता
और रथों को आग में झोंक देता है।
१० यहोवा कहता है कि रह जाओ और जान लेओ कि परमेश्वर मैं ही हूं
मैं जातियों में महान् होऊंगा बलिक पृथिवी भर में महान् ठहरूंगा।
११ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ ठहरा है। सेला।

४७

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरह-वंशियों का स्तोत्र।

१ हे जाति जाति के सब लोगो तालियां बजाओ
ऊंचे स्वर से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो।
२ क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है
वह सारी पृथिवी के ऊपर महान् राजा है।
३ वह जाति जाति के लोगों को हमारे तले दबाता
और अन्यजातियों को हमारे पांवों के नीचे करता है।
४ वह हम को उत्तम से उत्तम भाग
अर्थात् अपने प्रिय याकूब के घमण्ड करने के योग्य देश देता है। सेला।
५ परमेश्वर जयजयकार के सहित
अर्थात् यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर चढ़ गया है।
६ परमेश्वर का भजन गाओ भजन गाओ
अर्थात् हमारे राजा का भजन गाओ भजन गाओ।
७ क्योंकि परमेश्वर सारी पृथिवी का राजा है
सो समझ बूझके भजन गाओ।
८ परमेश्वर सब जातियों पर राजा ठहरा
परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर बिराजमान हुआ है।

९ राज्य राज्य के रईस इब्राहीम के परमेश्वर की प्रजा होने के लिये एकट्ठे भये हैं
क्योंकि पृथिवी के रक्षक परमेश्वर के अधीन हुए
वह तो अति महान् हुआ है ।

४८ कोरहवंशियों का गीत और स्तोत्र ।

१ यहोवा जो हमारा परमेश्वर है सो अपने पवित्र पर्वत पर बसे हुए नगर में
महान् और स्तुति के अति योग्य है ।
२ सिय्योन् पर्वत खड्डु के उत्तरवाले सिरे पर ऊंचाई में सुन्दर और सारी पृथिवी के हर्ष का कारण
और राजाधिराज की गढ़ी है ।
३ परमेश्वर उस के महलों के बासियों से ऊंचा गढ़ जाना गया है ।
४ देखो राजा लोग एकट्ठे भये
वे एक संग उधर से चले गये ।
५ उन्हों ने आप ही देखा और देखते ही बिस्मित भये
वे भभर गये और उतावली से भागे ।
६ वहीं कंपकपी ने उन को पकड़ा
और जननेहारी स्त्री की सी पीरें उन्हें उठीं ।
७ हे परमेश्वर तू पुरवाई से
तर्शीष के जहाजों को तोड़ डालता है ।
८ जैसा हम ने सुना था तैसा ही हम ने सेनाओं के यहोवा के नगर में
अर्थात् अपने परमेश्वर के नगर में अभी देखा है
और परमेश्वर उस को सदा दृढ़ रक्खेगा । सेला ।
९ हे परमेश्वर हम ने तेरे मन्दिर के भीतर
तेरी करुणा पर ध्यान किया है ।
१० हे परमेश्वर जैसा तेरा नाम प्रसिद्ध है
तैसी ही तेरी स्तुति भी पृथिवी के छोर लों होती है
तू अपने दहिने हाथ से धर्म्म के कर्म्म करता आया है ।
११ तेरे न्यायकर्म्मों के कारण
सिय्योन् पर्वत आनन्द करे
और यहूदा के और और नगरों के लोग मगन होवें ।
१२ सिय्योन् की चारों ओर घूमो और उस की प्रदक्षिणा करो
उस के गुम्मटों को गिन लेओ ।
१३ उस की शहरपनाह
उस के महलों को ध्यान से देखो
जिस्तें तुम आनेहारी पीढ़ी के लोगों से इस बात का बर्णन कर सको ।
१४ क्योंकि यह परमेश्वर अनन्तकाल लों हमारा परमेश्वर रहेगा
वह मृत्युरूपी नदी के पार लों हमारी अगुवाई करेगा ।

४९ प्रधान बजानेहारे के लिये । कोरहवंशियों का स्तोत्र ।

१ हे जाति जाति के सब लोगो यह सुनो
हे संसार के सब निवासियो कान लगाओ ।
क्या ऊंच क्या नीच

क्या धनी क्या दरिद्र तुम सब के सब
चित्त लगाओ।
३ मेरे मुंह से ज्ञान की बातें निकलेंगी
और मेरा मन समझ की बातों में
लगेगा।
४ मैं नीतिवचन की ओर अपना कान
लगाऊंगा
मैं बीणा के संग गा गाके अपने मन
का भेद स्पष्ट बर्णन करूंगा।
५ विपत्ति के दिनों में अर्थात् जब मैं अपने
अड़ंगा मारनेहारों की बुराइयों
से घिरूं
तब मैं क्यों डरूं।
६ जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते
और अपने धन की बहुतायत पर
फूलते हैं।
७ उन में से कोई अपने भाई को किसी
भांति छुड़ा नहीं सकता
न परमेश्वर को उस की सन्ती प्राय-
श्चित्त में कुछ दे सकता है।
८ क्योंकि मनुष्यों के प्राण की छुड़ौती
बहुत अधिक है
यहां लों कि वह कभी प्राप्त न होवेगी।
९ अर्थात् कोई ऐसा नहीं जो अनन्तकाल
लों जीता रहे
वा उस को सड़ने की दशा को न
भोगना पड़े।
१० क्योंकि प्रसिद्ध है कि पण्डित लोग भी
मरते हैं
और वैसे ही मूर्ख और पशु सरीखे
मनुष्य भी नष्ट होते हैं
और अपनी सम्पत्ति औरों के लिये
छोड़ जाते हैं।
वे मन ही मन यह सोचते हैं कि ११
हमारे घर सदा ठहरेंगे
और हमारे निवास पीढ़ी से पीढ़ी
लों बने रहेंगे
इस लिये वे अपनी अपनी भूमि का
नाम अपने ही अपने नाम पर
रखते हैं।
पर मनुष्य जो है सो प्रतिष्ठा पाके भी १२
ठहरने का नहीं
वह तो पशुओं के समान होता है जो
मर मिटते हैं।
मनुष्यों की यह चाल उन की मूर्खता १३
ठहरती है
तौभी जो उन के पीछे आते हैं सो
उन की बात की प्रशंसा करते हैं।
सेला।
वे अधोलोक की मानो भेड़ बकरियां १४
ठहराये गये हैं
उन की चरानेहारी मृत्यु ठहरी
और बिहान को सीधे लोग उन पर
प्रभुता करेंगे
और उन का रूप अधोलोक में मिटता
जावेगा और उस का कोई आधार
न रहेगा।
पर परमेश्वर मुझ को अधोलोक के १५
बश से छुड़ा लेगा
वह तो मुझे रख लेवेगा। सेला।
जब कोई धनी होवे और उस के घर १६
का विभव बढ जावे

तब तू न डरना ।
१७ क्योंकि वह मरने के पीछे कुछ भी न
ले जावेगा
न उस का विभव उस के साथ अधो-
लोक में जावेगा ।
१८ चाहे वह अपने जीते जी अपने आप
को धन्य गिने तौभी परलोक में
उस के साथ विभव न जावेगा
हां जब लों तू अपनी भलाई करता
है तब लों लोग तेरी प्रशंसा तो
करते हैं ।
१९ तौभी तुझे जाके अपने पुरखाओं के
समाज में
जो कभी उजियाला न देखेंगे मिलना
ही पड़ेगा ।
२० मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हो पर
समझ न रक्खे
तो पशुओं के समान है जो मर
मिटते हैं ।

५० आसाप का स्तोत्र ।

१ ईश्वर परमेश्वर जो यहोवा है उस
ने कहा है
और उदयाचल से ले अस्ताचल लों
पृथिवी के निवासियों को बुलाया
है ।
२ सिय्योन् से जो पूर्ण सुन्दरता की
खानि है
परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है ।
३ हमारा परमेश्वर आवेगा और चुप
न रहेगा
उस के आगे आगे आग भस्म करती
आवेगी
और उस की चारों ओर बड़ी आंधी
चलेगी ।
वह अपनी प्रजा का न्याय करनेहारा ४
होके
ऊपर के स्वर्ग को और पृथिवी को
साक्षी करेगा ।
वह यह कहेगा कि मेरे भक्तों को ५
मेरे पास एकट्ठा करो
जिन्हों ने बलिदान चढ़ाके मुझ से
वाचा बांधी है ।
और स्वर्ग उस के धर्म्मी होने की ६
साक्षी देवेगा
परमेश्वर तो आप ही न्यायी होके
बैठा है । सेला ।
सो वह कहेगा कि हे मेरी प्रजा सुन ७
मैं बोलता हूं
हे इस्राएल् सुन मैं तेरे विषय साक्षी
देता हूं
मैं परमेश्वर विशेष करके तेरा ही
परमेश्वर हूं ।
मैं तुझे तेरे मेलबलियों के कारण ८
नहीं डांटता
तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिये
चढ़ते हैं ।
मैं न तो तेरे घर से बैल ९
न तेरे पशुशालों में से बकरे लेऊंगा ।
क्योंकि अरण्य के सारे जीवजन्तु १०
और पहाड़ों पर चरनेहारे हजारों
ग्रामपशु भी मेरे ही हैं ।

११ पहाड़ों के जितने पंछी हैं उन को मैं
जानता हूं
और चौगान में जितने चलते फिरते
हैं सो मेरे ही साम्हने रहते हैं।
१२ सो यदि मैं भूखा होता तो तुझ से
न कहता
क्योंकि जगत और जो कुछ उस में है
सो मेरा ही है।
१३ क्या मैं सांड़ों का मांस खाऊं
अथवा बकरों का लोहू पीऊं।
१४ मुझ परमेश्वर को धन्यबादरूपी
बलिदान चढ़ा
और मुझ परमप्रधान के लिये अपनी
मनौतियां पूरी कर।
१५ और संकट के दिन मुझे पुकारना
मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा
करने पावेगा।
१६ पर दुष्ट से परमेश्वर ने कहा है
तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से
क्या काम
तू मेरी बाचा की चर्चा क्यों करता है।
१७ तू तो शिक्षा से बैर करता
और मेरे बचनों को तुच्छ जाना है।
१८ जब तू ने चोर को देखा तब उस की
संगति से प्रसन्न हुआ
और परस्त्रीगमन में भागी भया।
१९ तू ने अपना मुंह बुराई करने के लिये
खोला
और तेरा मन छल की बातें गढ़ता है।
२० तू बैठा हुआ अपने भाई के बिरुद्ध
बोलता
और अपने सहोदर की चुगली खाता
है।
ये काम तू ने किये और मैं चुप रहा २१
सो तू ने समझ लिया कि परमेश्वर
बिलकुल मेरे ही समान है
पर मैं तुझे डांटूंगा और तेरी आंखों
के साम्हने सब कुछ अलग अलग
करके दिखाऊंगा।
हे ईश्वर के बिसरानेहारो यह बात २२
बिचारो
न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूं और
कोई तुम्हारा छुड़ानेहारा न होवे।
जो धन्यबादरूपी बलिदान चढ़ावे २३
सो मेरी महिमा करने पावेगा
और जो ऐसा करने से मेरा मार्ग
सुधारे उस को मैं अपना किया
हुआ उद्धार दिखाऊंगा।

५१

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का स्तोत्र जो उस ने उस समय रचा जब नातान् नबी उस के पास इस लिये आया कि दाऊद बत्शेबा के पास गया था।

हे परमेश्वर अपनी करुणा के अनुसार १
मुझ पर अनुग्रह कर
अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे
अपराधों को मिटा दे।
मेरा अधर्म्मरूपी मल भली भांति धो दे २
और मेरा पाप छुड़ाके मुझे शुद्ध कर
दे।
देख मैं अपने अपराधों को जानता हूं ३
और मेरा पाप निरन्तर मेरे चित्त में
चढ़ा रहता है।

४ मैं ने केवल तेरे ही बिरुद्ध पाप किया
और जो तेरे लेखे में बुरा है सोई
किया है
यह इस लिये मानता हूं कि तू बोलने
में धर्म्मी
और न्याय करने में निष्कलङ्क ठहरे ।
५ देख मेरे पिण्ड ही में अधर्म्म था
और मैं अपनी माता के गर्भ में पाप-
युक्त ही पड़ा ।
६ देख तू अन्तःकरण की सच्चाई से
प्रसन्न होता है
और मेरे मन में ज्ञान सिखावेगा ।
७ मुझे जूफा के द्वारा पाप छुड़ाके पावन
कर और मैं शुद्ध हो जाऊंगा
मुझे धो और मैं हिम से भी अधिक
श्वेत बनूंगा ।
८ मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना
तो जो हड्डियां तू ने तोड़ डालीं उन
के जुटने से मैं मगन होऊंगा ।
९ अपना मुख मेरे पापों की ओर न कर
और मेरे सारे अधर्म्म के कर्म्मों को
मिटा ।
१० हे परमेश्वर मेरे लिये शुद्ध मन सिरज
और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये
सिरे से उपजा ।
११ मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे
और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से
न ले ले ।
१२ अपने किये हुए उद्धार का हर्ष मुझे
फेर दे
और उदार आत्मा देके मुझे सम्भाल ।

तब मैं अपराधियों को तेरा मार्ग १३
बताऊंगा
और पापी तेरी ओर फिरेंगे ।
हे परमेश्वर तू जो मेरा उद्धारकर्त्ता १४
परमेश्वर है मुझे लोहू बहाने के
पाप से छुड़ा
तब मैं तेरे धर्म्म की चर्चा ऊंचे स्वर
से गा गाके करूंगा ।
हे प्रभु मेरा मुंह खोल १५
तब उस से तेरा गुणानुवाद निकलेगा ।
क्योंकि तू मेलबलि से प्रसन्न नहीं होता १६
नहीं तो मैं देता
होमबलि की भी तू इच्छा नहीं करता ।
परमेश्वर का बलिदान खेदित आत्मा है १७
हे परमेश्वर तू खेदित और पश्चात्ताप
करनेहारे मन को तुच्छ न जानेगा ।
प्रसन्न होके सिय्योन् की भलाई कर १८
यरूशलेम् की शहरपनाहों को तू बना ।
तब तू धर्म्म से चढ़ाये हुए बलिदानों १९
से अर्थात् सर्वाङ्ग पशुओं के होम-
बलि से प्रसन्न होवेगा
तब लोग तेरी बेदी पर बैल चढ़ावेंगे ।

५२ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का मस्कील् नाम स्तोत्र जो उस ने उस समय रचा जब दोएग् एदोमी ने आके शाऊल् से कहा कि दाऊद अहीमेलक् के घर में आया था ।

रे बीर तू बुराई करने पर क्यों बड़ाई १
मारता है
ईश्वर की करुणा तो लगातार बनी
रहती है ।

२ तेरी जीभ माने दुष्टता की कल्पनाएं
करती है
सान धरे हुए छुरे के समान होके वह
छल का काम करती है ।
३ तू ने भलाई से अधिक बुराई में
और धर्म्म की बात से अधिक मिथ्या
ही में प्रीति रक्खी है । सेला ।
४ रे छल की बात बोलनेहारे
तू ने तो ऐसे सब बचनों में प्रीति
रक्खी है जिन से बिनाश होता है ।
५ ईश्वर भी तुझे नष्ट कर देगा और तू
अनन्तकाल लों वैसा ही रहेगा
वह तुझ को पकड़के तेरे डेरे से निकाल
देगा
बल्कि जीवन के लोक से उखाड़
डालेगा । सेला ।
६ तब धर्म्मी लोग देखके डरेंगे
और यह कहके उस पर हंसेंगे ।
७ देखो यह वही पुरुष है जिस ने पर-
मेश्वर को अपना दृढ़स्थान नहीं
माना
पर अपने धन की बहुतायत पर भरोसा
रखता था
और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता था ।
८ पर मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे
जलपाई के वृक्ष के समान हूं
मैं ने परमेश्वर की करुणा पर अनन्त-
काल के लिये भरोसा रक्खा है ।
९ हे परमेश्वर मैं तेरा धन्यबाद सर्बदा
करता रहूंगा इस लिये कि जो कुछ
करना था सो तू ने किया है
और तेरे भक्तों के साथ तेरे नाम
की बाट जोहूंगा क्योंकि वह
उत्तम है ।

५३

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का मस्कील् नाम स्तोत्र जो महलत नाम राग में गाया जावे ।

मूढ़ों ने अपने मन में कहा है कि पर- १
मेश्वर है ही नहीं
वे बिगड़ गये वे कुटिलता करके
घिनौने हो गये
सुकर्म्मी कोई नहीं ।
परमेश्वर ने स्वर्ग से आदमबंशियों २
पर ध्यान से दृष्टि किई
कि देखे कोई बुद्धि से चलता
वा मुझ को पूछता है कि नहीं ।
वे सब के सब हट गये सब एक साथ ३
सड़ गये
कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं ।
क्या अनर्थकारी लोग कुछ ज्ञान नहीं ४
रखते
वे मेरी प्रजा को अपनी रोटी जानके
खा जाते हैं
और परमेश्वर को वे नहीं पुकारते ।
उधर वे भयभीत भये जहां कुछ भय ५
का कारण न था
क्योंकि जो तुझे छावनी करके घेरते
थे उन की हड्डियों को परमेश्वर
ने छितरा दिया है
तू ने उन को लज्जित किया है इस
लिये कि परमेश्वर ने उन्हें निकम्मा
ठहराया है ।

६ आह यदि इस्राएल् का पूरा उद्धार सिय्योन् से निकले तो क्या ही उत्तम होगा
जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बन्धुवाई से लौटा ले आवेगा
तब याकूब मगन और इस्राएल् आनन्दित होवेगा ।

५४ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का मस्कील् नाम स्तोत्र जो तारवाले बाजों के साथ गाया जावे । यह उस समय रचा गया जब जीपी लोगों ने आके शाऊल से कहा क्या दाऊद हमारे बीच मे छिपा नहीं रहता ।

१ हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर
और अपने पराक्रम से मेरा न्याय चुका ।
२ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन
मेरे मुंह के बचनों की ओर कान लगा ।
३ क्योंकि परदेशी लोग मेरे बिरुद्ध उठे
और बलात्कारी लोग जो तुझ परमेश्वर को अपने साम्हने नहीं जानते
सो मेरे प्राण के गाहक हुए हैं । सेला ।
४ देखो परमेश्वर मेरा सहायक है
प्रभु मेरे संभालनेहारों में का है ।
५ वह मेरे द्रोहियों की बुराई उन्हीं पर लौटा देवेगा
हे परमेश्वर अपनी सच्चाई के कारण उन्हें बिध्वंस कर ।
६ मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊंगा
हे यहोवा मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा क्योंकि वह उत्तम है ।
७ और तू ने मुझे सारे कष्ट से छुड़ाया है
और मैं अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट हुआ हूं ।

५५ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का मस्कील् नाम स्तोत्र जो तारवाले बाजों के साथ गायाजावे ।

१ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा
और मेरा गिड़गिड़ाना सुनने से अपने कान को न मून्द ।
२ मेरी ओर ध्यान दके मुझे उत्तर दे
मैं चिन्ता के मारे छटपटाता और हाय हाय करता फिरता हूं ।
३ इस का कारण शत्रु का कोलाहल और दुष्ट जन का उपद्रव है
कि वे मुझ से अनर्थ काम करते
और कोप करके मुझे सताते हैं ।
४ मेरा मन संकट में है
और मृत्यु का भय मुझ में समाया ।
५ भय और कंपकपी ने मुझे पकड़ा
और मेरे रोंए खड़े हो गये हैं ।
६ और मैं ने कहा यदि मेरे कबूतर के से पंख होते
तो मैं उड़ जाता और ठिकाना पाता ।
७ देखो मैं उड़ते उड़ते दूर चला जाता
और बन में बसेरा लेता । सेला ।
८ मैं प्रचण्ड बयार और आंधी के भय से भागके शरण लेता ।

९ हे प्रभु मेरे बैरियों को भस्म कर और
उन की भाषा में गड़बड़ डाल
क्योंकि मैं ने नगर में उपद्रव और
झगड़ा देखा है।
१० रात दिन वे उस की शहरपनाहों पर
चढ़के चारों ओर घूमते हैं
और उस के भीतर अनर्थ काम और
उत्पात होता है।
११ उस के भीतर दुष्टता हो रही है
और अन्धेर और छल उस के चौक से
दूर नहीं होते।
१२ जो मेरी नामधराई करता था सो
पहिले शत्रु न था
नहीं तो मैं इस को सह सकता
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता था सो
पहिले मेरा बैरी न था
नहीं तो मैं उस से छिप जाता।
१३ पर तू ही था जो मेरी बराबरी का
मनुष्य
मेरा परममित्र और मेरा हिला मिला
बन्धु था।
१४ हम आपस में कैसी मीठी मीठी बात
करते थे
हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन
को जाते थे।
१५ मेरे शत्रु उजड़ जावें
वे जीते जी अधोलोक में जावें
क्योंकि उन के बीच अर्थात् उन के
घरों में बुरे ही काम होते हैं।
१६ पर मैं तो परमेश्वर को पुकारूंगा
और यहोवा मेरा उद्धार करेगा।
सांझ को भोर को दो पहर को मैं १७
ध्यान करूंगा और कहरूंगा
और वह मेरी सुनेगा।
जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उस १८
से उस ने मुझे कुशल के साथ बचा
लिया
उन्हों ने तो बड़ी सेना लेके मेरा
साम्हना किया था।
जो अनादिकाल से विराजमान ईश्वर १९
वही सुनके उन को उत्तर देवेगा। सेला।
ये वे ही हैं जिन की दशा कभी बदलती
नहीं
और इस से वे परमेश्वर का भय
नहीं मानते।
मेरे द्रोही ने अपने मेल रखनेहारों २०
पर भी हाथ छोड़ा
उस ने अपनी बाचा को तोड़ दिया
है।
उस के मुंह की बातें तो मक्खन सी २१
चिकनी थीं
पर उस के मन में युद्ध की कल्पना थी
उस के बचन मानो तेल से भी अधिक
चिकने तो थे
पर नंगी तलवार से थे।
हे मन जो भार यहोवा ने तुझ पर २२
रक्खा है सो उसी पर डाल दे तो
वह आप तेरा आधार होवेगा
वह धर्म्मी को कभी टलने न देवेगा।
पर हे परमेश्वर तू उन लोगों को २३
बिनाशरूपी गड़हे में गिरा देगा

हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी
आयुर्दा लों जीते न रहेंगे
पर मैं तुझ पर भरोसा रक्खे रहूंगा।

५६

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का मिक्ताम् नाम स्तोत्र जो योनतेलेम्रहोकीम्' नाम राग में गाया जावे। यह स्तोत्र उस ने उस समय रचा जब पलिश्तियों ने उस को गत् नगर में पकड़ा था।

१ हे परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर
क्योंकि मनुष्य मुझे निगलने चाहते हैं
वे लगातार लड़त हुए मुझ पर अन्धेर
करते हैं।
२ मेरे द्रोही लोग मुझे निगलने को
लगातार चाहते हैं
बहुत से लोग अभिमान करके मुझ
से लड़ते हैं।
३ पर जिस समय मैं डरूं
उसी समय मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा।
४ परमेश्वर की सहायता से मैं उस के
बचन की प्रशंसा कर सकूंगा
परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रक्खा है
सो न डरूंगा
कोई नरतनधारी मेरा क्या कर
सकता है।
५ वे लोग लगातार मेरे बचनों का
उलटा अर्थ लगाते हैं
उन की सारी कल्पनाएं मेरी ही हानि
करने की होती हैं।
६ वे बटुरते और छिपके बैठते हैं
वे आप मेरा पता लगाते हैं
और मेरे प्राण की घात में ताक लगाये
हुए बैठे रहते हैं।
क्या वे अनर्थ काम करके बच भी जावेंगे ७
हे परमेश्वर अपने कोप से जाति
जाति के लोगों को गिरा दे।
मेरे मारे मारे फिरने का वृत्तान्त तू ८
ने लिख रक्खा है
तू मेरे आंसुओं को अपनी कुप्पी में रख
क्या उन की चर्चा तेरी पुस्तक में
नहीं है।
जिस समय मैं पुकारूं उसी समय मेरे ९
शत्रु उलटे फिरेंगे
यह मैं इस कारण जानता हूं कि परमे-
श्वर मेरी ओर है।
परमेश्वर की सहायता से मैं उस के १०
बचन की प्रशंसा कर सकूंगा
अर्थात् यहोवा की सहायता से मैं उस
के बचन की प्रशंसा कर सकूंगा।
मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है ११
सो न डरूंगा
बिनाशी मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।
हे परमेश्वर मैं ने तेरी जो मन्नोतियां १२
मानी हैं उन का भार मुझ पर बना है
मैं प्रतिज्ञा के अनुसार तुझ को धन्य-
बादबलियां चढ़ाऊंगा।
क्योंकि तू ने मुझ को मृत्यु से बचाया है १३
क्या तू मेरे पैरों को भी फिसलने से
न बचावेगा
जिस्तें मैं जीवन के लोक में
तुझ को अपने साम्हने जानके उंजियाले
ही उंजियाले चलूं

(१) अर्थात्. दूरदेशियों को मानों कबूतरी.

५७ प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का मिक्ताम् नाम स्तोत्र जो अलतश्हेत्[1] नाम राग में गाया जावे। यह स्तोत्र उस ने उस समय रचा जब वह शाऊल् से भागके गुफा में छिप गया था।

१ हे परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर मुझ पर अनुग्रह कर
क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं
और जब लों ये बलाएं निकल न जावें
तब लों मैं तेरे पंखों के तले शरण लिये रहूंगा।
२ मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूंगा
उस ईश्वर को जो मेरा कार्य्य सिद्ध करता है दोहाई देऊंगा।
३ ईश्वर स्वर्ग से दूत भेजके मुझे बचा लेगा
जब मेरा निगलनेहारा निन्दा कर रहा हो। सेला।
तब परमेश्वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट करेगा।
४ मेरा प्राण सिंहों के बीच है
मैं लेट जाऊं तो मुझे क्रोध से जलते हुए मनुष्यों के बीच लेटना होगा
अर्थात् ऐसे आदमखोरियों के बीच जिन के दांत मानो बर्छी और बाण हैं
और जिन की जीभ मानो तेज तलवार हैं।
५ हे परमेश्वर स्वर्ग से भी ऊंचा हो
तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर प्रगट होवे।
६ उन लोगों ने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया
मेरा जीव दबा हुआ है
उन्हों ने मेरे लिये गड़हा खोदा
और आप ही उस में गिर पड़े हैं। सेला।
७ हे परमेश्वर मेरा मन स्थिर है मेरा मन स्थिर है
मैं गा गाके स्तुति करूंगा।
८ हे मेरे आत्मा जाग हे सारंगी और बीणा जागो
मैं भी पह फटते जाग उठूंगा।
९ हे प्रभु मैं जाति जाति के लोगों के बीच तेरा धन्यबाद करूंगा
मैं समाज समाज के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊंगा।
१० क्योंकि तेरी करुणा इतनी बड़ी है कि स्वर्ग लों पहुंचती
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है।
११ हे परमेश्वर स्वर्ग से भी ऊंचा हो
तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर प्रगट होवे।

(१) अर्थात्. नाश न कर.

५८ प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का मिक्ताम् नाम स्तोत्र जो अल्-तश्हेत्[1] नाम राग में गाया जावे।

१ हे आदमखोरियो जब तुम को धर्म्म की बात बोलनी चाहिये तब क्या तुम सचमुच चुप लगाये नहीं रहते
क्या तुम सीधाई से न्याय करते हो।
२ सो नहीं बल्कि तुम कुटिल काम मन से करते हो
तुम उपद्रव कर करके उस का फल यत्न से देश भर में बांटते हो।

(१) अर्थात्. नाश न कर.

३ दुष्ट लोग जन्मते ही परमेश्वर को त्यागके बिराने हो जाते
वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं ।
४ उन में सर्प का सा बिष है
वे उस नाग के समान हैं जो सुनने नहीं चाहता ।
५ अर्थात् सपेरों की नहीं सुनता
न उस बाजीगर की जो निपुणता से बाजीगरी करता हो ।
६ हे परमेश्वर उन के मुंह में से दांतों को तोड़
हे यहोवा जवान सिंहों की दाढ़ों को उखाड़ डाल ।
७ वे गलके जल के सदृश होवें जो बहके चला जाता है
जब वे अपने बाण सन्धानें तब बाण मानो दो टुकड़े हो जावें ।
८ वे घोंघे के समान होवें जो गलके बह जाता है
और स्त्री के गिरे हुए गर्भ के सदृश होके उजियाले को कभी न देखें ।
९ उस से पहिले कि उन की हांडियों में कांटों की आंच लगे
परमेश्वर जले बिनजले दोनों को आंधी बनके एकट्ठा उड़ा ले जावेगा ।
१० धर्म्मी ऐसा पलटा देखके आनन्दित होगा
वह अपने पांव दुष्ट जन के लोहू में धोवेगा ।
११ और मनुष्य कहने लगेंगे हां धर्म्मी के लिये फल तो है ही
हां एक परमेश्वर तो है जो पृथिवी पर न्याय करता है ।

५९

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का मिक्ताम् नाम स्तोत्र जो अल्-तश्हेत्[1] नाम राग में गाया जावे । यह स्तोत्र उस ने उस समय रचा जब शाऊल् के भेजे हुए लोगों ने घर का पहरा दिया कि उस को मार डालें ।

हे मेरे परमेश्वर मुझ को शत्रुओं से बचा १
मेरे बिरोधियों के कारण मुझे ऊंचे स्थान पर रख ।
मुझ को अनर्थकारियों से बचा २
और हत्यारों से मेरा उद्धार कर ।
क्योंकि देख वे मेरी घात में लगे हैं ३
बलवन्त लोग मेरे बिरुद्ध बटुरे हैं
हे यहोवा यह मेरे किसी अपराध वा पाप के बिना ही होता है ।
मेरे बिना दोष ही वे दौड़के लड़ने ४
को तैयार हो जाते हैं
सो मुझ से मिलने के लिये जाग उठ और यह हाल देख ।
और हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ५
तू जो इस्राएल् का परमेश्वर है
सो सब अन्यजातिवालों को दण्ड देने के लिये जाग
किसी अनर्थकारी वा बिश्वासघाती पर अनुग्रह न कर । सेला ।
वे लोग सांझ को लौटके कुत्ते की नाईं ६
गुर्राते हैं

(१) अर्थात्. नाश न कर.

और नगर की चारों ओर घूमते हैं।
७ देख वे बिष उगलते हैं
उन की जीभ तलवार है
वे कहते हैं कि हमारी कौन सुनता है।
८ पर हे यहोवा तू उन पर हंसेगा
तू सब अन्यजातिवालों को ठट्ठों में उड़ावेगा।
९ वे तो बड़े बली हैं पर मैं तेरी ओर मन लगाके ताकूंगा
क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा ऊंचा गढ़ ठहरा है।
१० हे मेरे परमेश्वर तू करुणा करता हुआ मुझ से मिलेगा
तू द्रोहियों को दिखाके मुझे सन्तुष्ट कर देवेगा।
११ उन्हें घात न कर न हो कि मेरी प्रजा भूल जावे
पर हे प्रभु तू जो हमारी ढाल ठहरा है
सो अपनी शक्ति से उन्हें छिन्न भिन्न कर और दबा दे।
१२ उन के मुंह से जो पाप के बचन निकलते हैं
उन के कारण वे अभिमान में फंसे हुए पकड़े जावें
और जो स्राप वे देते और जो झूठ वे बोलते हैं सो उन्हीं पर लौट पड़े।
१३ जलजलाहट में आके उन का अन्त कर
उन का अन्त कर दे कि वे आगे को न रहें
तब वे जानेंगे कि परमेश्वर याकूब के देश में
बल्कि पृथिवी के छोर लों भी प्रभुता करता है। सेला।
और सांझ को वे लौटके कुत्ते की नाईं गुर्रावें १४
और नगर की चारों ओर घूमें।
वे टुकड़े के लिये मारे मारे फिरें १५
और यदि तृप्त न होवें तो रात भर वहीं ठहरे रहें।
पर मैं तो तेरे सामर्थ्य का यश गाऊंगा १६
और भोर को तेरी करुणा के विषय ऊंचे स्वर से गाऊंगा
क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़
और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरता आया है।
हे मेरे बलमूल मैं तेरा भजन गाऊंगा १७
क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा ऊंचा गढ़
और मेरा करुणामय परमेश्वर ठहरा है।

६० प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का मिक्ताम् नाम स्तोत्र जो शूशनेदूत[1] नाम राग में गाया जावे। यह स्तोत्र शिक्षादायक है। उस ने यह स्तोत्र उस समय रचा जब वह अरम्नहरैम् और अरम्सोबा के राजाओं से लड़ता था और योआब ने लौटके लोन के खड्ड में एदोमियों में से बारह हजार पुरुष मार लिये।

हे परमेश्वर तू ने हम को मन से १
उतार दिया और हम पर टूट पड़ा है

(१) अर्थात्. साक्षी के सोसन.

तू कोपित तो भया पर अब हम को
ज्यों के त्यों कर दे ।
२ तू ने भूमि को कंपाया और फाड़
डाला है
उस के दरारों को भर दे क्योंकि वह
डगमगा रही है ।
३ तू ने अपनी प्रजा को कठिन दुःख
भुगाया
तू ने हमें मानो लड़खड़ा देनेहारा
दाखमधु पिलाया है ।
४ तू ने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है
कि वह सच्चाई के कारण फहराया
जावे । सेला ।
५ इस लिये कि तेरे प्रिय छुड़ाये जावें
तू अपने दहिने हाथ से बचा और
हम को उत्तर दे ।
६ परमेश्वर जो पवित्र है सो बोला है
इस कारण मैं प्रफुल्लित होके
शकेम् को बांट लूंगा और सुक्कोत् के
खड्ड को नपवा लेऊंगा ।
७ गिलाद् मेरा और मनश्शे भी मेरा
ही है
और एप्रैम् मेरे सिर का टोप
और यहूदा मेरा राजदण्ड ठहरा है ।
८ मोआब् मानो मेरे धोने धाने का
पात्र है
मैं एदोम् पर अपना जूता फेंकूंगा
हे पलिश्तियो मेरे ही कारण जय-
जयकार करो ।
९ कौन मुझे उस गढ़वाले नगर में पहुं-
चावेगा
फिर एदोम् लों मेरी अगुवाई किस
ने किई है ।
हे परमेश्वर तू जिस ने हम को मन १०
से उतार दिया
और हे परमेश्वर तू जो हमारी सेना
के साथ पयान नहीं करता क्या तू
ही ने हमारी अगुवाई नहीं किई ।
हमारी सहायता करके द्रोहियों से ११
छुड़ा
क्योंकि मनुष्यों से जो छुटकारा होता
है सो व्यर्थ ही है ।
परमेश्वर से शक्ति पाके हम वीरता १२
दिखावेंगे
क्योंकि हमारे द्रोहियों को वही
रौंदेगा ।

६१

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र जो तारवाले बाजे के साथ गाया जावे ।

हे परमेश्वर मेरा चिल्लाना सुन १
मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे ।
जब मैं पृथिवी के छोर पर मूर्छा खाने २
लगूं तब तुझे पुकारूंगा
जो चटान मुझ से ऊंची है उस पर
मुझ को ले चल ।
क्योंकि तू मेरा शरणस्थान ठहरा है ३
और शत्रु से बचने के लिये दृढ़ गुम्मट
बना है ।
मैं तेरे तम्बू में पाहुन की नाईं युगान- ४
युग रहूंगा
मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिये
रहूंगा । सेला ।

५ क्योंकि हे परमेश्वर तू ने मेरी मनौ-
तियां सुनीं
तू ने मुझे वह भाग दिया जो तेरे नाम
के सब डरवैयों को मिलता है।
६ तू राजा की आयुर्दा को बहुत
बढ़ावेगा
उस की उमर पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी
रहेगी।
७ हे परमेश्वर वह तेरे सन्मुख सदा
बिराजमान रहेगा
अपनी करुणा और सच्चाई को उस
की रक्षा के लिये ठहरा रख।
८ तब मैं अनन्तकाल लों तेरे नाम का
भजन गाता रहूंगा
और इस भान्ति अपनी मनौतियां
दिन दिन पूरी किया करूंगा।

६२

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का स्तोत्र जो यदूतून को सौंपा जावे।

१ सचमुच परमेश्वर ही की ओर मेरा
मन मौन धरे हुए लगा है
मेरा उद्धार उसी से होवेगा।
२ सचमुच वही मेरी चटान और मेरा
उद्धारकर्त्ता ठहरा
वह मेरा ऊंचा गढ़ है सो मैं बहुत
न डिगूंगा।
३ तुम कब लों एक पुरुष पर धावा
करते रहोगे
जिस्तें सब मिलके उस का घात करो
वह तो झुकी हुई भीत वा गिरते हुए
बाड़े के समान है।

सचमुच वे यही सम्मति करते हैं कि ४
उस को उस के ऊंचे पद से ढकेल के
गिरा दें
वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं
मुंह से तो वे आशीर्वाद देते पर
अन्तःकरण में कोसते हैं। सेला।
हे मेरे मन मौन धरे हुए परमेश्वर ५
ही की ओर लगा रह
क्योंकि मेरी आशा उसी से है।
सचमुच वही मेरी चटान और मेरा ६
उद्धारकर्त्ता ठहरा है
वह मेरा ऊंचा गढ़ है सो मैं न डिगूंगा।
मेरे उद्धार और मेरी महिमा का ७
कारण परमेश्वर ही है
परमेश्वर ही मेरी दृढ़ चटान और
मेरा शरणस्थान ठहरा है।
हे मेरी प्रजा के लोगो हर समय उस ८
पर भरोसा रक्खो
उस से अपने अपने मन की बात
खोलके कहो
क्योंकि परमेश्वर हमारा शरणस्थान
ठहरा है। सेला।
सचमुच नीच लोग बुलबुले हैं और ९
ऊंच लोग निरे मिथ्या ही हैं
तौल में वे हलके ठहरते हैं
वे सब के सब बुलबुले से भी अधिक
हलके हैं।
अन्धेर करने पर भरोसा मत रक्खो १०
और लूटपाट कर करके मत फूलो
चाहे धन सम्पत्ति यों ही बढ़े तौभी
उस पर मन न लगाना।

११ परमेश्वर ने एक बार क्या
बलिक दो बार कहा और मैं ने
सुना है
कि सामर्थ्य परमेश्वर ही का है ।
१२ और हे प्रभु करुणा भी तेरी ही है
क्योंकि तू एक एक जन को उस के
कर्म्म के अनुसार बदला देता है ।

६३

दाऊद का स्तोत्र जो उस ने उस समय रचा जब वह यहूदा के बन में था ।

१ हे परमेश्वर तू मेरा ईश्वर है मैं तड़के
तुझे ढूंढूंगा
सूखी और बिकल करनेहारी भूमि
पर
मेरा मन तेरा प्यासा है मेरा शरीर
तेरा अति अभिलाषी है ।
२ इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में
तुझ को ताका था
जिस्तें तेरे सामर्थ्य और महिमा के
चिन्ह निहारूं ।
३ क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी
उत्तम है
सो मैं तेरी प्रशंसा करूंगा ।
४ इस प्रकार से मैं जीवन भर तुझे धन्य
कहता रहूंगा
और तेरा नाम ले लेके अपने हाथ
उठाया करूंगा ।
५ मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने
भोजन से तृप्त होवेगा
और ऊंचे स्वर से गा गाके तेरी स्तुति
करूंगा ।
जब मैं बिछौने पर पड़ा पड़ा तेरा ६
स्मरण करता रहूंगा
तब रात के एक एक पहर में तुझ पर
ध्यान करता रहूंगा ।
क्योंकि तू मेरा सहायक बना है ७
सो मैं तेरे पंखों की छाया में आनन्द
के मारे ऊंचे स्वर से गाऊंगा ।
मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता ८
है
और मुझे तो तू अपने दहिने हाथ
से थांभ रखता है ।
पर वे जो मेरे प्राण के खोजी हैं ९
सो पृथिवी के नीचे स्थानों में जावेंगे ।
वे तलवार से मारे जावेंगे १०
और गीदड़ों का आहार हो जावेंगे ।
पर राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित ११
होवेगा
जो कोई ईश्वर की किरिया खावे सो
घमण्ड करने पावेगा
और मिथ्यावादियों का मुंह बन्द
किया जावेगा ।

६४

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र ।

हे परमेश्वर जब मैं दोहाई दूं तब १
मेरी सुन
शत्रु के भय के कारण मेरे प्राण की
रक्षा कर ।
कुकर्म्मियों की गोष्ठी से मेरी आड़ हो २
अनर्थकारियों के हुल्लड़ से बचा ले ।
उन्हों ने अपनी जीभ को तलवार की ३
नाईं तेज किया

और अपने कड़ुवे बचनों के बाणों को
सन्धाना है।
४ किस लिये कि वे छिपके खरे को मारें
बलिक वे निडर होके उस को अचानक
में मारते हैं।
५ वे बुरे कार्य्य करने को हियाव बांधते हैं
और आपस में चर्चा करते हैं कि हम
क्योंकर फन्दे लगावें
और कहते हैं कि हम को कौन देखेगा।
६ वे कुटिलता की युक्तियां खोज खोजके
निकालते और कहते हैं कि हम ने
एक पक्की युक्ति खोजके निकाली है
और उन में से किसी के अन्तःकरण
का मर्म जाना नहीं जाता।
७ परन्तु परमेश्वर उन्हें बाण से अकस्मात्
मारेगा
तब उन के मार खाने की बारी
आवेगी।
८ सो वे अपने ही बचनों के कारण ठोकर
खाके गिर पड़ेंगे
जितने उन पर दृष्टि करेंगे सो सब
अपने अपने सिर हिलावेंगे।
९ बलिक सारे मनुष्य भय खावेंगे
और परमेश्वर के कर्म्म का बखान
करेंगे
और उस के काम को मन लगाके
सोचेंगे।
१० धर्म्मी लोग यहोवा के शरणागत होके
उस के कारण आनन्दित होवेंगे
और सब सीधे मनवाले उस पर घमण्ड
करेंगे।

६५

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का गीत और स्तोत्र।

हे परमेश्वर सिय्योन् में स्तुति करनेहारे १
तेरी आशा लगाये हुए मौन रहते हैं
और तेरे लिये मनौतियां पूरी किई
जावेंगी।
हे प्रार्थना के सुननेहारे २
सारे नरतनधारी तेरे ही पास आवेंगे।
हम अपने भान्ति भान्ति के अधर्म्म ३
के कर्म्मों के बोझ से दबे हुए हैं
पर हमारे अपराध जो हैं उन का तू
प्रायश्चित्त स्वीकार करेगा।
क्या ही धन्य है वह जन जिस को तू ४
चुनके अपने समीप रक्खे
कि वह तेरे आंगनों में बास करे
हम तेरे भवन अर्थात् तेरे पवित्र
मन्दिर के
उत्तम उत्तम पदार्थों से तृप्त होवेंगे।
हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर ५
तू जो पृथिवी के सब दूर दूर देशों
और दूर के समुद्र पर के भी रहने-
हारों का आधार है
तू हम को भयानक और धर्म्ममय कर्मों
के द्वारा उत्तर देवेगा।
तू पराक्रम का फेंटा कसे हुए ६
अपने सामर्थ्य से पर्वतों को स्थिर
करता है।
तू समुद्रों का महाशब्द उन के तरङ्गों ७
का महाशब्द
और जाति जाति का कोलाहल थांभ
देता है।

८ सो दूर दूर देशों के रहनेहारे तेरे
चिन्ह देखके डर गये हैं
तू उदयाचल और अस्ताचल की ओर
से ऊंचे स्वर का गीत गवाता है ।
९ तू भूमि की सुधि लेके उस को सींचता
है
तू उस को बहुत फलदायक करता है
हे परमेश्वर तेरी नहर जल से भरी
रहती है
तू अन्न के लिये तो पृथिवी को और
मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार
करता है ।
१० तू पानी बरसाके कियारियों की
नालियों को भली भांति सींचता
और बन्धी हुई कियारियों को बैठाता
है
तू पृथिवी को मेंह से नरम करता
और उस की उपज पर आशीष
देता है ।
११ सारा बरस तो तेरी भलाई से परि-
पूर्ण रहता है और अब तू ने उस
पर मानो मुकुट धर दिया है
जहां जहां तू पांव धरे तहां तहां
उत्तम उत्तम पदार्थ उपजते हैं ।
१२ उन के कारण बन की चराइयां लह-
लहाती हैं
और पहाड़ियां मानो हर्ष का फेंटा
कसे हुए रहती हैं ।
१३ चराइयां भेड़ बकरियों से भर गईं
और खड्ड अन्न से ढंप गये
वे जयजयकार करते और गाते भी हैं ।

६६

प्रधान बजानेहारे के लिये । गीत
और स्तोत्र ।

हे सारी पृथिवी के लोगो परमेश्वर १
के लिये जयजयकार करो ।
उस के नाम की महिमा का भजन २
गाओ
उस की स्तुति करते हुए उस की
महिमा की चर्चा करो ।
परमेश्वर से कहो कि तू अपने कामों ३
के हेतु क्या ही भययोग्य है
तेरे महासामर्थ्य के हेतु तेरे शत्रुओं
को बरबस तुझ से दबना पड़ेगा ।
सारी पृथिवी के लोग तुझे दण्डवत् ४
करेंगे
और तेरा भजन गावेंगे
वे तेरे नाम का भजन गावेंगे । सेला ।
आओ परमेश्वर के महाकर्म्मों को देखो ५
वह अपने कार्य्यों के हेतु आदमवंशियों
को भययोग्य देख पड़ता है ।
उस ने समुद्र को सूखी भूमि कर ६
डाला
हमारे पुरखा महानद में से पांव पांव
उतर गये
उस स्थान के विषय चित्त लगाके हम
परमेश्वर के कारण आनन्दित
होवें ।
वह अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता ७
करता है
और अपनी आंखों से जातियों को
ताकता है
हठीले अपने सिर न उठावें । सेला ।

८ हे जाति जाति के लोगो हमारे परमेश्वर को धन्य कहो
और उस की स्तुति ऊंचे शब्द से करो।
९ वही है जो हम को जीवता रखता है
और हमारे पांव को टलने नहीं देता।
१० क्योंकि हे परमेश्वर तू ने हम को जांचा
तू ने हमें चांदी की नाईं ताया था।
११ तू ने हम को जाल में फंसाया
और हमारी कटि पर भारी बोझ बांधा था।
१२ तू ने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया
हम आग और जल में पैठाये गये तो थे
पर अब तू ने हम को इन सब कष्टों से उबारके प्रफुल्लित किया है।
१३ मैं होमबलि लेके तेरे भवन में आऊंगा
मैं अपनी उन मनौतियों को तेरे लिये पूरी करूंगा।
१४ जो मैं ने मुंह खोलके मानीं
और संकट के समय कही थीं।
१५ मैं तुझे मोटे पशुओं के होमबलि
मेंढ़ों की चर्बी के धूप समेत चढ़ाऊंगा
मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊंगा। सेला।
१६ हे परमेश्वर के सब डरवैयो आओ और सुनो
मैं बर्णन करूंगा कि उस ने मेरे लिये क्या क्या किया है।
१७ मैं ने उसी को पुकारा
और उस का गुणानुबाद मुझ से हुआ।
१८ यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता
तो प्रभु मेरी न सुनता।
१९ परन्तु परमेश्वर ने सुना है
उस ने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है।
२० धन्य है परमेश्वर
जिस ने मुझ से न तो प्रार्थना करने की शक्ति न अपनी करुणा दूर कर दिई है।

६७

प्रधान बजानेहारे के लिये। गीत और स्तोत्र जो तारवाले बाजों के साथ गाया जावे।

१ परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हम को आशीष देवे
वह हम को अपना प्रसन्न मुख दिखाता रहे। सेला।
२ जिस्तें तेरी गति पृथिवी पर
और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जावे।
३ हे परमेश्वर जाति जाति के लोग तेरा धन्यबाद करें
जाति जाति के सब लोग तेरा धन्यबाद करें।
४ जातियां आनन्द करें और ऊंचे शब्द से गावें
क्योंकि तू सब लोगों का न्याय धर्म्म से करेगा
और पृथिवी पर की सब जातियों की अगुवाई करेगा। सेला।
५ हे परमेश्वर जाति जाति के लोग तेरा धन्यबाद करें
जाति जाति के सब लोग तेरा धन्यबाद करें।

६ भूमि की उपज तो मिल गई है
परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है सो
हमें आशीष देवेगा ।
७ परमेश्वर हम को आशीष देगा
तब पृथिवी के दूर दूर देशों के सारे
लोग उस का भय मानेंगे ।

६८

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का गीत और स्तोत्र ।

१ परमेश्वर उठे उस के शत्रु छिन्नभिन्न
होवें
और उस के बैरी उस के साम्हने से
भाग जावें ।
२ जैसा धूंआं मिट जाता है तैसे ही
परमेश्वर उन को मिटा देवे
जैसा मोम आग की आंच से गल
जाता है
तैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर के प्रताप
से गल जावें ।
३ और धर्म्मी आनन्दित होवें वे परमे-
श्वर के साम्हने प्रफुल्लित होवें
वे आनन्द में मगन होवें ।
४ परमेश्वर का गीत गाओ उस के नाम
का भजन गाओ
जो निर्जल स्थानों में रथ पर चढ़ा
हुआ जाता है उस के लिये सड़क
बनाओ
उस का नाम याह् है सो तुम उस के
साम्हने प्रफुल्लित होओ ।
५ परमेश्वर अपने पवित्र धाम में
अपमूओं का पिता और बिधवाओं
का न्यायी है ।

परमेश्वर अनाथों का घर बसाके बढ़ाता ६
और बंधुओं को छुड़ाके भाग्यवन्त
करता है
पर हठीलों को निर्जल देश में रहना
पड़ता है ।
हे परमेश्वर जब तू अपनी प्रजा के ७
आगे आगे पयान करता था
अर्थात् निर्जल भूमि में यात्रा करता
था । सेला ।
तब पृथिवी कांप उठी ८
और आकाश तेरे साम्हने टपकने लगा
उधर सीनै पर्वत भी हे इस्राएल् के
परमेश्वर तेरे साम्हने कांप उठा ।
हे परमेश्वर तू ने बहुत से दान मानो ९
बरसाये
तेरा निज भाग तो बहुत सूखा था पर
तू ने उस को हरा भरा किया है ।
तेरा झुंड उस में बसने लगा १०
हे परमेश्वर तू ने अपनी भलाई की
भरपूरी से दीन जन के लिये बन्दो-
बस्त किया है ।
जब प्रभु वचन प्रचार करता है ११
तब शुभ समाचार सुनानेहारियों की
बड़ी सेना हो जाती है ।
सेना सेना समेत राजा भागे चले १२
जाते हैं
और गृहस्थिन लूट को बांट लेती
हैं ।
क्या तुम भेड़शालों के बीच लेट जाओगे १३
और ऐसी कबूतरी के सदृश होओगे
जिस के पंख रूपे से

और फीके रंग के सोने से मढ़े हुए
होवें।
१४ जब सर्वशक्तिमान् ने हमारे देश में
राजाओं को छिन्नभिन्न किया
तब ऐसा देख पड़ा मानो सल्मोन्
पर्वत पर हिम पड़ा।
१५ बाशान् का पहाड़ परमेश्वर के योग्य
तो है
बाशान् का पहाड़ बहुत शिखरवाला
पहाड़ तो है।
१६ पर हे शिखरवाले पहाड़ो तुम क्यों
उस पर्वत को घूरते हो
जिसे परमेश्वर ने अपने बास के लिये
चाहा है
बलिक यहोवा वहां अनन्तकाल लों
निश्चय बास करता रहेगा।
१७ परमेश्वर के रथ हजारों बलिक हजारों
हजार हैं
प्रभु उन के बीच है
वह जैसे सीनै पर था तैसे ही सिय्योन्
के पवित्र स्थान में भी है।
१८ तू ऊंचे पर चढ़ा जो बन्धुवे थे उन को
तू अपनी बन्धुवाई में ले गया
तू ने मनुष्यों में से बलिक हठीले मनुष्यों
में से भी भेंटें लिईं
जिस्तें याह् परमेश्वर उन में बास
करे।
१९ धन्य है प्रभु जो दिन दिन हमारा
बोझ उठाता है
वही हमारा उद्धारकर्त्ता ईश्वर है। सेला।

वही हमारे लिये बचानेहारा ईश्वर २०
ठहरा
बलिक यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचा
सकता है।
निश्चय परमेश्वर अपने शत्रुओं के २१
सिर पर
और जो अधर्म्म ही के मार्ग पर चलता
रहता है उस के बाल भरे चोण्डे
पर मार मारके उसे चूर करेगा।
प्रभु ने कहा है कि मैं उन्हें बाशान् से २२
बलिक गहिरे सागर के तले से भी फेर
ले आऊंगा।
जिस्तें हे मेरी प्रजा के लोगो तुम अपने २३
पांव को लोहू में डुबोओ
और तुम्हारे शत्रुओं का लोहू तुम्हारे
कुत्तों का भाग ठहरे।
हे परमेश्वर तेरी गति देखी गई २४
हे मेरे ईश्वर हे मेरे राजा पवित्रस्थान
में तेरी गति दिखाई दिई है।
गानेहारे आगे आगे गये तारवाले २५
बाजों के बजानेहारे पीछे पीछे गये
चारों ओर कुमारियां डफ बजाती थीं।
सभाओं में परमेश्वर का धन्यबाद करो २६
हे इस्राएल्रूपी मूल से निकले हुए
लोगो प्रभु को सराहो।
उस भीड़ में छोटा बिन्यामीन् है जो २७
उन पर प्रभुता करता है
वहां यहूदा के हाकिम अपने अनुचरों
समेत हैं
वहां जबूलून् और नप्ताली के भी
हाकिम हैं।

२८ हे इस्राएल् तेरे परमेश्वर ने आज्ञा
दिई कि तुझे सामर्थ्य मिले
सो हे परमेश्वर जो कुछ तू ने हमारे
लिये किया है उसे दृढ़ कर ।
२९ तेरे उस मन्दिर के कारण जो यरूशलेम्
में पर्ब्बत के ऊपर बना है
राजा लोग तेरे लिये भेंट ले आवेंगे ।
३० नरकटों में रहनेहारे बनपशु सरीखों
को घुड़क
सांड़ सरीखों के झुण्ड को और बछड़े
सरीखे साधारण लोगों को डांट
जिस्तें वे सब चांदी के टुकड़े लिये हुए
साष्टाङ्ग प्रणाम करें
जो जातियां युद्ध से प्रसन्न रहती हैं
उन को ईश्वर ने तितर बितर
किया है ।
३१ मिस्र से रईस आवेंगे
कूश्निवासी अपने हाथों को परमेश्वर
की ओर फुर्ती से फैलावेंगे ।
३२ हे पृथिवी पर के राज्य राज्य के लोगो
परमेश्वर का गीत गाओ ।
प्रभु का भजन गाओ । सेला ।
३३ जो सारे स्वर्गों के ऊपरवाले सनातन
स्वर्ग में रथ पर चढ़ा हुआ चलता
है उस का भजन गाओ
वह अपनी वाणी सुनाता है सुनो वह
गम्भीर वाणी है ।
३४ परमेश्वर के सामर्थ्य की चर्चा
करो
उस का प्रताप इस्राएल् पर छाया
हुआ है
और उस का सामर्थ्य आकाशमण्डल
से प्रगट होता है ।
हे परमेश्वर तू अपने पवित्र स्थानों में ३५
भययोग्य देख पड़ता है
इस्राएल् का ईश्वर जो है सो अपनी
प्रजा को सामर्थ्य और शक्ति देता है
परमेश्वर धन्य है ।

६९

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र जो सोसन[1] नाम राग में गाया जावे ।

हे परमेश्वर मेरा उद्धार कर १
क्योंकि जल मेरी नाक लों पहुंच गया
है ।
मैं बड़े दलदल में धसा जाता हूं और २
मेरे पैर कहीं नहीं रुकते
मैं गहिरे जल में आ गया अर्थात्
धारा में डूबा जाता हूं ।
मैं पुकारते पुकारते थक गया मेरा ३
गला सूख गया है
अपने परमेश्वर की बाट जोहते जोहते
मेरी आंखें रह गई हैं ।
जो अकारण मेरे बैरी हैं सो गिनती में ४
मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं
मेरे बिध्वंस करनेहारे जो भूल में
आके मुझ से शत्रुता रखते हैं सो
सामर्थी हैं
सो जो मैं ने लूट न लिया था वह
भी मुझी को देना पड़ा ।
हे परमेश्वर तू तो मेरी मूढ़ता को ५
जानता है

(१) अर्थात्, पुष्पविशेष.

और मेरे दोष तुझ से गुप्त नहीं हैं।
६ हे प्रभु हे सेनाओं के यहोवा जो तेरी बाट जोहते हैं सो मेरे कारण लज्जित न होवें
हे इस्राएल् के परमेश्वर जो तुझे ढूंढ़ते हैं उन का मुंह मेरे कारण काला न होवे।
७ क्योंकि मैं ने निन्दा तेरे ही कारण सही है
मेरा मुंह तेरे ही हेतु लज्जा से ढंपा है।
८ मैं अपने भाइयों के लेखे बिराना भया
और अपने सहोदरों की दृष्टि में ऊपरी ठहरा हूं।
९ क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते जलते भस्म भया
और जो तेरी निन्दा करते हैं उन की किई हुई निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है।
१० जब मैं रो रोके और उपवास कर करके दुःख उठाता था
तब उस से मेरी नामधराई ही भई।
११ और जब मैं टाट का वस्त्र पहिने था
तब मेरा पटतर देते थे।
१२ जो फाटक के पास बैठते हैं सो मेरे विषय बातचीत करते हैं
और जो मदिरा पीये हुए हैं सो मुझ पर लगता हुआ गीत गाते हैं।
१३ पर हे यहोवा मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के समय में होती है
हे परमेश्वर अपनी करुणा की बहुतायत से
हे सत्यवादी अपनी बचाने की प्रतिज्ञा के अनुसार मुझे उत्तर दे।
मुझ को दलदल में से उबार कि मैं धस न जाऊं १४
मैं अपने बैरीरूपी गहिरी नदी में डूबने से बच निकलूं।
मैं जल की धारा में डूब न जाऊं १५
और न मैं गहिरे सागर में डूब मरूं
और मैं जो कूंए में पड़ा हूं इस से उस का मुंह बन्द न होवे।
हे यहोवा मुझे उत्तर दे क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है १६
अपनी दया की बहुतायत के अनुसार मेरी ओर फिर।
और मुझ अपने दास से अपना मुंह फेरे न रह १७
क्योंकि मैं संकट में हूं सो मुझे फुर्ती से उत्तर दे।
मेरे निकट आके मुझे छुड़ा ले १८
मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे।
मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर को तू जानता है १९
मेरे सब द्रोही तेरे सन्मुख हैं।
मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया और मेरा रोग असाध्य है २०
और मैं तरस खानेहारों की बाट जोहता रहा पर कोई न आया
और शान्ति देनेहारे ढूंढ़ता रहा पर कोई न मिला।

२१ और लोगों ने मेरे खाने के लिये बिष दिया
और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया ।
२२ सो उन के सुख के समय उन का भोजन उन के फंसाने के लिये फन्दा बने ।
२३ उन की आंखें पर अन्धेरा छा जावे कि वे देख न सकें
और तू उन की कटि को निरन्तर कंपाता रह ।
२४ उन के ऊपर अपना रोष भड़का
और तेरे कोप की आंच उन को लगे ।
२५ उन की छावनी उजड़ जावे
उन के डेरें में कोई न रहे ।
२६ क्योंकि जिस को तू ने मारा वे उस के पीछे पड़े हैं
और जिन को तू ने घायल किया वे उन की पीड़ा की चर्चा करते हैं ।
२७ उन के अधर्म्म पर और अधर्म्म बढ़ा
और उन को अपनी धार्म्मिकता में भागी न होने दे ।
२८ उन का नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जावे
और धर्म्मियें के संग लिखा न जावे ।
२९ पर मैं तो दुःखी और पीड़ित हूं
सो हे परमेश्वर तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊंचे स्थान पर बैठा ।
३० तब मैं गीत गा गाके तेरे नाम की स्तुति करूंगा
और धन्यबाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूंगा ।
और हे यहोवा यह तुझ को बछड़े से अधिक ३१
बल्कि सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक भावेगा ।
नम्र लोग इसे देखके आनन्दित होवेंगे ३२
हे परमेश्वर के पास आनेहारो तुम्हारा मन हरा हो जावे ।
क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान ३३
लगाता
और अपने बंधुओं को तुच्छ नहीं जानता ।
स्वर्ग और पृथिवी उस की स्तुति करें ३४
सारे समुद्र अपने सब जीव जन्तुओं समेत उस को सराहें ।
क्योंकि परमेश्वर सिय्योन् का उद्धार ३५
करेगा और यहूदा के नगरें को फेर बसावेगा
और लोग फिर वहां बसके सिय्योन् के अधिकारी हो जावेंगे ।
अर्थात् उस के दासों के बंश उस स्थान ३६
को अपने भाग में पावेंगे
और उस के नाम के प्रेमी उस में बास करेंगे ।

७०

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद रचित स्मरण करानेहारा स्तोत्र ।

हे परमेश्वर मुझे छुड़ाने के लिये १
शीघ्र आ
हे यहोवा मेरी सहायता करने को फुर्ती कर ।
जो मेरे प्राण के खोजी हैं २
सो लज्जित होवें और उन के मुंह काले हों

जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं
उन को पीछे हटना पड़े और वे निरा-
दर किये जावें ।
३ जो कहते हैं कि आहा आहा
सो अपने लज्जा के काम के पलटे में
उलटे फेरे जावें ।
४ जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सो सब तेरे
कारण हर्षित और आनन्दित होवें
और जो तुझ से उद्धार पाने के अभि-
लाषी हैं सो निरन्तर कहते रहें
कि परमेश्वर की बड़ाई होवे ।
५ मैं तो दीन और दरिद्र हूं
सो हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर
तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है
सो हे यहोवा बिलम्ब न कर ।

७१

हे यहोवा मैं तेरा ही शरणागत हूं
मुझे कभी लज्जित होना न पड़े ।
२ तू जो धर्म्मी है इस कारण मुझे छुड़ा
और उबार
मेरी ओर कान लगा और मेरा उद्धार
कर ।
३ चटान में का मेरा ऐसा धाम बन
जिस में मैं नित्य जा सकूं
तू ने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दिई है
क्योंकि तू मेरी ढांग और मेरा अगम्य
स्थान ठहरा हैं ।
४ हे मेरे परमेश्वर मुझे दुष्ट के हाथ से
बचा
कुटिल और क्रूर मनुष्य के पंजे से मेरी
रक्षा कर ।

क्योंकि हे प्रभु यहोवा मैं तेरी ही ५
बाट जोहता आया हूं
बचपन से ले आज लों मेरा आधार
तू ही है ।
मैं गर्भ से निकलते ही तुझी से सम्भाला ६
गया
मुझे मा की कोख से तू ही ने निकाला
सो मैं नित्य तेरी ही स्तुति करता
रहूंगा ।
मैं बहुतों के लिये मानो चमत्कार बना ७
हूं
पर तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है ।
मेरे मुंह से तेरा गुणानुवाद ८
और दिन भर तेरी शोभा का बर्णन
बहुतायत से हुआ करे ।
बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर ९
जब मेरा बल घटे तब मुझ को छोड़
न दे ।
क्योंकि मेरे शत्रु जो मेरे प्राण की ताक १०
में रहते हैं
सो आपस में यह सम्मति करते हैं
कि
परमेश्वर ने तो उस को छोड़ दिया है ११
सो हम उस का पीछा करके उसे पकड़
लें क्योंकि उस का कोई छुड़ानेहारा
नहीं ।
हे परमेश्वर मुझ से दूर न रह १२
हे मेरे परमेश्वर मेरी सहायता के
लिये फुर्ती कर ।
जो मेरे प्राण के बिरोधी हैं सो लज्जित १३
हों और उन का अन्त हो जावे

जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं सो
नामधराई और अनादर में गड़
जावें ।
१४ मैं तो निरन्तर आशा लगाये रहूंगा
और तेरी स्तुति अधिक अधिक करता
जाऊंगा ।
१५ मैं अपने मुंह से तेरे धर्म्म का
और दिन भर तेरे किये हुए उद्धार
का बर्णन करता रहूंगा
पर उन का पूरा ब्योरा मुझ से दिया
नहीं जाता ।
१६ मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कार्य्यों
का बर्णन करता हुआ आऊंगा
मैं केवल तेरे ही धर्म्म की चर्चा किया
करूंगा ।
१७ हे परमेश्वर तू तो मुझ को बचपन
ही से सिखाता आया है
और अब लों मैं तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का
प्रचार करता आया हूं ।
१८ सो हे परमेश्वर अब बाल पकने अर्थात्
बुढ़ापे के समय में मुझे न छोड़
जब लों मैं इस पीढ़ी के लोगों के
साम्हने तेरे बाहुबल का
और दूसरी पीढ़ी में सब उत्पन्न
होनेहारों के साम्हने तेरे पराक्रम
का प्रचार न करूं तब लों मुझे
न तज ।
१९ और हे परमेश्वर तेरे धर्म्म की चर्चा
तो ऊर्द्धलोक लों पहुंची है
तू ने महाकार्य्य किये हैं
सो हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है ।
तू ने तो हम को बहुत से कठिन २०
कठिन कष्ट भुगवाये हैं
पर अब फिरके हम को जिलावेगा
और हमें जो गड़हे में पड़े हैं उबार
लेगा ।
तू मेरी बड़ाई को बढ़ावेगा २१
और फिरके मुझे शान्ति देवेगा ।
सो हे मेरे परमेश्वर २२
मैं भी तेरे विशेष करके तेरी सच्चाई
के धन्यबाद का गीत सारंगी बजा
बजाके गाऊंगा
हे इस्राएल् के पवित्र ईश्वर मैं बीणा
बजा बजाके तेरा भजन गाऊंगा ।
जब मैं तेरा भजन गाऊंगा तब मैं २३
ऊंचे स्वर से गीत गाऊंगा।
और मेरा प्राण जो तू ने बचा लिया
है उस से भी तेरी स्तुति होवेगी ।
और मैं तेरे धर्म्म की चर्चा दिन भर २४
करता रहूंगा
क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी
थे सो लज्जित हुए और उन के
मुंह काले हो गये हैं ।

७२ सुलैमान रचित ।

हे परमेश्वर राजा को अपने न्यायबचन १
अर्थात् राजपुत्र को अपना धर्म्म सिखा ।
तब वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म्म से २
और तेरे दीन जनों का न्याय ठीक
ठीक चुकावेगा ।
पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के ३
लिये

धर्म्म के द्वारा शान्ति मिला करेगी।
४ वह प्रजा में के दीन लोगों का न्याय
करेगा
और दरिद्र लोगों को बचावेगा
और अन्धेर करनेहारे को चूर करेगा।
५ इस कारण जितने दिन लों सूर्य्य और
चन्द्रमा बने रहेंगे तब लों
लोग पीढ़ी पीढ़ी तेरा भय मानते
रहेंगे।
६ उस राजा का उदय होना ऐसा सुख-
दायक होगा जैसा घास की खूंटी
पर मेंह का बरसना होता है
वह झड़ियों की नाईं भूमि को सींचेगा।
७ उस के दिनों में धर्म्मी लोग फूलें
फलेंगे
और जितने दिन लों चन्द्रमा बना
रहेगा तब लों शान्ति बहुतायत
से रहेगी।
८ और वह समुद्र से समुद्र लों
और महानद से पृथिवी के पच्छिमी
छोर लों प्रभुता करेगा।
९ उस के साम्हने बन के रहनेहारे
घुटने टेकेंगे
और उस के शत्रु उस का तलुवा
चाटेंगे।
१० तर्शीश् और द्वीप द्वीप के राजा भेंट
ले आवेंगे
शबा और सबा दोनों देशों के राजा
कर पहुंचावेंगे।
११ बल्कि सारे राजा उस को दण्डवत्
करेंगे
और सब जातियां उस की अधीनता
अंगीकार करेंगी।
क्योंकि वह दोहाई देनेहारे दरिद्रों १२
को उबारेगा
और दुःखी और असहाय मनुष्य को
बचावेगा।
वह कंगाल और दरिद्र पर तरस १३
खावेगा
और दरिद्रों के प्राण को बचावेगा।
वह उन के प्राण को अन्धेर और १४
उपद्रव से छुड़ा लेगा
और उन का लोहू उस की दृष्टि में
अनमोल ठहरेगा।
वह तो जीता रहेगा और शबा के १५
सुवर्ण में से उस को दिया जावेगा
लोग उस के लिये नित्य प्रार्थना
करेंगे
और दिन भर उस को धन्य कहते
रहेंगे।
देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत १६
सा अन्न होवेगा
उस की बालें लबानोन् के देवदारुओं
की नाईं झूमेंगी
और नगर के लोग घास की नाईं
लहलहावेंगे।
उस का नाम सदा बना रहेगा १७
अर्थात् जितने दिन लों सूर्य्य चमकता
रहेगा तब लों उस का नाम नित्य
नया होता रहेगा
और लोग अपने को उस के कारण
धन्य गिनेंगे

सारी जातियां उस को भाग्यवन्त कहेंगी ।
१८ यहोवा परमेश्वर जो इस्राएल् का परमेश्वर है सो धन्य है
क्योंकि आश्चर्य्यकर्म्म केवल वही करता है ।
और उस का महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा १९
और सारी पृथिवी उस की महिमा से परिपूर्ण होवेगी
आमेन् फिर आमेन् ।
यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त भईं ॥ २०

तीसरा भाग ।

७३ आसाप् का स्तोत्र ।

१ सचमुच इस्राएल् के अर्थात् शुद्ध मनवालों के लिये
परमेश्वर भला ही है ।
२ पर मेरे पांव तो टला चाहते थे
मेरे पग फिसल जाने ही पर थे ।
३ क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था
तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था ।
४ क्योंकि उन को कोई काल की सी पीड़ा नहीं होती
बलिक उन का बल टूट रहता है ।
५ उन को और मनुष्यों की नाईं कष्ट नहीं होता
और और मनुष्यों के समान उन पर बिपत्ति नहीं पड़ती ।
६ इस कारण अहंकार उन के गले का हार बना
उन का उपद्रव ही ओढ़ना है ।
उन की आंखें मोटाई के कारण घुसी हुई हैं ७
उन के मन की भावनाएं किसी का रोक नहीं मानतीं ।
वे ठट्ठा मारते और दुष्टता से अन्धेर की बात बोलते हैं ८
वे डींग हांकते हैं ।
वे स्वर्ग के विमुख हुए हैं ९
और बड़ा बोल पृथिवी भर में बोलते फिरते हैं ।
वे कहते हैं कि भला वह अपनी प्रजा के लोगों को इधर लौटा ले आवे १०
और वे सुख का प्याला पूरा पूरा पी लेवें ।
फिर वे कहते हैं कि ईश्वर कैसे जानेगा ११
क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है ।
देखो ये तो दुष्ट लोग हैं १२
और तौभी सदा सुभागी हो होके धन सम्पत्ति बटोरते रहते हैं ।
पर मैं ने जो अपने हृदय को शुद्ध किया १३

और अपने हाथों को निर्दोषतारूपी
जल में धोया है सो सब व्यर्थ है।
१४ क्योंकि मैं दिन दिन मार खाता
आया हूं
और भोर भोर को मेरी ताड़ना होती
आई है।
१५ पर यदि मैं ऐसा ही कहना ठानता
तो क्या होता कि मुझ से तेरे लड़कों
के समाज का बिश्वासघात हो
जाता।
१६ और जब मैं इस बात को समझने के
लिये सोचने लगा
तब वह मेरी दृष्टि में अति कठिन
ठहरी।
१७ पर अन्त में मैं ने ईश्वर के पवित्रस्थान
में जाके
उन लोगों के परिणाम को बिचारा।
१८ तब क्या प्रगट हुआ कि तू उन्हें फिसलहे
स्थानों में रखता
और गिराके सत्यानाश कर देता है।
१९ अहा वे क्षण भर में कैसे उजड़ गये हैं
वे मिट गये वे भभरते भभरते नष्ट
हो गये हैं।
२० जैसे स्वप्न देखनेहारा जागके स्वप्न को
तुच्छ जानता है
तैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा तब
उन के झूठे धूम धाम को तुच्छ
जानेगा।
२१ बात यह है कि मेरा मन चिड़चिड़ा
हो गया
मेरा अन्तःकरण छिद गया था।
और मैं तो पशु सरीखा होके समझता २२
न था
मैं तेरे संग रहके भी पशु बन गया
था।
तौभी मैं निरन्तर तेरे संग ही था २३
तू ने मेरे दहिने हाथ को पकड़ रक्खा
था।
अब तू सम्मति देता हुआ मेरी अगु- २४
वाई करेगा
और पीछे मुझ को अपने पास रखके
मेरी महिमा बढ़ावेगा।
तुझे छोड़ स्वर्ग में मेरा और कौन २५
है
और तेरे संग रहते हुए मैं पृथिवी
पर भी कुछ नहीं चाहता।
मेरे तन और मन दोनों तो हार २६
गये हैं
परन्तु हे परमेश्वर तू सर्वदा के लिये
मेरा भाग और मेरे मन का आधार
बना है।
प्रगट है कि जो तुझ से दूर रहते हैं २७
सो नष्ट होवेंगे
जो कोई तुझे छोड़के व्यभिचारिन का
सा पाप करता है उस को तू
बिध्वंस करता है।
पर मेरा भला तो तेरे समीप रहने २८
ही में है
हे प्रभु यहोवा मैं ने तुझ को अपना
शरणस्थान माना है
जिस्तें तेरे सब कार्य्यों का वर्णन कर
सकूं।

७४ आसाफ का मस्कील नाम स्तोत्र ।

१ हे परमेश्वर तू ने हमें क्यों मानो अनन्तकाल के लिये मन से उतार दिया है
तेरी कोपाग्नि का धूआं हमारे बिरुद्ध जो मानो तेरी चराई की भेड़ हैं क्यों उठ रहा है ।
२ अपनी मण्डली को जिसे तू ने प्राचीनकाल में मोल लिया था स्मरण कर
तू ने तो उसे अपनी निज भागरूपी प्रजा होने के लिये छुड़ा लिया था
इसी सिय्योन् पर्वत पर तू ने बास किया था सो इसे भी स्मरण कर ।
३ ढेर दिन के उजाड़ों के देखने को पधार
क्योंकि शत्रु ने पवित्रस्थान में सब कुछ बिगाड़ दिया है ।
४ तेरे द्रोही तेरे सभास्थान के बीच गरजे
उन्हों ने अपनी ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया ।
५ उन में से एक एक जन ऐसा देख पड़ा
कि मानो घने बन पर कुल्हाड़ा उठा रहा है ।
६ और अब उन्हों ने उस भवन की नक्काशी को
कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से एक ही बार तोड़ तोड़के
७ तेरे पवित्रस्थान को आग में झोंक दिया
और तेरे नाम के निवास को गिराके अशुद्ध कर डाला है ।
उन्हों ने अपने मन में कहा है कि हम उन लोगों को एक ही बार दबा देवें ८
उन्हों ने हमारे देश में ईश्वर के सब सभास्थानों को फूंक दिया है ।
हमारे बीच में ईश्वर के रहने के चिन्ह कुछ देख नहीं पड़ते ९
अब कोई नबी नहीं रहा
न हमारे बीच इस बात का कोई जाननेहारा है कि यह दशा कब लों रहेगी ।
हे परमेश्वर द्रोही कब लों चिढ़ाता रहेगा १०
क्या शत्रु तेरे नाम का तिरस्कार अनन्तकाल लों करता रहेगा ।
तू अपना दहिना हाथ क्यों खींचे रहता है ११
उसे अपनी छाती पर से उठाके शत्रुओं का अन्त कर दे ।
हे परमेश्वर तू ही प्राचीनकाल से मेरा राजा है १२
तू पृथिवी पर उद्धार के कार्य्य करता आया है ।
तू ही ने अपनी शक्ति से समुद्र को दो भाग किया १३
तू ने जल में मगरमच्छों के सिरों को फोड़ दिया है ।
तू ही ने लिव्यातानों के सिरों को टुकड़े टुकड़े किया १४
और उन्हें बनचरों को खिला दिया ।
तू ही ने चटान फाड़ी और सोता खोलके जल की धारा बहाई १५

तू ही ने बारहमासी महानदों को
सुखा डाला।
१६ दिन तेरा है रात भी तेरी ही है
और चन्द्रमा को तू ही ने स्थिर
किया है।
१७ तू ही ने पृथिवी के सब सिवानों को
ठहराया
धूपकाल और जाड़ा तू ही ने ठह-
राया है।
१८ हे यहोवा स्मरण कर कि शत्रु ने तुझे
चिढ़ाया
और मूढ़ लोगों ने तेरे नाम का
तिरस्कार किया है।
१९ अपनी पिण्डुकी के प्राण को बनपशु
के बश में न कर दे
अपने दीन जनों को अनन्तकाल के
लिये न बिसरा।
२० अपनी बाचा का स्मरण कर
क्योंकि पृथिवी के अंधेरे देश अन्धेर
के स्थानों से भरपूर हैं।
२१ पिसे हुए जन को निरादर होके
लौटना न पड़े
दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की
स्तुति करने पावें।
२२ हे परमेश्वर खड़ा होके अपना मुकद्दमा
आप ही लड़
मूढ़ से जो तेरी नामधराई दिन भर
होती रहती है सो स्मरण कर।
२३ अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल
क्योंकि तेरे बिरोधियों का कोलाहल
निरन्तर उठता रहता है।

७५

प्रधान बजानेहारे के लिये। आसाप् का गीत और स्तोत्र जो अल्तशहेत[1] नाम राग में गाया जाये।

हे परमेश्वर हम तेरा धन्यबाद करते १
हम तेरा धन्यबाद करते हैं क्योंकि
तेरा नाम प्रगट हुआ है
तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का बर्णन हो रहा
है।
तू ने कहा है कि जब ठीक समय २
आवेगा
तब मैं आप ही ठीक ठीक न्याय
करूंगा।
पृथिवी अपने सब रहनेहारों समेत ३
गल चली है
उस के खंभों को मैं ही थांभे हूं। सेला।
मैं ने घमंडियों से कहा कि घमण्ड ४
मत करो
और दुष्टों से कि अहंकार का सींग
मत उठाओ।
अपने सींग ऊपर मत उठाओ ५
न सिर उठाके ढिठाई की बात
बोलो।
क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न ६
पच्छिम से
और न बन की ओर से आती है।
परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है ७
वह एक को घटाता और दूसरे को
बढ़ाता है।
यहोवा के हाथ में एक कटोरा है ८
जिस में का दाखमधु फेना रहा है

(१) अर्थात् नाश न कर.

उस कटोरे में मसाला भी मिला हुआ
है और वह उस में से बहाता है
निश्चय उस की तलछट को भी पृथिवी
के सब दुष्ट लोग पूरा पूरा पी लेंगे।
९ पर मैं तो सदा इस का प्रचार करता
रहूंगा
मैं याकूब के परमेश्वर का भजन
गाऊंगा ।
१० और दुष्टों के सब सींगों को मैं काट
डालूंगा
पर धर्म्मी के सींग ऊंचे किये जावेंगे।

७६

प्रधान बजानेहारे के लिये । आसाप् का गीत और स्तोत्र जो तार-वाले बाजों के साथ गाया जाय ।

१ परमेश्वर यहूदा में जाना गया है
उस का नाम इस्राएल् में महान्
भया है ।
२ और उस का मण्डप शालेम् में
और उस का धाम सिय्योन् पर है ।
३ वहां उस ने अग्निबाणों को
और ढाल और तलवार निदान लड़ाई
के सारे सामान को खण्ड खण्ड
किया है । सेला ।
४ हे परमेश्वर तू तो ज्योतिमय है
तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक
प्रतापी है ।
५ दृढ़ मनवाले लुट गये और महानिद्रा
में सो गये
और शूरवीरों में से किसी के हाथ
न चले ।
६ हे याकूब के परमेश्वर तेरी घुड़की से
रथी और घोड़ा दोनों घोर निद्रा
में पड़े ।
केवल तू ही भययोग्य है ७
और जब तू कोप करने लगे तब तेरे
साम्हने कौन खड़ा रह सकेगा ।
हे परमेश्वर जब तू न्याय करने को ८
और पृथिवी के सब नम्र लोगों का
उद्धार करने को उठा । सेला ।
तब तू ने स्वर्ग से निर्णय का वचन सुनाया ९
और पृथिवी सुनके डर गई और चुप
रही ।
निश्चय मनुष्य की जलजलाहट से अन्त १०
में तेरे धन्यवाद ही करने का कारण
निकलेगा
और उसी जलजलाहट में से जो कुछ
बाकी रहे उस को तू तलवार की नाईं
मानो अपनी कटि में बांध लेवेगा।
हे इस्राएलियो अपने परमेश्वर यहोवा ११
की मनौतियां मानो और पूरी
भी करो
वह जो भय के योग्य है सो उस के
आस पास के सब रहनेहारे भी
कर ले आवें ।
वह तो प्रधानों का अभिमान मिटा देगा १२
वह पृथिवी के राजाओं को भययोग्य
जान पड़ता है ।

७७

प्रधान बजानेहारे के लिये। आसाप् का स्तोत्र जो यदूतून् को सौंपा जावे ।

मैं परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाके १
देता हूं

मैं परमेश्वर की दोहाई देता हूं और
वह मेरी ओर कान लगाता है ।
२ संकट के दिन मैं प्रभु के पास गया
रात को मेरा हाथ फैला रहा और
ढीला न हुआ
मुझ को शान्ति आई ही नहीं ।
३ मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके
कहरता हूं
मैं चिन्ता करते करते मूर्छित हो चला
हूं । सेला ।
४ तू मेरी पलकें लगने नहीं देता
मैं ऐसा घबराया हूं कि मेरे मुंह से
बात नहीं निकलती ।
५ मैं ने प्राचीनकाल के दिनों को
और युगानयुग के बरसों को सोचा
है ।
६ मैं रात्रि समय अपने गीत को स्मरण
करता
और मन में ध्यान करता हूं
और जीव में भली भांति बिचार
करता हूं ।
७ सो मैं पूछता हूं क्या प्रभु अपनों को
युगानयुग मन से उतारे रहेगा
और फिर कभी प्रसन्न न होवेगा ।
८ क्या उस की करुणा अनन्तकाल के
लिये लोप हो गई
क्या उस का बचन सारी पीढ़ियों के
लिये निष्फल हो गया है ।
९ क्या ईश्वर अनुग्रह करने को भूल गया
क्या उस ने कोप करके अपनी सारी
दया को रोक रक्खा है । सेला ।

पर मैं ने कहा सो नहीं ऐसा सोचना १०
तो मेरी दुर्बलता ही का फल है
पर अहा परमप्रधान के दहिने हाथ
के बरस बहुत ही हैं ।
सो हे याह् मैं तेरे महाकार्य्यों की ११
चर्चा करूंगा
निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत
कार्य्यों को स्मरण करूंगा ।
मैं तेरे सब कर्म्मों पर ध्यान करूंगा १२
और तेरे महाकार्य्यों को सोचूंगा ।
हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है १३
हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन देवता
बड़ा है ।
अद्भुत कार्य्य करनेहारा ईश्वर तू १४
ही है
तू ने जाति जाति के लोगों को अपनी
शक्ति प्रगट किई है ।
तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा को १५
अर्थात् याकूब और यूसुफ के बंश को
छुड़ा लिया । सेला ।
हे परमेश्वर जलनिधि ने तुझे देखा १६
जल को तुझे देखने से मानो पीरें उठीं
गहिरा सागर भी व्याकुल भया ।
मेघों से बड़ी वृष्टि होने लगी १७
आकाशमण्डल से शब्द हुआ
फिर तेरे बिजलीरूपी बाण इधर
उधर उड़े ।
बवण्डर में तेरे गरजने का शब्द सुन १८
पड़ा
जगत बिजली से प्रकाशित भया
पृथिवी कांपी और हिल उठी ।

१९ तेरा मार्ग समुद्र में
और तेरी बाट महाजलनिधि में थी
और तेरे पांवों के चिन्ह देख न पड़े ।
२० तू ने मूसा और हारून के द्वारा
भेड़ों की नाईं अपनी प्रजा की अगुवाई
किई ।

७८ आसाप् का मस्कील् नाम स्तोत्र ।

१ हे मेरी प्रजा मेरी शिक्षा सुन
मेरे बचनों की ओर कान लगा ।
२ मैं अपना मुंह नीतिबचन कहने के
लिये खोलूंगा
मैं प्राचीनकालवाली गुप्त अर्थ की बातें
कहूंगा ।
३ जिन बातों को हम ने सुना और
जान लिया
और हमारे बापदादों ने हम से बर्णन
किया है ।
४ उन्हें हम अपने भाईबन्धुओं से गुप्त न
रक्खेंगे
पर होनेहारी पीढ़ी के लोगों से
यहोवा का गुणानुबाद और उस के
सामर्थ्य और आश्चर्य्यकर्म्मों का
बर्णन करेंगे ।
५ उस ने तो याकूब में एक चितौनी का
बचन ठहराया
और इस्राएल् में एक व्यवस्था चलाई थी
उन के विषय उस ने हमारे पितरों
को आज्ञा दिई थी
कि तुम इन्हें अपने अपने लड़केबालों
को बताना ।
इस लिये कि आनेहारी पीढ़ी के लोग ६
अर्थात् जो लड़केबाले उत्पन्न होने-
हारे हैं सो उन्हें जानें
और अपने अपने लड़केबालों से उन
का बखान करने में उद्यत होवें ।
और इस का मतलब यह है कि उन ७
के लड़केबाले भी परमेश्वर का
आसरा करें
और ईश्वर के महाकार्य्यों को भूल
न जावें
बलिक उस की आज्ञाओं को पालते
रहें ।
और अपने पितरों के समान न होवें ८
क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले
और दंगइत थे
जिन्हों ने अपना मन स्थिर न किया
था
न उन का आत्मा ईश्वर की ओर
निष्कपट ठहरा ।
एप्रैमूवंशियों ने तो शस्त्रधारी और ९
धनुर्धारी होने पर भी
युद्ध के दिन पीठ फेरी ।
उन्हों ने परमेश्वर के संग बन्धी हुई १०
बाचा को न पाला
और न उस की व्यवस्था पर चलने
चाहा ।
पर उस के महाकार्य्यों को और जो ११
आश्चर्य्यकर्म्म उस ने उन के साम्हने
किये थे
उन को बिसरा दिया ।
उस ने तो उन के बापदादों के सन्मुख १२

मिस्र देश के सोअन्वाले चैागान में
अद्भुत कर्म्म किये थे ।
१३ उस ने समुद्र को दो भाग करके उन्हें
पार कर दिया
और जल को ढेर की नाईं खड़ा कर
दिया ।
१४ और उस ने दिन को तो बादल से
और रात भर अग्नि के प्रकाश के द्वारा
उन की अगुवाई किई ।
१५ वह बन में चटानें फाड़ फाड़के
उन को माना जलनिधि से मनमानते
पिलाता था ।
१६ बलिक उस ने ढांग से भी धाराएं
निकालीं
और जल महानदों का सा बहाया ।
१७ तौभी वे फिर उस के बिरुद्ध अधिक
पाप करते गये
और निर्जल देश में परमप्रधान के
विरुद्ध उठते रहे ।
१८ और जिह्वास्वाद के लिये भोजन
मांगने से
मन ही मन ईश्वर की परीक्षा
किई ।
१९ बलिक वे परमेश्वर के बिरुद्ध बोलने
भी लगे
और कहने लगे क्या ईश्वर बन में
मेज लगा सकता है ।
२० हां उस ने चटान पर तो मारा तब
जल बह निकला
बलिक धाराएं उमगड चलीं
पर क्या वह रोटी भी दे सकता है
क्या वह अपनी प्रजा के लिये मांस
का भी बन्दोबस्त कर सकता है ।
यह सुनके यहोवा रोष से भर गया २१
सो याकूबबंशियों के बीच आग लगी
और इस्राएल् के बिरुद्ध कोप भड़का ।
इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर पर २२
बिश्वास न रक्खा
न उस की उद्धार करने की शक्ति पर
भरोसा किया ।
तौभी उस ने आकाशमण्डल को आज्ञा २३
दिई
और स्वर्ग के द्वारों को खोला ।
और उन के लिये खाने को मान् २४
बरसाया
और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया ।
एक एक जन को शूरबीरों के योग्य २५
रोटी मिली
उस ने उन को मनमानते भोजन दिया ।
उस ने आकाश में पुरवाई को चलाया २६
और अपनी शक्ति से दखिनहिया
बहाई ।
और उन के लिये मांस धूलि की नाईं २७
बेपरिमाण बरसाया
और समुद्र की बालू के किनकों के
समान अनगिनित पंछी भेजे ।
और उन्हें उन की छावनी के बीच २८
अर्थात् उन के निवासों की चारों ओर
गिराया ।
सो वे खाके अति तृप्त भये २९
और परमेश्वर ने उन की कामना
पूरी किई ।

३० उन की तृष्णा न मरी थी
बलिक उन का भोजन उन के मुंह ही
में था ।
३१ कि परमेश्वर का कोप उन पर भड़का
और उस ने उन के हृष्टपुष्टों को घात
किया
और इस्राएल् के बड़े बड़े वीरों को
गिरा दिया ।
३२ इतने पर भी वे और अधिक पाप
करते गये
और परमेश्वर के आश्चर्य्य कर्म्मों की
प्रतीति न किई ।
३३ सो उस ने उन के दिनों को व्यर्थ
श्रम में
और उन के बरसों को भभर में
कटवाया ।
३४ जब जब वह उन्हें घात करने लगा
तब तब वे उस के पास जाने लगे
और फिरके ईश्वर को यत्न से खोजने
लगे ।
३५ और उन को स्मरण हुआ कि परमे-
श्वर हमारी चटान ठहरा है
और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ाने-
हारा है ।
३६ पर उन्हों ने यह जानके भी उस के
साम्हने चापलूसी किई
और उस को झूठ मूठ बचन दिया ।
३७ क्योंकि उन का हृदय उस की ओर
निष्कपट न था
न वे उस की बान्धी हुई बाचा के
विषय सच्चे थे ।

पर वह जो दयासागर है सो उन के ३८
अधर्म्म का प्रायश्चित्त स्वीकार कर
करके उन्हें नष्ट न करता था
बलिक बार बार अपने कोप को ठण्ढा
करता
और अपनी जलजलाहट को पूरी
रीति से भड़कने न देता था ।
और सोचता था कि ये तो मिट्टी के ३९
पुतले हैं
ये वायु की नाईं हैं जो चली जाती
और लौट नहीं आती ।
हाय वे कितनी ही बार बन में उस ४०
से बिगड़ गये
और निर्जल देश में उस को उदास
किया ।
वे फिर फिर ईश्वर की परीक्षा करते ४१
अर्थात् इस्राएल् के पवित्र ईश्वर की
शक्ति की मानो सीमा बांधते थे ।
उन्हों ने न उस का भुजबल स्मरण ४२
किया
न वह दिन जब उस ने उन को द्रोही
के बश से छुड़ाया था ।
अर्थात् उस ने क्योंकर अपने चिन्ह ४३
मिस्र में और अपने चमत्कार
सोअन् के चौगान में किये थे ।
उस ने तो वहां की नहरों को लोहू ४४
बना डाला था
यहां लों कि मिस्री लोग अपनी नदियों
का जल पी न सके ।
उस ने उन के बीच डंश भेजे जिन्हों ने ४५
उन्हें काट खाया

और मेण्ढक भी भेजे जिन्हों ने उन
का बिगाड़ किया था ।
४६ और उस ने उन की भूमि की उपज
कीड़ों को
और उन की खेतीबारी टिड्डियों को
खिला दिया था ।
४७ उस ने उन की दाखलताओं को ओलों
से मारा
और उन के गूलरों को बड़े बड़े पत्थर
बरसाके नष्ट किया था ।
४८ उस ने उन के पशुओं को ओलों से
और उन के ढोर को बिजलियों से
खपवा दिया था ।
४९ उस ने उन के ऊपर अपना प्रचण्ड
कोप क्रोध और रोष भड़काया
और उन्हें संकट में डाला
और दुखदाई दूतों का दल उन के
बिरुद्ध भेजा था ।
५० उस ने अपने कोप भड़काने का मानो
मार्ग सुधारा
और उन के प्राण को मृत्यु से न बचाया
पर उन को मरी के बश कर दिया
था ।
५१ और मिस्र में के सब पहिलैाठों को
मारा
अर्थात् हामूबंशियों के पौरुष के पहिले
पहिले फल को नष्ट किया था ।
५२ पर उस ने अपनी प्रजा को भेड़ बकरियों
की नाईं पयान कराया
अर्थात् बन में पशुओं के झुण्ड की
सी उन की अगुवाई किई ।
सो वे उस के चलाने से बेखटके चले ५३
और उन को कुछ भय न हुआ
पर उन के शत्रु समुद्र में डूब गये ।
और उस ने उन को अपने पवित्र देश ५४
के सिवाने लों पहुंचाया
अर्थात् इसी पहाड़ी देश में ले आया
जो उस ने अपने दहिने हाथ से
प्राप्त किया था ।
और उस ने उन के साम्हने से अन्य- ५५
जातियों को दुर्दुराके निकाल दिया
और उन की भूमि को डोरी से माप
मापके एक एक का भाग बांट दिया
और इस्राएल् के गोत्र गोत्र के लोगों को
अन्यजातियों के डेरों में बसाया ।
तौभी उन्हों ने परमप्रधान परमेश्वर ५६
की परीक्षा किई और उस से
बिगड़ गये
और उस की चितौनियों का पालन
न किया ।
पर उस का पीछा छोड़के अपने ५७
पुरखाओं की नाईं बिश्वासघात
किया
उन्हों ने निकम्मे धनुष की नाईं धोखा
दिया ।
और उन्हों ने परमेश्वर को पूजा के ५८
ऊंचे स्थान बनाके रिस दिलाई
और खुदी हुई मूर्त्तियां पूजके उस में
जलन उपजाई ।
यह देखके परमेश्वर रोष से भर गया ५९
और इस्राएल् से बिलकुल हाथ
उठाया ।

६० और शीलो में के निवास को त्याग
दिया
अर्थात् उस तम्बू को जो उस ने मनुष्यों
के बीच खड़ा किया था ।
६१ और अपने सामर्थ्य के सन्दूक को
बंधुआई में जाने दिया
और अपनी शोभा के पात्र को द्रोही
के बश कर दिया ।
६२ और अपनी प्रजा को तलवार से
जुझवा दिया
और जो लोग उस के निज भाग ठहरे
थे उन पर रोष से भर गया ।
६३ उन के जवान पुरुष आग से भस्म
भये
और उन की कुमारियों के बिवाह के
गीत न गाये गये ।
६४ उन के याजक तलवार से खेत रहे
और उन की बिधवाओं को रोने की
शक्ति न रही ।
६५ तब प्रभु मानो नींद से चौंक उठा
और ऐसे बीर के समान बना जो
दाखमधु पीके ललकारता होवे ।
६६ और उस ने अपने द्रोहियों को मारके
पीछे हटा दिया
और उन की सदा की नामधराई
कराई ।
६७ फिर उस ने यूसुफ के तम्बू को निकम्मा
ठहराया
और एप्रैम् के गोत्र को अपनाये न
रहा ।
६८ पर यहूदा ही के गोत्र को
और अपने प्रिय सिय्योन् पर्बत को
अपनाया ।
और वहां अपने पवित्रस्थान को ऊंचे ६९
पर्बतों के तुल्य ऊंचा किया
और इस पृथिवी के समान स्थिर
बनाया जिस की नेव उस ने सदा
के लिये डाली है ।
फिर उस ने अपने दास दाऊद को ७०
चुनके
भेड़शालों में से ले लिया ।
वह उस को बच्चेवाली भेड़ों के पीछे ७१
पीछे फिरने से ले आया
जिस्तें वह उस की प्रजा याकूब
अर्थात् उस के निज भाग इस्राएल्-
रूपी भेड़ों की चरवाही करे ।
सो दाऊद ने खरे मन से उन की ७२
चरवाही किई
और अपनी बुद्धि काम में ला लाके
उन की अगुवाई किई ।

७९

आसाप् का स्तोत्र ।

हे परमेश्वर अन्यजातियां तेरे निज १
भाग में घुस आईं
उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध
किया
और यरूशलेम् को डीह ही डीह कर
दिया है ।
उन्हों ने तेरे दासों की लोथों को आकाश २
के पंछियों का आहार कर दिया
और तेरे भक्तों को मारके बनैले पशुओं
को खिला दिया है ।

३ उन्हों ने उन का लोहू यरूशलेम् की
चारों ओर जल की नाईं बहाया
और उन को मिट्टी देनेहारा कोई न
रहा।
४ पड़ोसियों के बीच हमारी नामधराई
हुई
चारों ओर के रहनेहारे हम पर हंसते
और ठट्ठा करते हैं।
५ हे यहोवा तू कब लों लगातार कोप
करता रहेगा
तुझ में आग की सी जलन कब लों
भड़कती रहेगी।
६ जो जातियां तुझ को नहीं जानतीं
और जिन राज्यों के लोग तुझ से
प्रार्थना नहीं करते
उन्हीं पर अपनी सारी जलजलाहट
भड़का दे।
७ क्योंकि उन्हों ने याकूब को निगल लिया
और उस के वासस्थान को उजाड़
दिया है।
८ हमारी हानि करने के लिये हमारे
पुरखाओं के अधर्म्म के कर्म्मों को
स्मरण न कर
शीघ्र अपनी दया से हम को सम्भाल
क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं।
९ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर अपने
नाम की महिमा के निमित्त हमारी
सहायता कर
और अपने नाम के निमित्त हम को
छुड़ाके हमारे पापों का प्रायश्चित्त
स्वीकार कर।

अन्यजातियां क्यों कहने पावें कि उन १०
का परमेश्वर कहां है
तेरे दासों का जो लोहू बहाया गया
उस का पलटा
अन्यजातियों से हमारे देखते लिया
जावे।
बंधुओं का कराहना तेरे कान लों पहुंचे ११
अपने भुजबल से घात हो जानेहारों
को बचा।
और हे प्रभु हमारे पड़ोसियों ने जो १२
तेरी निन्दा किई है
उस का सातगुणा बदला उन को दे।
तब हम जो तेरी प्रजा और मानो १३
तेरी चराई की भेड़ हैं
सो तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे
और पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरा गुणा-
नुवाद करते रहेंगे।

८०

प्रधान बजानेहारे के लिये। आसाप् का स्तोत्र जो शोशन्नीमेदूत्[1] नाम राग में गाया जाये।

हे इस्राएल् के चरवाहे १
तू जो यूसुफ को अगुवाई भेड़ बकरियों
की सी करता है कान लगा
तू जो करूबों पर बिराजमान है अपना
तेज दिखा।
एप्रैम् बिन्यामीन और मनश्शे के २
गोत्रियों के साम्हने अपना उत्साह
से भरके
हमारा उद्धार करने को आ।
हे परमेश्वर हम को ज्यों के त्यों कर दे ३

(१) अर्थात्, सोसन साक्षी.

और अपना प्रसन्न मुख दिखा तब
हमारा उद्धार हो जावेगा ।
४ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
तेरे कोपरूपी धूंए से तेरी प्रजा की
प्रार्थना कब लों रुकी रहेगी ।
५ तू ने तो रोटी की सन्ती उन के मुंह
में आंसू ही भर दिये
और मटके भर भरके उन्हें आंसू
पिलाये हैं ।
६ तू हमें ऐसा करता है कि हमारे पड़ोसी
हम से झगड़ा करते हैं
और हमारे शत्रु मनमानते ठट्ठा
करते हैं ।
७ हे सेनाओं के परमेश्वर हम को ज्यों
के त्यों कर दे
और अपना प्रसन्न मुख दिखा तब
हमारा उद्धार हो जावेगा ।
८ तू तो मिस्र से मानो एक दाखलता ले
आया
और अन्यजातियों को निकालके उसे
उन के स्थान पर लगा दिया ।
९ तू ने उस के लिये स्थान सिद्ध
किया
और उस ने जड़ पकड़ी और फैलके
देश को भर दिया ।
१० उस की छाया पहाड़ों पर फैल गई
और उस की डालियां ईश्वर के देव-
दारुओं के ऊपर फैल गईं ।
११ उस के सूत समुद्र लों बढ़ गये
और उस के अङ्कुर महानद लों फैल
गये ।
फिर तू ने उस के बाड़ों को क्यों गिरा १२
दिया
कि सारे बटोही उस के फल को तोड़
लेवें ।
बन शूकर उस को नाश किये डालता है १३
और चौगान के सब पशु उसे चरे
लेते हैं ।
हे सेनाओं के परमेश्वर कृपा करके १४
फिर आ
स्वर्ग से हमारी ओर देख और इस
दाखलता की सुधि ले ।
और जो पौधा तू ने अपने दहिने १५
हाथ से लगाया
और जिस लता की शाखा को तू ने
अपने लिये दृढ़ किया है उस की
रक्षा कर ।
वह दाखलता तो अब झोंस गई और १६
कट भी गई है
और तेरी घुड़की से लोग नष्ट होते
हैं ।
तेरी छाया तेरे दहिने हाथ के सम्भाले १७
हुए पुरुष पर होवे
अर्थात् उस आदमवंशी पर जिसे तू
ने अपने लिये दृढ़ किया है ।
तब हम लोग फिर तेरा पीछा न छोड़ेंगे १८
तू हम को जिला और हम तुझ से
प्रार्थना कर सकेंगे ।
हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा हम १९
को ज्यों के त्यों कर दे
और अपना प्रसन्न मुख दिखा तब
हमारा उद्धार हो जावेगा ।

८१ प्रधान बजानेहारे के लिये। आसाप् का स्तोत्र जो गत् नगर के राग में गाया जावे।

१ परमेश्वर जो हमारा बलमूल है उस का गीत ऊंचे स्वर से गाओ
याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो।
२ भजन आरंभ करो और डफ ले आओ
मधुर बजनेहारी बीणा और सारंगी को भी ले आओ।
३ नये चान्द के दिन
और उस पूर्णमासी को भी जो हमारे पर्ब्ब का दिन है नरसिंगे फूंको।
४ क्योंकि यह इस्राएल् के लिये विधि
और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है।
५ इसी को परमेश्वर ने यूसुफबंशियों में चितौनी की रीति पर चलाया
जब उस ने मिस्त्रियों के बिरुद्ध कूच किया
वहां हम ने ऐसे किसी का बोल सुना जिसे हम आगे न पहिचानते थे।
६ उस ने कहा कि मैं ने तुम्हारे कन्धे पर से बोझ को उतार दिया
तुम्हारा टोकरी उठाना छूट गया।
७ तुम ने संकट में पड़के पुकारा तब मैं ने तुम्हें छुड़ाया
उस गुप्तस्थान में मैं ने जहां बादल गरजता था तुम्हें उत्तर दिया
और मरीबा नाम सोते के पास तुम्हारी परीक्षा किई। सेला।

हे मेरी प्रजा सुन मैं तुझे चिता दूंगा ८
हे इस्राएल् यदि तू मेरी सुने तो क्या ही उत्तम होगा।
तेरे बीच कोई बिराना देवता न होवे ९
न तू किसी पराये देवता को दण्डवत् करना।
मैं ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं १०
जो तुझे मिस्त्र देश से निकाल लाया है
तू अपना मुंह पसार मैं उसे भर देऊंगा।
पर यह सुनके मेरी प्रजा ने मेरा ११
कहा न माना
अर्थात् इस्राएल् ने मुझ को न चाहा।
सो मैं ने उस को उस के मन के हठ १२
पर छोड़ दिया
और वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चली।
अब यदि मेरी प्रजा मेरी सुने १३
अर्थात् इस्राएली लोग मेरे मार्गों पर चलें।
तो मैं क्षण भर में उन के शत्रुओं को १४
दबाऊंगा
और अपना हाथ उन के द्रोहियों के बिरुद्ध चलाऊंगा।
मुझ यहोवा के बैरियों को तो मुझ से १५
बरबस दबना पड़ेगा
पर मेरे लोग सदाकाल लों बने रहेंगे।
और मैं उन को उत्तम से उत्तम गोहूं १६
खिलाऊंगा
और चटान में से मधु निकालके तृप्त करूंगा।

८२ आसाफ् का स्तोत्र ।

१ अपनी मण्डली में परमेश्वर ही प्रधान है
देवताओं के मध्य में वही न्याय करता है ।
२ तुम लोग कब लों टेढ़ा न्याय करते रहोगे
और दुष्टों का पक्ष कब लों करते रहोगे । सेला ।
३ कंगाल और बपमूए का न्याय चुकाओ
निर्दोष दीन और निर्धन को निर्दोष ठहराओ ।
४ कंगाल और दरिद्र को बचा लेओ
दुष्टों के पंजे से उन्हें छुड़ाओ ।
५ यह उपदेश सुनने पर भी तुम न तो कुछ समझते और न कुछ बिचार करते
पर अन्धेरे में चले जाते हो
पृथिवी की सब नेव हिल जाती है ।
६ मैं ने कहा तो था कि तुम देवता हो
और तुम सब परमप्रधान के पुत्र हो ।
७ पर अब कहता हूं कि तुम और मनुष्यों की नाईं मरोगे
और और हाकिमों के समान पद से गिराये जाओगे ।
८ हे परमेश्वर उठके पृथिवी का न्याय कर
क्योंकि सारी जातियों को अपने भाग में तू ही लेवेगा ।

८३ आसाफ् का गीत और स्तोत्र ।

हे परमेश्वर मौन न रह १
हे ईश्वर चुप न रह और चैन न ले ।
क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं २
और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है ।
वे तेरी प्रजा की हानि की गुप्त सम्मति करते ३
और तेरे रक्षित लोगों के बिरुद्ध आपस में युक्तियां निकालते हैं ।
उन्हों ने कहा आओ हम उन को ऐसे छिन्न भिन्न करें कि उन का दल टूट जावे ४
और इस्राएल् का नाम आगे को स्मरण न रहे ।
उन्हों ने एक मन होके युक्ति निकाली ५
और तेरे ही बिरुद्ध बाचा बांधी है ।
यह एदोम् के तम्बुओं में रहनेहारों और इश्माएलियों ६
मोआबियों और हग्रियों ।
गबालियों अम्मोनियों अमालेकियों ७
और सोर् नगरबासियों समेत पलिश्तियों का काम है ।
इन के संग अश्शूरी भी मिल गये ८
उन से भी लोतबंशियों को सहारा मिला है । सेला ।
इन सभों से ऐसा कर जैसा मिद्यानियों से ९
और कीशोन् के नाले में सीसरा और याबीन् से किया था ।
जो एन्दोर् में नष्ट भये १०

और भूमि के लिये खाद बन गये थे।
११ सो इन के रईसों को भी ओरेब् और जेब् के सदृश
और इन के सब प्रधानों को जेबह् और सल्मुन्ना के समान बना।
१२ जिन्हों ने कहा था
कि हम परमेश्वर के वासस्थानों के स्वामी आप हो जावें।
१३ हे मेरे परमेश्वर इन को बवण्डर की धूलि के
अथवा पवन से उड़ जानेहारे भूसे के सदृश कर दे।
१४ जैसा दावानल से भागते हैं जिस से अरण्य भस्म हो जाता
और जिस की लौ से पहाड़ जल जाते हैं।
१५ तैसे ही उन्हें अपने कोपरूपी आंधी से भगा
और अपने रोषरूपी बवण्डर से भभरा दे।
१६ उन के मुंह पर लज्जा छा जावे
जिस्तें हे यहोवा वे तेरे नाम को ढूंढें।
१७ वे युगानयुग लज्जित और भभरे रहें
उन के मुंह काले होवें और उन का नाश हो जावे।
१८ जिस्तें वे जानें कि जिस का नाम यहोवा है
केवल वही सारी पृथिवी के ऊपर परमप्रधान है।

८४

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरह-वंशियों का स्तोत्र जो गत् नगर के राग में गाया जावे।

हे सेनाओं के यहोवा १
तेरा निवास क्या ही प्रिय है।
मेरा जीव यहोवा के आंगनों की २
अभिलाषा करते ही करते बेसुध हो चला
मेरा तन मन दोनों जीवते ईश्वर को पुकार रहे हैं।
हां गौरैया बसेरा पा तो चुकी है ३
और सूपाबेनी भी एक घोंसला पा चुकी है जिस में अपने बच्चे रक्खे
सो क्या हैं
हे सेनाओं के यहोवा हे मेरे राजा और मेरे परमेश्वर तेरी बेदियां ही हैं।
क्या ही धन्य हैं वे लोग जो तेरे भवन ४
में रहते हैं
वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे। सेला।
क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो तुझी ५
से शक्ति पाता
और वे लोग जिन को सिय्योन् की सड़क की सुधि बनी रहती है।
ऐसे लोग रोने के खड्ड में जाते हुए ६
उस में सोते ही सोते बना देते हैं
फिर बरसात की अगली वृष्टि के द्वारा भी उस में आशीष ही आशीष फलती हैं।
वे लोग बल पर बल पाते जाते हैं ७

उन में से एक एक जन सिय्योन् में परमेश्वर को अपना मुंह दिखावेगा ।
८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा मेरी प्रार्थना सुन
हे याकूब के परमेश्वर कान लगा । सेला ।
९ हे परमेश्वर तू जो हमारी ढाल ठहरा है दृष्टि कर
और अपने अभिषिक्त के मुख की ओर देख ।
१० क्योंकि तेरे आंगनों में एक दिन रहना और कहीं हजार दिन रहने से उत्तम है
दुष्टों के डेरों में बास करने से अधिक
अपने परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी पर खड़ा रहना ही मुझे भावता है ।
११ क्योंकि हे यहोवा परमेश्वर तू सूर्य्य और ढाल ठहरा है
हे यहोवा तू अनुग्रह करेगा और महिमा भी देवेगा
और जो लोग खरी चाल चलते हैं उन से तू कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा ।
१२ हे सेनाओं के यहोवा
क्या ही धन्य वह मनुष्य है जो तुझ पर भरोसा रखता है ।

८५

प्रधान बजानेहारे के लिये । कोरहवंशियों का स्तोत्र ।

१ हे यहोवा तू अपने देश पर प्रसन्न हुआ
तू याकूब को बन्धुवाई से लौटा ले आया है ।
तू ने अपनी प्रजा के अधर्म्म को क्षमा किया २
और उन के सारे पाप को ढांप दिया है । सेला ।
तू ने अपने रोष को पूरी रीति से शान्ति किया ३
और अपने भड़के हुए कोप को ठण्डा किया है ।
हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर हम को ज्यों के त्यों कर दे ४
और अपनी रिस हम पर से दूर कर ।
क्या तू हम पर सर्बदा कोपित रहेगा ५
क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी लों कोप करता ही रहेगा ।
क्या तू हम को फिर न जिलावेगा ६
जिस्तें तेरी प्रजा तेरे कारण आनन्दित होवे ।
हे यहोवा अपनी करुणा हमें दिखा ७
और तू आप हमारा उद्धार कर ।
मैं कान लगाये रहूंगा कि ईश्वर यहोवा क्या कहता है ८
वह तो अपनी प्रजा से जो उस के भक्त लोग हैं शान्ति ही की बातें कहेगा
पर वे फिरके मूर्खता करने न लगें ।
निश्चय उस के डरवैयों का उस से उद्धार पाने का समय निकट है ९
तब हमारे देश में महिमा का निवास होवेगा ।
करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं १०

धर्म्म और सन्धि ने मानो आपस में
चुम्बन किया है।
११ पृथिवी में से सच्चाई उगने लगी
और स्वर्ग से धर्म्मरूपी दृष्टि भई है।
१२ फिर यहोवा उत्तम पदार्थ देवेगा
अर्थात् हमारी भूमि अपनी उपज
उपजावेगी।
१३ धर्म्म यहोवा के आगे आगे चलेगा
और उस के पांवों के चिन्हों को हमारे
लिये मार्ग बनावेगा।

८६ दाऊद की प्रार्थना।

१ हे यहोवा कान लगाके मुझे उत्तर दे
क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं।
२ मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं भक्त हूं
तू जो मेरा परमेश्वर है मुझ अपने
दास का जिस का भरोसा तुझ
पर है उद्धार कर।
३ हे प्रभु मुझ पर अनुग्रह कर
क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता
रहता हूं।
४ मुझ अपने दास के मन को आनन्दित
कर
क्योंकि हे प्रभु मैं अपना मन तेरी ही
ओर लगाता हूं।
५ हे प्रभु तू तो भला और क्षमा करने-
हारा है
और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों
के लिये तू करुणासागर ठहरता है।
६ हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान
लगा
और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान से सुन।
संकट के दिन मैं यह जानके तुझ को ७
पुकारूंगा
कि तू मुझे उत्तर देवेगा।
हे प्रभु देवताओं में कोई तेरे तुल्य ८
नहीं
और न किसी के काम तेरे कामों के
बराबर हैं।
हे प्रभु जितनी जातियों को तू ने ९
बनाया है सब आके तेरे साम्हने
दण्डवत् करेंगी
और तेरे नाम की महिमा करेंगी।
क्योंकि तू महान् और आश्चर्य्यकर्म्म १०
करनेहारा है
केवल तू ही परमेश्वर है।
हे यहोवा अपना मार्ग मुझे बता तब ११
मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा
मुझ को एकचित्त कर जिस्तें मैं तेरे
नाम का भय मानूं।
हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर मैं अपने सारे १२
मन से तेरा धन्यबाद करूंगा
और सदा लों तेरे नाम की महिमा
करता रहूंगा।
क्योंकि तेरी करुणा मेरे ऊपर बहुत १३
हुई है
और तू ने मुझ को अधोलोक के तल
में जाने से बचा लिया है।
हे परमेश्वर अभिमानी लोग मेरे १४
बिरुद्ध उठे
और बलात्कारियों की मण्डली मेरे
प्राण की खोजी भई

और वे तुझ को अपने साम्हने नहीं
जानते ।
१५ पर हे प्रभु तू तो दयालु और अनुग्रह-
कारी ईश्वर है
तू धीरज के साथ कोप करनेहारा और
करुणा और सत्यता का सागर है ।
१६ सो मेरी ओर फिरके मुझ पर अनुग्रह
कर मुझ अपने दास को तू आप
शक्ति दे
और मैं जो तेरी दासी का पुत्र हूं
मेरा उद्धार कर ।
१७ मुझे कोई शुभ लक्षण दिखा
उसे देखके मेरे बैरी लज्जित होवेंगे
क्योंकि हे यहोवा तू ने आप मेरी
सहायता किई और मुझे शान्ति
दिई है ।

८७ कोरहवंशियों का गीत और स्तोत्र ।

१ उस नगरी की नेव जो पवित्र पर्बतों
पर बसी है यहोवा ही की डाली
हुई है ।
२ यहोवा याकूब के सारे निवासस्थानों
से अधिक
सिय्योन् नगरी पर प्रीति रखता है ।
३ हे परमेश्वर की नगरी
महिमायुक्त दान देके तेरे ब्याह की
बात लगाई गई है[1] । सेला ।
४ मैं अपने चिन्हारों की चर्चा चलाते रहब्
और बाबेल् की भी चर्चा करूंगा
पलिश्तियों सोरियों और कूशियों
को देखो
उन में से फुलाना मनुष्य सिय्योन् में
उत्पन्न भया है ।
और सिय्योन् के विषय यह कहा ५
जावेगा कि फुलाना फुलाना मनुष्य
उस में उत्पन्न हुआ
और परमप्रधान आप ही उस को
स्थिर रक्खेगा ।
यहोवा जब जाति जाति के लोगों के ६
नाम लिख लिखके गिन लेगा तब
यह कहेगा
कि फुलाना मनुष्य वहीं उत्पन्न भया
है । सेला ।
गानेहारे और नाचनेहारे दोनों कहेंगे ७
कि हे सिय्योन् हमारे सारे आशीष
के सोते तुझी में पाये जाते हैं ।

८८ कोरहवंशियों का गीत और स्तोत्र । प्रधान बजानेहारे के लिये । हेमान् जेरह्‌वंशी का मस्कील् नाम स्तोत्र जो महलत्‌लन्नोत् नाम राग में गाया जावे ।

हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर यहोवा १
मैं दिन को और रात को भी तेरे आगे
चिल्लाता आया हूं ।
मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचे २
मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा ।
क्योंकि मेरा जीव क्लेश से भरा हुआ है ३
और मेरा प्राण अधोलोक के निकट
पहुंचा ।
मैं कबर में पड़नेहारों में गिना गया ४
मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूं ।

(१) अथवा, तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं.

५ मैं मुर्दों के बीच अनाथ सा छोड़ा गया हूं
और जो जूझके कबर में पड़े हैं
जिन को तू और स्मरण नहीं करता
बल्कि वे तेरी कृपादृष्टि से दूर पड़े हुए हैं
ऐसों के समान मैं हुआ हूं ।
६ तू ने मुझे गड़हे के तले ही में
अर्थात् अंधेरे और गहिरे स्थान में रक्खा है ।
७ तेरी जलजलाहट मुझी पर भड़की हुई है
और तू ने अपने कोपरूपी सारे तरंगों से मुझे दुःख दिया है । सेला ।
८ तू ने मेरे चिन्हारों को मुझ से दूर किया
और मुझ को उन के लेखे घिनौना किया है
मैं बन्द हूं और निकल नहीं सकता ।
९ दुःख भोगते भोगते मेरी आंख धुंधला गई है
हे यहोवा मैं लगातार तुझे पुकारता
और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूं ।
१० क्या तू मुर्दों के लिये अद्भुत कार्य्य करेगा
क्या ढेर दिन के मरे हुए लोग उठके तेरा धन्यबाद करेंगे । सेला ।
११ क्या तेरी करुणा का बर्णन कबर में किया जावेगा
अथवा बिनाशलोक में तेरी सच्चाई की चर्चा होवेगी ।
क्या तेरे अद्भुत कार्य्य अन्धकार में जाने जावेंगे १२
अथवा तेरा धर्म्म बिस्मरणलोक में स्मरण रहेगा ।
सो नहीं तौभी हे यहोवा मैं ने तेरी दोहाई दिई है १३
और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचेगी ।
हे यहोवा तू मुझ को अपने मन से क्यों उतारे रहता है १४
तू अपना मुख मुझ से क्यों फेरे रहता है ।
मैं तो बचपन ही से दुःखी बल्कि अधमूआ भी हूं १५
तुझ से भय खाते खाते मैं अति व्याकुल हो गया हूं ।
मैं तेरे क्रोधरूपी जल में डूब गया १६
तेरे भय से मैं मिट गया हूं ।
वह दिन भर जल की नाईं मुझे घेरे रहता है १७
वह दल बल लेके मेरी चारों ओर आया है ।
तू ने मेरे मित्र और भाईबन्धु दोनों को दूर किया है १८
मेरे साथ एक ही चिन्हार रह गया सो अन्धकार ही है ।

८९ एतान् एज्रहवंशी का मस्कील् नाम स्तोत्र ।

मैं यहोवा की करुणामय बाचा के बिषय सदा लों गाता रहूंगा १
हे यहोवा मैं तेरी सच्चाई का ज्ञान पीढ़ी पीढ़ी के लोगों को देता रहूंगा ।

२ क्योंकि मैं ने कहा है कि तेरी करुणा
सदा बनी रहेगी
तू सब से ऊपरवाले स्वर्ग में अपनी
सच्चाई को स्थिर रक्खेगा ।
३ तू ने तो कहा है कि मैं ने अपने चुने
हुए जन से यह बाचा बांधी
अर्थात् अपने दास दाऊद से यह
किरिया खाई है ।
४ कि मैं तेरे बंश को सदा लों स्थिर
रक्खूंगा
और तेरे राज्य को पीढ़ी से पीढ़ी लों
बनाये रक्खूंगा । सेला ।
५ और हे यहोवा तेरे अद्भुत कार्य्य का
धन्यबाद स्वर्ग में भी होगा
और पवित्र दूतों की सभा में तेरी
सच्चाई की चर्चा किई जावेगी ।
६ क्योंकि आकाशमण्डल में तुझ यहोवा
के तुल्य कौन ठहरेगा
ईश्वर के पुत्रों में कौन है जिस से
तुझ यहोवा को उपमा दिई
जावेगी ।
७ हे ईश्वर तू पवित्र दूतों की गोष्ठी में
अत्यन्त त्रास के योग्य
अर्थात् जो तेरी चारों ओर खड़े रहते
हैं उन सभों से तू अधिक भय-
योग्य है ।
८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
हे याह् तेरे तुल्य कौन सामर्थी है
तेरी सच्चाई तो तेरी चारों ओर
प्रगट है ।
९ समुद्र के गर्ब्ब को तू ही तोड़ता
जब उस के तरंग उठते हैं तब तू उन
को शान्त कर देता है ।
तू ने रहब् को जूझे हुए के समान १०
कुचल डाला
और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल
से छिन्नभिन्न किया है ।
स्वर्ग तेरा है पृथिवी भी तेरी ही है ११
जगत को नेव तू ही ने डाली और
जो कुछ उस में है सो तू ही ने
उस में भरा है ।
उत्तर और दक्खिन को तू ही ने सिरजा १२
ताबोर् और हेर्मोन् दोनों पर्बत तेरे
नाम के हेतु मानो जयजयकार
करते हैं ।
तेरी भुजा बलवन्त है १३
तू हाथ का शक्तिमान और दहिने
हाथ का प्रबल है ।
तेरे सिंहासन का आधार धर्म्म और १४
न्याय है
करुणा और सच्चाई तेरे आगे आगे
चलती हैं
क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द १५
के महाशब्द को पहिचानता है
हे यहोवा वे तेरा प्रसन्न मुख देखते
हुए चलते हैं ।
वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन १६
रहते हैं
और तेरे धर्म्म के कारण महान् हो
जाते हैं ।
क्योंकि तू उन के बल और शोभा का १७
मूल है

और अपनी प्रसन्नता से हमारे सिर
को ऊंचा करेगा।
१८ हे यहोवा हमारा रक्षक तेरी ही ओर
से है
अर्थात् हमारा राजा तुझ इस्राएलू के
पवित्र ईश्वर ही से ठहराया गया।
१९ एक समय तू ने अपने भक्त को दर्शन
देके बातें किईं
और कहा मैं ने सहायता करने का
भार एक बीर पर रक्खा
और प्रजा में से एक को चुनके महान्
किया है।
२० अर्थात् मैं ने अपने दास दाऊद को
पाके
अपने पवित्र तेल से उस का अभिषेक
किया है।
२१ मैं अपने हाथ से उस को सम्भाले रहूंगा
और मेरी भुजा से वह दृढ़ रहेगा।
२२ शत्रु उस पर कठोरता करने न पावेगा
और न कुटिल जन उस को दुःख देने
पावेगा।
२३ और मैं उस के द्रोहियों को उस के
साम्हने से नष्ट करूंगा
और उस के बैरियों पर बिपत्ति
डालूंगा।
२४ पर मेरी सच्चाई और करुणा उस पर
बनी रहेंगी
और मेरे नाम के हेतु उस का सिर
ऊंचा हो जावेगा।
२५ और मैं उस का अधिकार समुद्र पर
और महानदों के ऊपर बढ़वाऊंगा।

वह मुझे पुकारके कहा करेगा कि तू २६
मेरा पिता
मेरा ईश्वर और मेरे बचने की चटान
ठहरा है।
फिर मैं उस को अपना पहिलौठा २७
और पृथिवी के राजाओं पर प्रधान
ठहराऊंगा।
मैं अपनी करुणा उस पर सदा लों २८
बनाये रहूंगा
और मेरी बाचा उस के लिये अटल
रहेगी।
और मैं उस के बंश को अनन्तकाल २९
लों बनाये रक्खूंगा
और उस का राज्य स्वर्ग के समान
सनातन रहेगा।
यदि उस के बंश के लोग मेरी व्यवस्था ३०
को छोड़ें
और मेरे न्यायबचनों के अनुसार न
चलें।
और यदि वे मेरी विधियों को उल्लंघन ३१
करें
और मेरी आज्ञाओं को न पालें।
तो मैं उन के अपराध का दण्ड सोंटे से ३२
और उन के अधर्म्म का दण्ड कोड़ों
से मार मारके देऊंगा।
पर मैं अपनी करुणा उस के बंश पर ३३
से सर्वदा न हटाये रहूंगा
और न सच्चाई त्यागके झूठा ठहरूंगा।
मैं अपनी बाचा न तोड़ूंगा ३४
और जो मेरे मुंह से निकल चुका है
उसे न बदलूंगा।

३५ एक बार मैं अपनी पवित्रता की
किरिया खा चुका हूं
फिर दाऊद को कभी धोखा न देऊंगा।
३६ उस का वंश सर्ब्बदा बना रहेगा
और उस का राज्य सूर्य्य की नाईं मेरे
सन्मुख ठहरा रहेगा ।
३७ वह चन्द्रमा की नाईं सदा बना रहेगा
इस विषय आकाशमण्डल में का साक्षी
देनेहारा बिश्वासयोग्य है। सेला ।
३८ पर तू ने यह बचन देने पर भी अपने
अभिषिक्त को मन से उतार दिया
और निकम्मा ठहराया
और उस पर अति रोष किया है ।
३९ अपने दास से जो बाचा तू ने बान्धी
थी उस को तू ने घिनाके टाल दिया
और उस के मुकुट को भूमि पर फेंकके
अशुद्ध किया है ।
४० तू ने उस के सब बाड़ों को तोड़ डाला
और उस के गढ़वाले नगरों को उजाड़
दिया है।
४१ सब बटोही उस को लूट लेते हैं
और उस के पड़ोसियों से उस की
नामधराई होती है ।
४२ तू ने उस के द्रोहियों को प्रबल किया
और उस के सब शत्रुओं को आनन्दित
किया है ।
४३ फिर तू उस की तलवार की धार को
मोड़ देता है
और युद्ध में उस के पांव जमने नहीं
देता ।
४४ तू ने उस का तेज हर लिया
और उस के सिंहासन को भूमि पर
पटक दिया है ।
तू ने उस की जवानी को घटाया ४५
और उस को लज्जा से ढांप दिया है ।
सेला ।
हे यहोवा तू कब लों लगातार मुंह ४६
फेरे रहेगा
तेरी जलजलाहट कब लों आग की
नाईं भड़की रहेगी ।
मेरा स्मरण तो कर कि मैं कैसा ४७
अनित्य हूं
तेरा सारे आदमवंशियों को सिरजना
क्या ही व्यर्थ ठहरा ।
कौन पुरुष सदा अमर रहेगा ४८
क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक
में जाने से बचा सकेगा । सेला ।
हे प्रभु तेरे वे प्राचीनकाल के करुणामय ४९
बचन जो हैं
जो तू ने अपनी सच्चाई की किरिया
खाके दाऊद को दिये थे सो अब
कहां रहे ।
हे प्रभु अपने दासों की नामधराई ५०
की सुधि ले
और यह भी कि मैं सारी सामर्थी
जातियों का बोझ लिये रहता हूं।
उन्हों ने तो हे यहोवा तेरी नामधराई ५१
किई
अर्थात् तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़के
उस की नामधराई किई है ।
यहोवा सर्ब्बदा धन्य रहेगा । आमेन् ५२
फिर आमेन् ॥

चौथा भाग।

९० परमेश्वर के जन मूसा की प्रार्थना।

१ हे प्रभु तू पीढ़ी पीढ़ी
हमारे लिये धाम बना है।
२ जब पहाड़ उत्पन्न न भये
और न तू ने पृथिवी और जगत को रचा
तब से बल्कि अनादिकाल से तू ही ईश्वर है और अनन्तकाल लों भी रहेगा।
३ तू मनुष्य को फिरके चूर करता
और कहता है कि हे आदमवंशियो फिर आओ।
४ क्योंकि तेरी दृष्टि में हजार बरस
बीते हुए कल के दिन के
बल्कि रात के एक पहर के सरीखे हैं।
५ तू मनुष्यों को मानो धारा में बहा देता है वे स्वप्न के समान हो जाते हैं
भोर को वे उस बढ़नेहारी घास के सरीखे होते हैं।
६ जो भोर को फूलती और बढ़ती है
पर सांझ तक कटके मुर्झा जाती है।
७ क्योंकि हम तेरे कोप के हेतु नष्ट भये
और तेरी जलजलाहट के कारण भभर गये हैं।
८ तू ने हमारे अधर्म्म के कर्म्मों को अपने सन्मुख
बल्कि हमारे गुप्त पापों को भी अपनी ज्योति में देखा है।
इस से जो तेरा रोष हुआ इसी कारण ९
हमारी सारी आयुर्दा बीत गई
हमारी उमर बात की बात में बीत गई है।
हमारी आयुर्दा के बरस बहुधा तो १०
सत्तर होते हैं
और चाहे पौरुष के कारण अस्सी बरस भी होवें
तौभी जिस पर हम फूलते हैं सो व्यर्थ ही श्रम जान पड़ता है
क्योंकि हमारी उमर जल्दी बीत जाती है पीछे हम रह नहीं जाते।
तेरे कोप की शक्ति को कौन समझता ११
और तेरा भय यथायोग्य मानके कौन तेरे रोष को सोचता है।
हम को अपनी आयुर्दा के दिन गिनने १२
की ठीक समझ दे
तब हम बुद्धिमान हो जावेंगे।
हे यहोवा लौट आ यह दशा कब लों १३
रहेगी
और अपने दासों की दशा देखके पछता।
भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त १४
कर
जिस्तें हम जीवन भर ऊंचे स्वर से गाते और आनन्द करते रहें।

१५ जितने दिन लों तू हमें दुःख देता आया और जितने बरस लों हम क्लेश भोगते आये हैं
उतने ही बरसों का अब हम को आनन्द दे ।
१६ तेरा कर्म्म तेरे दासों को
और तेरा प्रताप हमारे बंश को प्रगट होवे ।
१७ और हे हमारे परमेश्वर यहोवा तेरी मनोहरता हम को प्रगट होवे
और तू हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर
हे यहोवा हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर ।

९१ जो कोई परमप्रधान के धाम के गुप्तस्थान में बैठे
सो उसी सर्बशक्तिमान की छाया में ठिकाना पावेगा ।
२ मैं यहोवा के विषय कहूंगा कि वह मेरा शरणस्थान और अगम्यस्थान है
वह मेरा परमेश्वर है मैं उसी पर भरोसा रक्खूंगा ।
३ हां तू ऐसा ही कर क्योंकि वह तुझे बहेलिये के जाल से
और महा मरी से बचावेगा ।
४ वह तुझे मानो अपने पंखों की आड़ में ले लेगा
और तू उस के डैनों के नीचे शरण पावेगा
उस की सच्चाई तेरे लिये बड़ी ढाल और झिलम ठहरेगी ।

५ तू न तो रात के भय से
और न उस बाण से जो दिन को उड़ता है डरेगा ।
६ न तो उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है
और न उस महारोग से जो दो पहर में उजाड़ता है तू भयमान होवेगा ।
७ तेरे निकट हजार गिरेंगे
बल्कि तेरी दहिनी और दस हजार मरेंगे
पर तुझ को उस बिपत्ति की आंच न लगेगी ।
८ नेत्रों से तू
दुष्टों के कर्म्म के बदले को केवल देखेगा ।
९ तू जो कहता है कि हे यहोवा तू मेरा शरणस्थान ठहरा है
अर्थात् तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है ।
१० इस लिये कोई बिपत्ति तुझ पर न पड़ेगी
न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आवेगा ।
११ क्योंकि यहोवा अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा
कि वे आने जाने में सब कहीं तेरी रक्षा करें ।
१२ वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेवेंगे
न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे ।
१३ तू सिंह और नाग को कुचलेगा

तू जवान सिंह और अजगर को
लताड़ेगा ।
१४ यहोवा तेरे विषय कहता है कि उस
ने जो मुझ से स्नेह किया है इस
लिये मैं उस को छुड़ाऊंगा
मैं उस को ऊंचे स्थान पर रक्खूंगा
क्योंकि उस ने मेरे नाम पर चित्त
लगाया है ।
१५ जब जब वह मुझ को पुकारे तब तब
मैं उसे उत्तर दूंगा
संकट में मैं उस के संग रहूंगा
मैं उस को बचाके उस की महिमा
बढ़ाऊंगा ।
१६ मैं उस को दीर्घायु करके उस का जन्म
सुफल करूंगा
और अपनी ओर से उद्धार का सुख
भुगाऊंगा ।

९२

बिश्राम के दिन के लिये एक गीत
और स्तोत्र ।

१ हे यहोवा तेरा धन्यवाद करना
और हे परमप्रधान तेरे नाम का
भजन गाना भला ही है ।
२ प्रातःकाल में तेरी करुणा
और रात्रि समय में तेरी सच्चाई का
प्रचार करना भला ही है ।
३ सो मैं दस तारवाले बाजे और सारंगी
पर
और बीणा पर गम्भीर स्वर से गा
गाके करूंगा ।
४ क्योंकि हे यहोवा तू ने मुझ को अपने
कर्म्म से आनन्दित किया है
और मैं तेरे हाथों के कामों के विषय
ऊंचे स्वर से गाऊंगा ।
५ हे यहोवा तेरे काम क्या ही बड़े हैं
तेरी कल्पनाएं बहुत गम्भीर हैं ।
६ पशुसरीखा मनुष्य इस को नहीं समझता
और मूर्ख इस का बिचार नहीं करता ।
७ कि दुष्ट लोग जो घास की नाईं फूलते
फलते
और सब अनर्थकारी प्रफुल्लित होते हैं
सो इसी लिये होता है कि वे युगान-
युग के लिये नष्ट होवें ।
८ पर हे यहोवा तू तो सदा महान् बना
रहेगा ।
९ क्योंकि हे यहोवा तेरे शत्रु
मुझे निश्चय है कि तेरे शत्रु नष्ट होवेंगे
सब अनर्थकारी छिन्नभिन्न होवेंगे ।
१० पर मेरे बल का सींग तू ने बनैले बैल
का सा ऊंचा किया है
मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं ।
११ और मैं अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके
और उन कुकर्म्मियों का हाल जो मेरे
बिरुद्ध उठे थे सुनके सन्तुष्ट हुआ
हूं ।
१२ धर्म्मी लोग खजूर के समान फूलें फलेंगे
और लबानोन् के देवदारु की नाईं
बढ़ते रहेंगे ।
१३ वे यहोवा के भवन में मानो रोपे जाके
हमारे उसी परमेश्वर के आंगनों में
फूलें फलेंगे ।
१४ वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे
और रस भरे और लहलहाते रहेंगे ।

१५ सो इस लिये होगा कि वे प्रचार कर
सकें कि यहोवा सीधा है
वह मेरी चटान ठहरा है और उस
में कुटिलता कुछ भी नहीं ।

९३

यहोवा राज्य करने लगा उस ने माहात्म्य का पहिरावा पहिना है
यहोवा ऐसे ही वस्त्र पहिने हुए और
सामर्थ्य का फेंटा बान्धे है
इस कारण जगत स्थिर है वह नहीं
टलने का ।
२ हे यहोवा तेरा राज्य अनादिकाल
से स्थिर है
तू सर्बदा से है।
३ हे यहोवा महानदों का कोलाहल हो
रहा है
महानदों का बड़ा शब्द हो रहा है
महानद गरजते तो हैं ।
४ पर महाजलनिधि के शब्द से
समुद्र के प्रतापमय तरंगों से
हे ऊंचे स्थान पर बिराजमान यहोवा
तू अधिक प्रतापमय है ।
५ तेरे चितौनी के बचन अति बिश्वास-
योग्य हैं
हे यहोवा तेरे भवन को युगानयुग
पवित्रता ही फबती है ।

९४

हे पलटा लेनेहारे ईश्वर यहोवा
हे पलटा लेनेहारे ईश्वर अपना तेज
दिखा ।
२ हे पृथिवी के न्यायी उठके उद्यत हो
घमण्डियों को बदला दे ।
हे यहोवा दुष्ट लोग कब लों ३
फिर पूछता हूं दुष्ट लोग कब लों
प्रफुल्लित रहेंगे ।
वे बकत और ढिठाई की बात बोलते हैं ४
सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं ।
हे यहोवा वे तेरी प्रजा को पीस डालते ५
अर्थात् तेरे निज भाग को दुःख देते हैं।
वे बिधवा और परदेशी का घात करते ६
और बपमूओं को मार डालते हैं ।
और कहते हैं कि याह् न देखेगा ७
अथवा याकूब का परमेश्वर बिचार
न करेगा ।
तुम जो प्रजा में पशु सरीखे मनुष्य हो ८
बिचार करो
और हे मूर्खो तुम कब बुद्धिमान
होओगे ।
जिस ने मनुष्यों को कान दिये क्या ९
वह आप नहीं सुन सकता
जिस ने आंख रची क्या वह आप देख
नहीं सकता ।
जो जाति जाति को ताड़ना दिया १०
करता है क्या वह तुम को भी न
डांटेगा
जो मनुष्य को ज्ञान सिखाता है क्या
वह आप ज्ञान नहीं रखता ।
हां यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को ११
जानता तो है
कि वे निरी हवा हैं ।
हे याह् क्या ही धन्य है वह पुरुष १२
जिस को तू ताड़ना देता

और अपनी व्यवस्था सिखाता है।
१३ क्योंकि जब लों दुष्ट के लिये गड्हा
खोदा नहीं जाता
तब लों अर्थात् बिपत्ति के दिनों में
भी तू उसे चैन देता रहता है।
१४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा
अर्थात् अपने निज भाग को न छोड़ेगा।
१५ पर न्याय फिर धर्म्मयुक्त हो जावेगा
तब सारे सीधे मनवाले उस के पीछे
पीछे हो लेवेंगे।
१६ कुकर्म्मियों के बिरुद्ध मेरी ओर कौन
खड़ा होगा
मेरी ओर से अनर्थकारियों का कौन
साम्हना करेगा।
१७ यदि यहोवा मेरा सहायक न होता
तो क्षण भर में मुझे मौनलोक में बास
करना पड़ता।
१८ पर जब मैं ने कहा कि मेरा पांव
फिसलने लगा
तब हे यहोवा तू ने करुणामन मुझे
थांभ लिया।
१९ जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएं
होती हैं
तब तेरी दिई हुई शान्ति से मुझ को
सुख होता है।
२० क्या खल सिंहासन पर बैठा हुआ
तेरा संगी होगा
जो हक्क का बहाना करके उत्पात
करता है।
२१ वे लोग दल बांध बांधके धर्म्मी का
प्राण लेने को चढ़ाई करते
और निर्दोष को दोषी ठहराके घात
करते हैं।
पर यहोवा मेरा ऊंचा गढ़ ठहरा है २२
अर्थात् मेरा परमेश्वर मेरी शरण की
चटान बना है।
और वह उन का अनर्थ काम उन्हीं २३
के सिर डालेगा
और उन्हें उन्हीं की बुराई के द्वारा
बिध्वंस करेगा
हमारा परमेश्वर यहोवा उन को
बिध्वंस ही करेगा।

९५

आओ हम यहोवा के लिये १
ऊंचे स्वर से गीत गावें
अपने उद्धार की उसी चटान का जय-
जयकार करें।
हम धन्यबाद करते हुए उस के सन्मुख २
आवें
और भजन गाते हुए उस का जय-
जयकार करें।
क्योंकि यहोवा महान् ईश्वर है ३
और सारे देवताओं के ऊपर महान्
राजा है।
पृथिवी के गहिरे स्थान उसी के हाथ ४
में हैं
और पहाड़ों की चोटियां भी उसी
की हैं।
समुद्र उस का है और उसी ने उसे ५
बनाया
और स्थल भी उसी के हाथों से रचा
गया।
आओ हम झुक झुकके दण्डवत् करें ६

और अपने कर्त्ता यहोवा के साम्हने
अपने अपने घुटने टेकें ।
७ क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है
और हम लोग उस की प्रजारूपी भेड़ें
हैं जिन्हें वह अपने बाहुबल से
अपनी चराई में चराता है
सो हे लोगो आज यदि तुम उस की
यह बात सुनो तो क्या ही उत्तम
होगा ।
८ कि अपने अपने हृदय को ऐसा कठोर
मत करो जैसा मरीबा में
वा मस्सा के दिन बन में हुआ था ।
९ अर्थात् तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा
और मेरे कर्म्म देखकर भी मुझ को
जांचा ।
१० चालीस बरस लों मैं उस पीढ़ी के लोगों
से रूठा रहा
और मैं ने कहा ये तो भूले हुए मन
के हैं
और मेरी गति को इन्हों ने नहीं
पहिचाना ।
११ इस कारण मैं ने कोप में आके किरिया
खाई
कि ये मेरे बिश्रामस्थान में कभी प्रवेश
न करने पावेंगे ।

९६

यहोवा के लिये नया गीत
गाओ

हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का
गीत गाओ ।
२ यहोवा का गीत गाओ उस के नाम
को धन्य कहो
दिन दिन उस के किये हुए उद्धार का
शुभसमाचार सुनाते रहो ।
अन्यजातियों में उस की महिमा का ३
वर्णन करो
सारी जातियों में उस के आश्चर्य्यकर्म्मों
की चर्चा करो ।
क्योंकि यहोवा महान् और स्तुति के ४
अति योग्य है
वह तो सारे देवताओं से अधिक
भययोग्य है ।
क्योंकि और सब लोगों के देवता तो ५
निकम्मे ही हैं
पर स्वर्ग का बनानेहारा यहोवा
है ।
उस की चारों ओर बिभव और ६
ऐश्वर्य्य है
उस के पवित्र स्थान में सामर्थ्य और
शोभा है ।
हे जाति जाति के कुलो यहोवा का ७
गुणानुवाद करो
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य की
चर्चा करो ।
यहोवा के नाम की जो महिमा है ८
उस की चर्चा करो
भेंट लेके उस के आंगनों में आओ ।
पवित्रता से शोभायमान होके यहोवा ९
को दण्डवत् करो
हे सारी पृथिवी के लोगो उस के
साम्हने थरथराओ ।
जाति जाति में कहो कि यहोवा राज्य १०
करने लगा है

इस कारण जगत ऐसा स्थिर है कि
वह टलने का नहीं
यहोवा सब लोगों का न्याय सीधाई
से करेगा ।
११ स्वर्ग आनन्द करे और पृथिवी मगन
होवे
समुद्र और उस में की सारी वस्तें
गरज उठें ।
१२ चौगान और जो कुछ उस में है सो
प्रफुल्लित होवे
उसी समय अरण्य के सारे वृक्ष ऊंचे
स्वर से गावें ।
१३ सो यहोवा के साम्हने होवे क्योंकि
वह आनेहारा है
वह पृथिवी का न्याय करने को आने-
हारा है
वह धर्म्म से जगत का
और सच्चाई से सब लोगों का न्याय
करेगा ।

९७ यहोवा राज्य करने लगा सो
पृथिवी मगन होवे
और द्वीप जो बहुतेरे हैं सो आनन्द करें।
२ यहोवा बादलों और अन्धकार से
घिरा है
उस के सिंहासन का आधार धर्म्म
और न्याय है ।
३ उस के आगे आगे आग चलती हुई
उस के द्रोहियों को चारों ओर से
भस्म करती है ।
४ उस की बिजलियों से जगत प्रकाशित
भया
पृथिवी देखके थरथरा गई है ।
पहाड़ यहोवा के साम्हने ५
अर्थात् सारी पृथिवी के प्रभु के साम्हने
मोम की नाईं पिघल गये ।
स्वर्ग ने उस के धर्म्म की साक्षी दिई ६
और सारी जातियों ने उस की महिमा
देखी है ।
जितने खुदी हुई मूर्त्तियों की उपासना ७
करते
और मूर्त्तियों पर जो निकम्मी ही हैं
फूलते हैं सो लज्जित होवें
हे सारे देवताओ तुम उसी को दण्डवत्
करो ।
सिय्योन् सुनके आनन्दित भई ८
और यहूदा के और और नगर मगन
हुए
सो हे यहोवा तेरे न्यायकर्म्मों के
कारण हुआ ।
क्योंकि हे यहोवा तू सारी पृथिवी के ९
ऊपर परमप्रधान है
तू सारे देवताओं से अधिक महान्
ठहरा है ।
हे यहोवा के प्रेमियो बुराई के बैरी १०
होओ
वह अपने भक्तों के प्राण की रक्षा
करता
और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता
है ।
धर्म्मी के लिये ज्योति का ११
और सीधे मनवालों के लिये आनन्द
का मानो बीज बोया हुआ है ।

१२ हे धर्म्मियो यहोवा के कारण आनन्दित होओ
और जिस पवित्र नाम से उस का स्मरण होता है उस का धन्यबाद करो ।

९८ स्तोत्र ।

१ यहोवा का नया गीत गाओ
क्योंकि उस ने आश्चर्य्यकर्म्म किये हैं
उस ने अपनी पवित्र भुजा अर्थात् अपने दहिने हाथ से उद्धार सिद्ध कर लिया है ।
२ यहोवा ने अपना किया हुआ उद्धार विदित किया
उस ने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म्म प्रगट किया है ।
३ उस ने इस्राएल् के घराने के निमित्त अपनी करुणा और सच्चाई को स्मरण किया
और पृथिवी के सब दूर दूर देशवालों ने हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखा है ।
४ हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का जयजयकार करो
उमंग में आ आके ऊंचे स्वर से भजन गाओ ।
५ बीणा बजा बजाके यहोवा का भजन गाओ
बीणा बजा बजाके भजन का स्वर सुनाओ ।
६ तुरहियां और नरसिंगे फूंक फूंकके
यहोवा महाराजाधिराज का जयजयकार करो ।
समुद्र और उस में की सारी वस्तें गरज उठें ७
जगत अपने बासियों समेत महाशब्द करे ।
महानद मानो तालियां बजावें ८
पहाड़ मिलके ऊंचे स्वर से गीत गावें ।
सो यहोवा के साम्हने होवे क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने को आनेहारा है ९
वह धर्म्म से जगत का
और सीधाई से सब लोगों का न्याय करेगा ।

९९

यहोवा राज्य करने लगा सो जाति जाति के लोग कांपें १
वह करूबों पर बिराजमान है सो पृथिवी डोल उठे ।
यहोवा सिय्योन् में महान् है २
और वह सारी जातियों के ऊपर प्रधान है ।
लोग उस के महान् और भययोग्य नाम का धन्यबाद करें ३
यहोवा तो पवित्र है ।
फिर वह राजा सर्ब्बसामर्थी होके भी न्याय में प्रीति रखता है ४
हे यहोवा सीधाई को तू ही ने स्थापित किया
न्याय और धर्म्म को याकूब में तू ही करता आया है ।

५ हे लोगो हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो
और उस के चरण की चौकी के साम्हने दण्डवत् करो
यहोवा तो पवित्र है।
६ उस के याजकों में से मूसा और हारून
और उस के प्रार्थना करनेहारों में से शमूएल्
ये पुरुष यहोवा को पुकारते थे और वह उन्हें उत्तर देता था।
७ वह उन से बादल के खंभे में हो होके बोलता था
और वे उस के चितौनी के बचनों और उस की दिई हुई विधियों पर चलते थे।
८ हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू उन को उत्तर देता था
और यद्यपि तू उन की बुरी क्रियाओं का पलटा लेता था
तौभी उन के लिये अपने को क्षमा करनेहारा ईश्वर दिखाता था।
९ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो
और उस के पवित्र पर्वत पर दण्डवत् करो
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा तो पवित्र है।

१०० धन्यवादबलि के लिये स्तोत्र।

१ हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का जयजयकार करो।
२ आनन्द से यहोवा की सेवा करो
ऊंचे स्वर से गाते हुए उस के सन्मुख आओ।
निश्चय जानो कि यहोवा जो है सोई परमेश्वर है ३
उसी ने हम को बनाया और हम उसी के हैं
अर्थात् उस की प्रजा और मानो उस की चराई की भेड़ें हैं।
उस के फाटकों से धन्यबाद और उस के आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो ४
उस का धन्यबाद करो और उस के नाम को धन्य कहो।
क्योंकि यहोवा भला है उस की करुणा सनातन ५
और उस की सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है।

१०१ दाऊद का स्तोत्र।

मैं करुणा और न्याय के विषय गाऊंगा १
हे यहोवा मैं तेरा ही भजन गाऊंगा।
मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूंगा २
तू मेरे पास कब आवेगा
मैं अपने घर के भीतर मन की खराई से रहा करूंगा।
मैं किसी बदमाशी के काम पर चित्त लगने न दूंगा ३
मैं कुपथ पर चलनेहारों के काम से घिन रखता हूं
ऐसे काम में मैं न लगूंगा।
टेढ़ा स्वभाव मुझ से दूर रहेगा

मैं बुराई के अपने मन में आने न
दूंगा ।
५ जो छिपके अपने पड़ोसी की चुगली
खावे उस को मैं बिध्वंस करूंगा
जिस की आंखें नीची और जिस का
मन घमण्डी है उस की मैं न सहूंगा ।
६ मेरे नेत्र देश के बिश्वासयोग्य लोगों
पर लगे रहेंगे कि वे मेरे संग रहें
जो खरे मार्ग पर चलता है सोई
मेरा टहलुआ ठहरेगा ।
७ जो छलबल करता है सो मेरे घर के
भीतर न रहने पावेगा
जो झूठ बोलता है सो मेरे साम्हने
बना न रहेगा ।
८ दिन दिन सवेरे उठ उठके मैं देश के
सब दुष्टों को बिध्वंस किया करूंगा
और इस भान्ति यहोवा के नगर के
सब अनर्थकारियों को नष्ट करूंगा ।

१०२ दीन जन की प्रार्थना उस समय के लिये जब वह दुःख का मारा अपने शोक की बातें यहोवा के साम्हने खोलके कहता होय ।

१ हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन
मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे ।
२ मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझ से
न फेर ले
अपना कान मेरी ओर लगा
जिस समय मैं पुकारूं उसी समय मुझे
झट उत्तर दे ।
३ क्योंकि मेरी आयुर्दा मानो धूआं होके
बिलाय गई
और मेरी हड्डियां लुकटी के समान
हो गई हैं ।
मेरा मन झुलसी हुई घास की नाईं ४
सूख गया
और मुझे अपनी रोटी खाना भी
बिसर जाता है ।
कहरते कहरते ५
मेरा चाम हड्डियों में सट गया है ।
मैं बन के धनेश के समान हो गया ६
मैं उजाड़ स्थानों के उल्लू के सरीखा
बन गया हूं ।
मैं पड़ा जागता हूं और गौरे के सदृश ७
हो गया
जो छत के ऊपर अकेला बैठता है ।
मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई ८
करते हैं
जो मेरे बिरोध की धुन में बावले हो
रहे हैं सो मेरा पटतर देके स्राप
देते हैं ।
मैं रोटी के बदले राख खाता ९
और आंसू मिला पानी पीता हूं ।
यह दशा तेरे क्रोध और कोप के १०
कारण भई
क्योंकि तू ने मुझे उठाके पटक दिया
है ।
मेरी आयुर्दा ढलती हुई छाया के ११
समान है
और मैं आप घास की नाईं सूख चला
हूं ।
पर तू हे यहोवा सदा लों बिराजमान १२
रहेगा

और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है सो पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहेगा ।
१३ तू उठके सिय्योन् पर दया करेगा
क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का समय अर्थात् नियत समय आ पहुंचा है ।
१४ क्योंकि तेरे दासों के मन उस के गिरे पड़े पत्थरों की ओर ढुलने लगे
और उस की धूलि देखके वे तरस खाने लगे हैं ।
१५ अब अन्यजातियां तुझ यहोवा के नाम का भय मानेंगी
और पृथिवी के सारे राजा यह कहके तेरे प्रताप से डरेंगे ।
१६ कि यहोवा ने सिय्योन् को फिर बसाया वह अपनी महिमा के साथ दिखाई दिया है ।
१७ वह अनाथ की प्रार्थना सुनके उस की ओर फिरा
और उस की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जाना ।
१८ यह बात आनेहारी पीढ़ी के लिये लिखी जावेगी
इस लिये याह् की स्तुति एक समाज में होगी जो बनाया जावेगा ।
१९ क्योंकि यहोवा ने अपने ऊंचे और पवित्रस्थान से दृष्टि किई
अर्थात् स्वर्ग से पृथिवी की ओर देखा ।
२० जिस्तें वह बंधुओं का कराहना सुने
और घात होनेहारों के बन्धन खोले ।
और सिय्योन् में यहोवा के नाम का वर्णन होवे २१
अर्थात् यरूशलेम् में उस की स्तुति किई जावे ।
यह तब होगा जब जाति जाति और राज्य राज्य के लोग २२
यहोवा की उपासना करने को एकट्ठे होवेंगे ।
उस ने अपने सामर्थ्य से मुझे जीवन-यात्रा में दुःख दिया २३
और मेरी आयुर्दा को घटाया ।
तब मैं ने कहा हे मेरे ईश्वर मुझे आधी आयुर्दा में न उठा ले २४
तू तो पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहता है ।
आदि में तू ने पृथिवी की नेव डाली २५
और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है ।
वह तो नष्ट होवेगा पर तू बना रहेगा २६
और वह कपड़े के समान बिलकुल पुराना हो जावेगा
तू उस को वस्त्र की नाईं बदलेगा तब वह बदल जावेगा ।
पर तू वही है २७
और तेरा अन्त नहीं होने का ।
तेरे दासों का वंश बसा रहेगा २८
और वह तेरे साम्हने स्थिर रहेगा ।

१०३

दाऊद रचित ।

हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह १

और जो कुछ मुझ में है सो उस के
पवित्र नाम को धन्य कहे ।
२ हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह
और उस के किसी उपकार को न
बिसराना ।
३ यह वही है जो तेरे सारे अधर्म्म को
क्षमा करता
और तेरे सब रोगों को चंगा करता
है ।
४ वही है जो तेरे प्राण को नष्ट होने
से बचा लेता
और तेरे सिर पर करुणा और दया-
रूपी मुकुट बांधता है ।
५ वही है जो तेरे आनन्द की लालसा
को उत्तम पदार्थ दे देके तृप्त
करता है
तू नये सिरे से उकाब के समान बल-
वन्त हो जाता है ।
६ यहोवा सब अन्धेर सहनेहारों के लिये
धर्म्म और न्याय के कर्म्म करता है ।
७ उस ने मूसा को अपनी गति का ज्ञान
दिया
और इस्राएलवंशियों को अपने महा-
कार्य्य दिखाये ।
८ यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी
धीरज के साथ कोप करनेहारा और
करुणासागर है ।
९ वह अनन्तकाल लों वाद विवाद करता
न रहेगा
न उस का कोप सदा लों भड़का
रहेगा ।
उस ने हमारे पापों के अनुसार हम १०
से व्यवहार नहीं किया
न हमारे अधर्म्म के कर्म्मों के अनुसार
हम को बदला दिया है ।
बल्कि जैसे आकाश पृथिवी के ऊपर ११
छाया हुआ है
तैसे ही उस की करुणा उस के डरवैयों
के ऊपर छाई हुई रहती है ।
उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है १२
उतनी उस ने हमारे अधर्म्म को हम
से दूर किया है ।
जैसे पिता अपने बालकों पर दया १३
करता है
तैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर
दया करता है ।
क्योंकि वह हमारे शरीर की रचना १४
जानता है
और उस को स्मरण रहता है कि मनुष्य
मिट्टी ही हैं ।
बिनाशी मनुष्य जो है उस की आयुर्दा १५
घास के समान होती है
वह चौगान के फूल ही की नाईं
फूलता है ।
जो पवन लगते ही रह नहीं जाता १६
अर्थात् वह अपने स्थान में फिर नहीं
मिलता ।
पर यहोवा की करुणा उस के डरवैयों १७
पर युगानयुग
और उस की धार्म्मिकता उन के नाती
पोतों पर भी प्रगट होती रहती
है ।

१८ अर्थात् उन पर जो उस से बन्धी हुई
बाचा को पालते
और उस के उपदेशों को स्मरण कर
करके उन पर चलते हैं।
१९ यहोवा जो है उस ने अपना सिंहासन
स्वर्ग में स्थिर किया है
और उस का राज्य सारी सृष्टि पर है।
२० हे यहोवा के दूतो उस को धन्य कहो
तुम जो बड़े बीर हो और उस के
बचन को मानते
और कान लगा लगाके सुनते हो उस
को धन्य कहो।
२१ हे यहोवा की सारी सेनाओ उस को
धन्य कहो
हे उस के टहलुओ तुम जो उस की
इच्छा पूरी करते हो उस को
धन्य कहो।
२२ हे यहोवा की सारी रचनाओ
उस के राज्य के सब स्थानों में उस
को धन्य कहो
हे मेरे मन तू यहोवा को धन्य कह।

१०४

हे मेरे मन यहोवा को
धन्य कह
हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू अत्यन्त
महान् ठहरा है
तू बिभव और ऐश्वर्य्य का बस्त्र पहिने
है।
२ तू उजियाले को चादर की नाईं ओढ़े
रहता
तू आकाश को तम्बू के समान ताने
रहता है।
यहोवा ही है जो अपनी अटारियों ३
की कड़ियां जल में धरता
और मेघों को अपना रथ बनाता
और पवन के पंखों पर चलता है।
वह पवनों को अपने दूत ४
और धधकती आग को अपनी टहलुइन
बनाता है।
उस ने पृथिवी को आधार पर स्थिर ५
किया
सो अनन्तकाल लों कभी नहीं टलने की।
हे यहोवा तू ने उस को गहिरे सागर- ६
रूपी बस्त्र से ढांप दिया
जल पहाड़ों के ऊपर पहुंचा था।
पर तेरी घुड़की से वह भाग गया ७
तेरे गरजने का शब्द सुनते ही वह
उतावली करके बह गया।
वह पहाड़ों पर चढ़ गया और दूनों ८
से उतर गया
और जो स्थान तू ने उस के लिये लैस
किया था उसी में वह आया[५]।
तू ने एक सिवाना ठहराया जिस को ९
वह नहीं लांघने का
न स्थल को फिरके ढांपने का।
वही यहोवा है जो खड्डों के मार्ग से १०
सोतों को बहाता है
और वे पहाड़ों के बीच बीच बहते हैं।
उन में चौगान के सब जीव जन्तु जल ११
पीते हैं

(५) अथवा. पहाड़ निकल आये दूने दिखाई दिये और जो स्थान तू ने जल के लिये लैस किया था वहीं वह पहुंच गया।

विशेष करके बनैले गदहे अपनी प्यास
बुझा लेते हैं ।
१२ उन सोतों के पास आकाशचारी पक्षी
बसेरा करते
और डालियों के बीच बैठे हुए बोलते
हैं ।
१३ यहोवा अपनी अटारियों में से पहाड़ों
को सींचता है
उस के कामों के फल से पृथिवी तृप्त
रहती है ।
१४ वह पशुओं के लिये घास
और मनुष्यों के लिये अन्नादि उपजाता
और इस रीति भूमि से भोजनवस्तें
देता है ।
१५ वह दाखमधु को देता है जिस से
मनुष्य का मन आनन्दित होता है
और तेल को जिस से उस का मुख
चिकना होता है
और अन्न को भी जिस से वह संभल
जाता है ।
१६ यहोवा के वृक्ष तृप्त होते हैं
अर्थात् लबानोन् के देवदारु जो उसी
के लगाये हुए हैं ।
१७ उन में चिड़ियाएं अपने घोंसले
बनाती हैं
सारस का बसेरा सनोबर वृक्षों में
होता है ।
१८ ऊंचे ऊंचे पहाड़ बनैले बकरों के लिये हैं
और ढांगें शापानों के शरणस्थान हैं ।
१९ यहोवा ने नियत समयों के लिये चन्द्रमा
को बनाया
और सूर्य्य अपने अस्त होने का समय
जानता है ।
२० हे यहोवा जब तू अन्धकार करता है
तब रात हो जाती है
जिस में अरण्य के सब जीवजन्तु घूमते
फिरते हैं ।
२१ जवान सिंह अहेर के लिये गरजते
और ईश्वर से अपना आहार मांगते
हैं ।
२२ सूर्य्य उदय होते ही वे हट जाते
और अपनी मान्दों में जा बैठते हैं ।
२३ तब मनुष्य बाहर निकलके अपना कार्य्य
और परिश्रम संध्याकाल लों करता
रहता है ।
२४ हे यहोवा तेरे काम क्या ही चित्र
बिचित्र हैं
इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से
बनाया
पृथिवी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है ।
२५ फिर उस समुद्र को भी देखो जो बड़ा
और बहुत ही चौड़ा है
और जिस में अनगिनित जलचर
अर्थात् छोटे और बड़े जीवजन्तु भरे
हैं ।
२६ उस में जहाज भी आते जाते हैं
और लिव्यातान् भी रहता है जिसे
तू ने वहां खेलने के लिये बनाया
है ।
२७ ये सब तेरा आसरा तकते हैं
क्योंकि तू उन का आहार समय पर
दिया करता है ।

२८ जो तू उन्हें देता है सो वे खा लेते हैं
जब तू मुट्ठी खोलता है तब वे उत्तम
पदार्थों से तृप्त होते हैं ।
२९ जब तू मुख फेर लेता है तब वे भभर
जाते हैं
जब तू उन का आत्मा ले लेता है तब
उन का प्राण छूटता
और वे मिट्टी में फिर मिल जाते हैं ।
३० फिर जब तू अपना आत्मा उन में
समवाता है तब वे उठ खड़े होते हैं
और तू धरती को नया कर देता
है ।
३१ यहोवा की महिमा सदा लों रहे
यहोवा अपने कार्य्य देखके आनन्दित
होवे ।
३२ वही है जिस के निहारते ही पृथिवी
कांप उठती है
और उस के छूते ही पहाड़ों से धूंआं
निकलता है ।
३३ मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता
रहूंगा
जब लों मैं बना रहूंगा तब लों अपने
परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा ।
३४ मेरा ध्यान करना उस को प्रिय लगे
मैं तो यहोवा के हेतु आनन्दित
रहूंगा ।
३५ पापी लोग पृथिवी पर से मिट जावें
और दुष्ट लोग आगे को न रहें
हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह
याह् की स्तुति करो[1] ।

(१) मूल में हल्लूयाह्.

१०५

यहोवा का धन्यबाद करो १
उस से प्रार्थना करो
जाति जाति में उस के महाकार्य्य
विदित करो ।
उस का गीत गाओ उस का भजन २
गाओ
उस के सब आश्चर्य्य कर्म्मों का ध्यान
करो ।
उस के पवित्र नाम पर घमण्ड करो ३
यहोवा के खोजियों का हृदय आ-
नन्दित होवे ।
यहोवा को सामर्थी जानके उस के ४
पास आओ
उस के दर्शन के निरन्तर खोजी
रहो ।
हे उस के दास इब्राहीम के बंश ५
हे याकूबबंशियो तुम जो उस के चुने
हुए हो ।
उस ने जो आश्चर्य्य कर्म्म किये हैं सो ६
स्मरण करो
उस के चमत्कारों और न्यायबचनों
की सुधि करो ।
वही यहोवा जो है सो हमारा परमे- ७
श्वर है
उस के न्यायकर्म्म पृथिवी भर में प्रसिद्ध
हैं ।
वह अपनी बाचा को सदा स्मरण ८
रखता आया है
अर्थात् उस बचन को जो उस ने अपनी
शक्ति से हजार पीढ़ियों के लिये
दिया ।

९ वह बाचा उस ने इब्राहीम के साथ
बांधी
और उसी बाचा के विषय उस ने
इस्हाक् से किरिया खाई ।
१० और उसी को उस ने याकूब के लिये
भी विधि की रीति पर दृढ़ किया
अर्थात् इस्राएल् के संग यह कहके
सनातन बाचा बांधी ।
११ कि मैं कनान् देश तुझी को दूंगा
सो बांट में तेरा निज भाग होवेगा ।
१२ पर उस समय तो तुम्हारे पुरखा
गिनती में थोड़े थे
बल्कि बहुत ही थोड़े और उस देश
में परदेशी भी थे ।
१३ और वे एक जाति से दूसरी जाति में
और एक राजा की प्रजा से दूसरे की
प्रजा में फिरते रहे ।
१४ पर यहोवा ने किसी मनुष्य को उन
पर अन्धेर न करने दिया
और वह राजाओं को भी उन के
निमित्त यह कह कहके डांटता
था ।
१५ कि मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ
और न मेरे नबियों की हानि करो ।
१६ फिर उस ने उस देश में अकाल डाला
और अन्नरूपी सारे आधार को दूर
कर दिया ।
१७ पर उस ने यूसुफ नाम एक पुरुष को
आगे भेजा था
जो दास होने के लिये बेचा गया
था ।

लोगों ने उस के पैरों में बेड़ियां डालके १८
उसे दुःख दिया
वह लोहे की सिकड़ियों से जकड़ा
गया ।
जब लों उस का बचन पूरा न हुआ १९
तब लों यहोवा का बचन माना उसे
तावता रहा ।
तब राजा ने दूत भेजके उसे निकलवा २०
लिया
अर्थात् जाति जाति के प्रभु ने उस के
बन्धन खुलवाये ।
उस ने उस को अपने भवन का स्वामी २१
और अपनी सारी सम्पत्ति का प्रभु
ठहराया ।
जिस्तें वह उस के ठहराये हुए हाकिमों २२
को अपनी इच्छा के अनुसार बंधावे
और पुरनियों को ज्ञान बतावे ।
फिर इस्राएल् मिस्र में आया २३
अर्थात् याकूब हाम् के देश में परदेशी
होके रहने लगा ।
तब यहोवा ने अपनी प्रजा को बहुत २४
फुलाया फलाया
और उसे उस के द्रोहियों से अधिक
बलवन्त किया ।
फिर उस ने मिस्रियों के मन को ऐसा २५
फेर दिया कि वे उस की प्रजा से
बैर रखने
और उस के दासों से छल बल करने
लगे ।
तब उस ने अपने दास मूसा को २६
और अपने चुने हुए हारून को भेजा ।

२७ उन्हों ने उन के बीच उस की ओर से
भान्ति भान्ति के चिन्ह
अर्थात् हाम् के देश में चमत्कार किये।
२८ उस ने अन्धकार कर दिया तब सर्वत्र
अंधियारा हो गया
और उस के दासों ने उस के बचनों
का उल्लंघन न किया।
२९ उस ने उन के जलाशयों के जल को
लोहू कर डाला
और मछलियों को मार डाला।
३० उन की भूमि में मेंढक भर गये
बल्कि उन के राजा की कोठरियों में
भी घुसे।
३१ जब उस ने आज्ञा दिई तब दंश आ गये
और उन के सारे देश में कुटकियां
आ गईं।
३२ उस ने उन के लिये जलवृष्टि की सन्ती
ओले
और उन के देश में धधकती आग
बरसाई।
३३ और उस ने उन की दाखलताओं और
अंजीर के वृक्षों को
बल्कि उन के देश के सब पेड़ों को तोड़
दिया।
३४ फिर जब उस ने आज्ञा दिई तब
टिड्डियां आईं
और अनगिनित कीड़े आये।
३५ और उन्हों ने उन के देश के अन्नादि
के सारे खेतों को खा डाला
और उन के देश के सब फलों को
चट कर गये।

फिर उस ने उन के देश के सब पहि- ३६
लौठों को
अर्थात् उन के पौरुष के सब पहिले
फल को नष्ट किया।
और अपनी प्रजा को सोना रूपा ३७
दिलाके निकाला
और किसी इस्राएली गोत्र में कोई
थकता न था।
उन के जाने से मिस्र आनन्द से भर ३८
गया
क्योंकि उन का डर मिस्रियों में समा
गया था।
तब यहोवा ने बादल छाया के लिये ३९
फैलाया
और रात को प्रकाश देने के लिये
आग प्रगट किई।
जब उस की प्रजा ने मांगा तब वह ४०
बटेरें ले आया
और उन लोगों को स्वर्गीय भोजन से
तृप्त किया।
फिर उस ने चटान फाड़ी तब पानी ४१
बह निकला
और निर्जल भूमि पर एक महानद
बहने लगा।
क्योंकि उस ने अपने पवित्र बचन ४२
और अपने दास इब्राहीम को स्मरण
किया।
सो वह अपनी प्रजा को हर्षित करके ४३
अर्थात् अपने चुने हुओं को ऊंचे
स्वर से गीत गवाते निकाल ले
चला।

४४ और उन को अन्यजातियों के देश दिये
और वे और लोगों के श्रम के फल के
स्वामी भये ।
४५ सो उन को इस मतलब से दिया गया
कि वे यहोवा की विधियों को मानें
और उस की व्यवस्था को पालन करें
याहू की स्तुति करो ।

१०६

याहू की स्तुति करो
यहोवा का धन्यबाद करो
क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सनातन है ।
२ यहोवा के पराक्रम के कर्म्मों का वर्णन
कौन कर सकता है
उस का गुणानुबाद पूरी रीति से कौन
कर सकता है ।
३ क्या ही धन्य हैं वे लोग जो न्याय पर
चलते
और हर समय धर्म्म के कर्म्म करते हैं ।
४ हे यहोवा जैसी तेरी प्रसन्नता तेरी
प्रजा पर होती है उसी के अनुसार
मुझे भी स्मरण कर
मेरे उद्धार के लिये मेरी सुधि ले ।
५ जिस्तें मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूं
और तेरी अपनाई हुई जाति का
आनन्द देखके आनन्दित होऊं
और तेरे उसी निज भाग के संग
घमण्ड करने पाऊं ।
६ हां हम ने तो अपने पितरों की नाईं
पाप किया
हम ने कुटिलता किई हम ने दुष्टता
किई है ।
हमारे पुरखा लोग जो मिस्र में थे ७
उन्हों ने यहोवा के आश्चर्य्यकर्म्मों
पर मन न लगाया
न उस की अपार करुणा को स्मरण
रक्खा
पर समुद्र तीर पर अर्थात् लाल समुद्र
के तीर ही पर उस से बिगड़ गये ।
तौभी उस ने अपने नाम के निमित्त ८
उन का उद्धार किया
जिस्तें वह अपने पराक्रम को प्रसिद्ध
करे ।
सो उस ने लाल समुद्र को घुड़का और ९
वह सूख गया
और जहां पहिले गहिरा जल था
तहां उन को ऐसा चलाया जैसा बन
में लोग चलते हैं ।
और उस ने उन्हें बैरी के पंजे से उबारा १०
और शत्रु के बश से छुड़ा लिया ।
और उन के द्रोही जल में डूब गये ११
उन में से एक भी न बचा ।
तब हमारे पुरखाओं ने उस के बचनों १२
का बिश्वास किया
और उस की स्तुति गाने लगे ।
पर वे झट उस के कामों को भूल गये १३
और उस की युक्ति के सुफल होने की
आशा छोड़ी ।
बलिक बन में अति लालसा किई १४
और निर्जल स्थान में ईश्वर की परीक्षा
किई ।
सो उस ने उन्हें मुंह मांगा बर तो १५
दिया

पर उन के शरीर में क्षयरोग उपजाया।
१६ फिर उन्हों ने छावनी में मूसा के विषय
डाह किया
और यहोवा के पवित्र जन हारून
को देखके जले।
१७ तब भूमि फटके दातान् को निगल गई
और अबीराम् की मण्डली को पेट
में डाल लिया।
१८ फिर उन की मण्डली में आग भड़की
और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गये।
१९ फिर उन्हों ने होरेब् में एक बछड़ा
बनाया
और ढली हुई मूर्त्ति को दण्डवत्
किया।
२० इस प्रकार से उन्हों ने अपनी महिमा
के मूल को
घास खानेहारे बैल की प्रतिमा से
बदल डाला।
२१ वे अपने उद्धारकर्त्ता ईश्वर को भूल
गये
जिस ने मिस्र में बड़े बड़े कार्य्य किये थे।
२२ अर्थात् हाम् के देश में आश्चर्य्यकर्म्म
और लाल समुद्र के तीर पर भयङ्कर
कर्म्म किये थे।
२३ सो उस ने कहा कि मैं उन्हें बिध्वंस
करूंगा
पर उस का चुना हुआ मूसा अपना
प्राण हथेली पर रखके लोगों के
लिये उस के साम्हने खड़ा हुआ
जिस्तें उस की जलजलाहट को ठण्ढा
करे

न हो कि वह उन्हें नष्ट कर डाले।
फिर उन्हों ने उस के दिये हुए मन- २४
भावने देश को निकम्मा ठहराया
और उस के बचन की प्रतीति न किई।
बलिक अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाये २५
और यहोवा का कहा न माना।
तब उस ने उन के विषय में किरिया २६
खाई
कि मैं उन को बन ही में नष्ट करूंगा।
और उन के बंश को अन्यजातियों के २७
बीच गिरा दूंगा
और देश देश में उन्हें छिन्न भिन्न
करूंगा।
फिर वे पोर्वाले बाल् देवता से मिल २८
गये
और मुर्दों के बलिदान का प्रसाद
खाने लगे
इस प्रकार से उन्हों ने अपने कार्य्यों २९
से यहोवा को रिस दिलाई
और मरी उन में फूट पड़ी।
तब पीनहास् ने उठके न्यायदण्ड दिया ३०
इस से मरी थम गई।
और यह उस के लेखे में पीढ़ी से ३१
पीढ़ी लों
बलिक सर्बदा के लिये धर्म गिना गया।
फिर उन्हों ने मरीबा के सोते के पास ३२
भी यहोवा का कोप भड़काया
और उन के कारण मूसा के लिये बुरा
भया।
क्योंकि जब उन्हों ने यहोवा के आत्मा ३३
का बिरोध किया

तब मूसा ने बकवाद किया ।
३४ फिर जो आज्ञा यहोवा ने उन्हें कनान्-
बासी जातियों को बिध्वंस करने
की दिई थी
उस के अनुसार उन्हों ने न किया ।
३५ पर उन्हीं जातियों से हिल मिल गये
और उन के व्यवहारों को सीख
लिया ।
३६ और उन की प्रतिमाओं की उपासना
करने लगे
जो उन के लिये फन्दा बन गईं ।
३७ बल्कि उन्हों ने अपने बेटे बेटियां
पिशाचों के लिये बलि किईं ।
३८ और निर्दोष लोगों अर्थात् अपने बेटे
बेटियों का लोहू बहाया
जिन्हें उन्हों ने कनान् की प्रतिमाओं
को बलि किया
और इस रीति देश लोहू से अपवित्र
हो गया ।
३९ और वे आप अपने कामों के द्वारा
अशुद्ध हो गये
और अपने कार्य्यों के द्वारा मानो
व्यभिचारी बन गये ।
४० तब यहोवा का कोप अपनी प्रजा पर
भड़का
और उस को अपने उसी निज भाग
से घिन आई ।
४१ सो उस ने इस्राएलियों को अन्य-
जातियों के बश में कर दिया
और उन के बैरियों ने उन पर प्रभुता
किई ।

और उन के शत्रु उन पर अन्धेर करने ४२
लगे
और वे उन शत्रुओं के हाथ तले दब
गये ।
बारम्बार यहोवा ने उन्हें छुड़ाया ४३
पर वे उस के बिरुद्ध युक्ति करते
गये
और अपने अधर्म्म के हेतु दब
गये ।
तौभी जब जब उन का चिल्लाना ४४
यहोवा के कान में पड़ा
तब तब उस ने उन के संकट पर दृष्टि
किई ।
और उन के हित अपनी बाचा को ४५
स्मरण करके
अपनी अपार करुणा के अनुसार
पछताया ।
और जो उन्हें बन्धुवे करके ले गये थे ४६
उन सब से उन पर दया कराई ।
अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा हमारा ४७
उद्धार कर
और अन्यजातियों में से एकट्ठा कर
जिस्तें हम तेरे पवित्र नाम का धन्य-
बाद करें
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय
घमण्ड करें ।
धन्य है इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा ४८
अनादिकाल से वह धन्य ही है और
अनन्तकाल लों भी रहेगा
और सारी प्रजा कहे आमेन्
याहू की स्तुति करो ॥

पांचवां भाग ।

१०७ यहोवा का धन्यबाद करो
क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सनातन है ।
२ यहोवा के छुड़ाये हुए ऐसा कहें
जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से छुड़ा
लिया है ।
३ और उन्हें देश देश से
अर्थात् पूरब पच्छिम उत्तर और लाल
समुद्र के तीर से एकट्ठा किया है ।
४ वे बन में निर्जल मार्ग पर भटके
जाते थे
और बसने के योग्य कोई नगर न
पाया ।
५ भूख और प्यास के मारे
वे बिकल हो गये ।
६ तब उन्हों ने संकट में यहोवा की
दोहाई दिई
और उस ने उन को सकेती से छुड़ाया ।
७ और उन को ठीक मार्ग पर चलाया
जिस्तें वे बसने योग्य नगर को
पहुंचें ।
८ सो लोग यहोवा की करुणा के हेतु
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के हेतु जो वह
आदमबंशियों के लिये करता है
उस का धन्यबाद करें ।
९ क्योंकि उस ने अभिलाषी जीव को
सन्तुष्ट किया
और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त
किया है ।
फिर और लोग अन्धकार और मृत्यु १०
की सी छाया में बैठे हुए
और दुःख में पड़े और बेड़ी से जकड़े
हुए थे ।
जब वे ईश्वर के बचनों के बिरुद्ध ११
चले
और परमप्रधान की सम्मति को
तिरस्कार किया ।
तब उस ने उन को श्रम से दबाया १२
वे ठोकर खाके गिर पड़े और उन को
कोई सहायक न मिला ।
सो उन्हों ने संकट में यहोवा की १३
दोहाई दिई
और उस ने उन की सकेती से उन
का उद्धार किया ।
उस ने उन को अन्धकार और मृत्यु १४
की सी छाया से उबारा
और उन के बन्धनों को काट डाला ।
सो लोग यहोवा की करुणा के हेतु १५
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के हेतु जो वह
आदमबंशियों के लिये करता है
उस का धन्यबाद करें ।
क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को १६
तोड़ा
और लोहे के बेण्डों को टुकड़े टुकड़े
किया ।
फिर मूढ़ लोग अपनी कुचाल १७
और अधर्म्म के कर्म्मों के हेतु अति
दुःखित भये ।

१८ उन का जी सब भांति के भोजन से मिचलाने लगा
और वे मृत्यु की राजधानी के फाटक लों पहुंच गये ।
१९ सो उन्हों ने संकट में यहोवा की दोहाई दिई
और उस ने उन की सकेती से उन का उद्धार किया ।
२० उस ने अपने बचन के द्वारा उन को चंगा किया
और जिस गड़हे में वे पड़े थे उस से उबारा ।
२१ सो लोग यहोवा की करुणा के हेतु
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के हेतु जो वह आदमबंशियों के लिये करता है उस का धन्यबाद करें ।
२२ और धन्यबादबलि चढ़ावें
और ऊंचे स्वर से गाते हुए उस के कामों का बर्णन करें ।
२३ फिर जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते
और महाजलनिधि पर होके अपना ब्योपार करते हैं ।
२४ वे यहोवा के कामों को
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों को जो वह गहिरे समुद्र में करता है देखते हैं ।
२५ क्योंकि जब वह आज्ञा देता है तब प्रचण्ड बयार उठके
तरंगों को उठाती है ।
२६ तब जहाजवाले आकाश लों चढ़ जाते फिर गहिरे में उतर आते हैं
और क्लेश के मारे उन के जी में जी नहीं रहता ।
वे चक्कर खाते और मतवाले की नाईं लड़खड़ाते हैं २७
और उन की सारी बुद्धि मारी जाती है ।
सो वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं २८
और वह उन को सकेती से निकालता है ।
वह आंधी से नीवा कर देता है २९
और सब तरंगों का उठना बन्द हो जाता है ।
तब वे चैन पाके आनन्दित होते हैं ३०
ऐसा करके वह उन को मन चाहे घाट में पहुंचा देता है ।
सो लोग यहोवा की करुणा के हेतु ३१
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के हेतु जो वह आदमबंशियों के लिये करता है उस का धन्यबाद करें ।
और सभा में उस को सराहें ३२
और पुरनियों के बैठक में उस की स्तुति करें ।
फिर वह महानदों को बन बना डालता ३३
और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है ।
वह फलवन्त भूमि को नोनी करता है ३४
सो रहनेहारों की दुष्टता के हेतु होता है ।
फिर वह बन को जल का ताल ३५
बनाता है

और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है ।
३६ और वहां वह भूखों को बसाता है कि वे बसने योग्य नगर सिद्ध करें ।
३७ और खेती करें और दाख की बारियां लगावें
और भांति भांति के फल उपजा लेवें ।
३८ और वह उन को ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं
और उन के पशुओं को भी वह घटने नहीं देता ।
३९ फिर अन्धेर बिपत्ति और शोक के कारण से
वे घटते और दब जाते हैं ।
४० तब हाकिमों को अपमान से लादकर
और निर्जन स्थानों में बेराह भटकाकर ।
४१ वह दरिद्रों को दुःख से छुड़ाके ऊंचे स्थान पर रखता
और उन के परिवारों को भेड़ बकरियों की नाईं बढ़ाता है ।
४२ सीधे लोग इसे देखके आनन्दित होते हैं
और सब कुटिल लोग अपने मुंह बन्द करते हैं ।
४३ जो कोई बुद्धिमान है सो इन बातों पर ध्यान करेगा
और यहोवा के करुणामय कर्म्मों को बिचारेगा ।

१०८ दाऊद रचित गीत और स्तोत्र ।

१ हे परमेश्वर मेरा हृदय स्थिर है
मैं गाऊंगा बलिक अपने आत्मा की सारी शक्ति से भजन गाऊंगा ।
हे सारङ्गी और बीणा जागो २
मैं आप पह फटते जाग उठूंगा ।
हे यहोवा मैं जाति जाति के लोगों के बीच तेरा धन्यबाद करूंगा ३
और समाज समाज के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊंगा ।
क्योंकि तेरी करुणा इतनी बड़ी है कि आकाश से भी ऊंची है ४
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है ।
हे परमेश्वर स्वर्ग से भी ऊंचा हो ५
और तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर प्रगट होवे ।
इस लिये कि तेरे प्यारे छुड़ाये जावें ६
तू अपने दहिने हाथ से बचा और हम को उत्तर दे ।
परमेश्वर जो पवित्र है सो बोला है ७
इस कारण मैं प्रफुल्लित होके शकेम् को बांट लूंगा
और सुक्कोत् के खड्ड को नपवा लेऊंगा ।
गिलाद् मेरा मनश्शे भी मेरा ही है ८
और एप्रैम् मेरे सिर का टोप
और यहूदा मेरा राजदण्ड ठहरा है ।
मोआब् मानो मेरे धोने धाने का पात्र है ९
एदोम् पर मैं अपना जूता फेंकूंगा
पलिश्तियों पर मैं जयजयकार करूंगा ।
कौन मुझे उस गढ़वाले नगर में पहुंचावेगा १०

फिर एदोम् लों मेरी अगुवाई किस
ने किई है ।
११ हे परमेश्वर तू जिस ने हमें मन से
उतार दिया
और हे परमेश्वर तू जो हमारी सेना
के संग पयान नहीं करता क्या तू
ही ने हमारी अगुवाई नहीं किई ।
१२ हमारी सहायता करके द्रोहियों से
छुड़ा
क्योंकि मनुष्यों से जो छुटकारा होता
है सो व्यर्थ ही है ।
१३ परमेश्वर से शक्ति पाके हम बीरता
दिखावेंगे
क्योंकि हमारे द्रोहियों को वही
रौंदेगा ।

१०९ प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र ।

१ हे परमेश्वर तू जो मेरी ओर से स्तुति
के योग्य है चुप न रह ।
२ क्योंकि दुष्ट और कपटी मनुष्यों ने मुझे
निगलने को मुंह बाया है
वे मेरे विषय झूठ बोले हैं ।
३ और उन्हों ने बैर के बचन कहके
मुझे घेरा है
और अकारण मुझ से लड़े हैं ।
४ मेरे प्रेम के बदले में वे मुझ से बिरोध
करते हैं
पर मैं तो प्रार्थना ही में लवलीन
रहता हूं ।
५ उन्हों ने भलाई के पलटे में मुझ से
बुराई किई
और मेरे प्रेम के बदले में बैर रक्खा
है ।
तू मेरे द्रोही को किसी दुष्ट के अधि- ६
कार में रख
और कोई बिरोधी उस की दहिनी
ओर खड़ा रहे ।
जब उस का न्याय किया जावे तब ७
वह दोषी निकले
और उस की प्रार्थना पाप गिनी जावे ।
उस की आयुर्दा थोड़ी होवे ८
और उस के पद को दूसरा लेवे ।
उस के लड़केबाले बपमूए होवें ९
और उस की स्त्री बिधवा हो जावे ।
और उस के लड़के मारे मारे फिरें १०
और भीख मांगा करें
उन का घर उजड़ जावे और उन को
उस से दूर जाके टुकड़े मांगना पड़े ।
महाजन फन्दा लगाके उस का सर्वस्व ११
ले लेवे
और परदेशी उस की कमाई को लूटें ।
कोई न होवे जो उस पर आगे को १२
करुणा करे
और जब वह मरे तब उस के बालकों
पर कोई अनुग्रह न करे ।
उस का बंश नष्ट होवे १३
तीसरी पीढ़ी में उस का नाम मिट
जावे ।
उस के पितरों का अधर्म्म यहोवा को १४
स्मरण रहे
और उस की माता का पाप न मिटने
पावे ।

१५ बल्कि उस के माता पिता का पाप
निरन्तर यहोवा के सन्मुख रहे
कि वह उन का नाम पृथिवी पर से
मिटा डाले।
१६ यह सब इस कारण होवे कि वह कृपा
करना न जानता था
पर दीन और दरिद्र जन के पीछे
पड़ता था
और खेदित मनवाले के मार डालने
पर तत्पर रहता था।
१७ वह स्राप देने में प्रीति रखता था
इस लिये स्राप उस पर आ पड़ा
और वह आशीर्बाद देने से प्रसन्न न
होता था सो वह उस पर फलित
न हुआ।
१८ बल्कि स्राप देना ही उस का ओढ़ना
बिछौना था
सो वह उस के भीतर जल की नाईं
पैठा
और तेल के समान उस की हड्डियों
में समा गया।
१९ वह उस के लिये ओढ़ने का काम देवे
और फेंटे की नाईं उस की कटि में
नित्य कसा रहे।
२० यहोवा की ओर से मेरे बिरोधियों
को यही बदला मिले
और जो मेरे बिरुद्ध बुरा कहते हैं उन
का यही भाग होवे।
२१ पर हे यहोवा प्रभु तू मुझ से अपने
नाम के निमित्त व्यवहार कर
तेरी करुणा तो बड़ी है
सो तू मुझे छुटकारा दे।
क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं २२
और मेरा हृदय घायल हुआ है।
मैं ढलती हुई छाया की नाईं जाता २३
रहा
मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूं।
उपवास करते करते मेरे घुटने निर्बल २४
हो गये
और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख
गया हूं।
और मेरी तो उन लोगों से नामधराई २५
हुई
जब वे मुझे देखते तब सिर हिलाते हैं।
हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी सहायता २६
कर
अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार
कर।
तब वे जानेंगे कि यह तेरा कार्य्य है २७
और हे यहोवा तू ही ने यह किया है।
वे तो कोसते रहें पर तू आशीष दे २८
वे उठें तो उठें पर लज्जित होवें परन्तु
मैं तेरा दास आनन्दित होऊं।
मेरे बिरोधियों को अनादररूपी वस्त्र २९
पहिनाया जावे
और उन की लज्जा ओढ़ने का काम
देवे।
मैं यहोवा का बहुत धन्यबाद करूंगा ३०
और बहुत से लोगों के बीच उस की
स्तुति करूंगा।
क्योंकि वह दरिद्र जन की दहिनी ३१
ओर खड़ा रहेगा

जिस्तें उस के प्राण को कुटिल न्यायियों
से बचावे ।

११० दाऊद का स्तोत्र ।

१ मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है
कि तू मेरे दहिने विराजमान हो
और जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे
चरणों की चौकी न कर देऊं तब
लों वहीं विराजता रह ।
२ यहोवा तेरे पराक्रम का राजदण्ड
सिय्योन् से बढ़ावेगा
तू अपने शत्रुओं के मध्य में शासन कर ।
३ तेरी प्रजा के लोग तेरी सेना के
निकलने[1] के दिन आप ही स्वेच्छा-
बलि बनते हैं
तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभाय-
मान हो
मानो भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस
की बूंदें बनके तेरे पास आते हैं ।
४ यहोवा ने किरिया खाई और न
पछतावेगा
कि तू मेलकीसेदेक् की रीति पर
सर्व्वदा का याजक है ।
५ प्रभु तेरी दहिनी ओर होके
अपने कोप के दिन राजाओं को मार
मारके चूर कर देगा ।
६ तू जाति जाति में न्याय चुकावेगा
रणभूमि लोथों से भर जावेगी
तू दूर दूर के देशों में प्रधान को मार
मारके चूर कर देगा ।
तू मार्ग में चलता हुआ नदी का जल ७
पीवेगा
इस कारण तू सिर उठावेगा ।

१११ याह की स्तुति करो १

मैं सारे मन से यहोवा का
धन्यवाद करूंगा
सो सीधे लोगों की गोष्ठी में और
मण्डली में भी करूंगा ।
यहोवा के काम बड़े हैं २
जितने उन से प्रसन्न रहते हैं सो उन
का भेद पूछ पूछके जान लेते हैं ।
उस के कर्म्म विभवमय और ऐश्वर्य्य- ३
मय होते हैं
और उस का धर्म्म अनन्तकाल लों
बना रहेगा ।
उस ने अपने आश्चर्य्यकर्म्मों का स्मरण ४
कराया है
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है ।
उस ने अपने डरवैयों को आहार ५
दिया है
वह अपनी वाचा को सदा लों स्मरण
रक्खेगा ।
उस ने अपने कामों से अपना सामर्थ्य ६
अपनी प्रजा को दिखाके
उस को अन्यजातियों का भाग दिया
है ।
उस के हाथों के काम सच्चाई और ७
न्याय से होते हैं
उस के सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं ।
वे अनन्तकाल लों अटल रहेंगे ८
वे सच्चाई और सीधाई से किये हुए हैं ।

(१) अथवा, तेरे बल प्रगट होने.

९ उस ने अपनी प्रजा का उद्धार कराया है
उस ने अपनी बाचा को अपनी शक्ति से सदा के लिये ठहराया है
उस का नाम पवित्र और भययोग्य है।
१० बुद्धि का मूल यहोवा का भय है
जितने उस की आज्ञाओं को मानते हैं उन की बुद्धि अच्छी होती है
यहोवा की स्तुति अनन्तकाल लों बनी रहेगी।

११२

याह् की स्तुति करो
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है
और उस की आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है।
२ उस का बंश पृथिवी पर पराक्रमी होगा
सीधे लोगों का बंश आशीष पावेगा।
३ धर्म्मी के घर में धन सम्पत्ति रहती है
और उस का धर्म्म अनन्तकाल लों बना रहेगा।
४ सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच ज्योति उदय होती है
वे अनुग्रहकारी दयावन्त और धर्म्मी होते हैं।
५ जो पुरुष अनुग्रह करता और उधार देता है उस का कल्याण होता है
वह न्याय में अपने मुकद्दमे को जीतेगा।
६ वह तो सदा लों अटल रहेगा
धर्म्मी का स्मरण सदा लों बना रहेगा।
७ वह बुरे समाचार से नहीं डरता
उस का हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है।
८ उस का हृदय सम्भला हुआ है सो वह न डरेगा
और अन्त में वह अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होवेगा।
९ उस ने अपना धन उदारता से दरिद्रों को दान कर दिया
उस का धर्म्म अनन्तकाल लों बना रहेगा
सो उस की महिमा का सींग ऊंचा होवेगा।
१० दुष्ट इस बात को देखके कुढ़ेगा
वह दांत पीस पीसके गल जावेगा
दुष्टों की लालसा पूरी न होवेगी।

११३

१ याह् की स्तुति करो
हे यहोवा के दासो स्तुति करो
यहोवा के नाम की स्तुति करो।
२ यहोवा का नाम
अब से ले सर्व्वदा लों धन्य कहा जावे।
३ उदयाचल से ले अस्ताचल लों
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।
४ यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान् है
और उस की महिमा स्वर्ग से भी ऊंची है।
५ हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है
जो ऊंचे पर बिराजमान है।
६ और तौभी स्वर्ग और पृथिवी पर
दृष्टि करने के लिये नीचे आता है।
७ वह कंगाल को मिट्टी पर से

और दरिद्र को घूरे पर से उठाके
ऊंचा करता है ।
८ जिस्तें उस को प्रधानों के संग
अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग
बैठावे ।
९ वह बांझ को लड़कोरी बनाता
और उस को लड़कों की आनन्द
करनेहारी माता बनाता है
याह् की स्तुति करो ।

११४ जब इस्राएलियों ने मिस्र से
पयान किया
अर्थात् याकूब के घरानेवाले अन्य-
भाषावालों के बीच से निकल आये।
२ तब यहूदा यहोवा का पवित्रस्थान
और इस्राएल् उस की प्रजा हो
गया ।
३ समुद्र इस बात को देखके भागा
यर्दन नदी उलटी बही ।
४ पहाड़ मेंढ़ों की नाईं उछलने लगे
और पहाड़ियां भेड़ बकरियों के बच्चों
के समान कूद उठीं ।
५ हे समुद्र तुझे क्या भया कि तू भागा
और हे यर्दन तुझे क्या भया कि तू
उलटी बही ।
६ हे पहाड़ो तुम्हें क्या हुआ कि तुम
मेंढ़ों की नाईं उछले
और हे पहाड़ियो तुम्हें क्या हुआ
कि तुम भेड़ बकरियों के बच्चों के
समान कूदीं ।
७ अब हे पृथिवी प्रभु के साम्हने थरथरा
उठ
अर्थात् याकूब के परमेश्वर के साम्हने
कांप ।
क्योंकि वह चटान को जल का ८
ताल
और चकमक के पत्थर को जल का
सोता बना डालता है ।

११५ हे यहोवा हमारी नहीं १
हमारी नहीं
पर अपने ही नाम की महिमा बढ़ा
सो अपनी करुणा और अपनी सच्चाई
के निमित्त कर ।
अन्यजातिवाले क्यों कहने पावें २
कि कहो तो उन का परमेश्वर कहां
है ।
हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है ३
उस ने जो चाहा सो किया है ।
उन लोगों की प्रतिमाएं सोना चांदी ४
ही हैं
वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं ।
उन के मुंह तो रहता है पर वे बोल ५
नहीं सकतीं
उन के आंखें तो रहती हैं पर वे
देख नहीं सकतीं ।
उन के कान तो रहते हैं पर वे सुन ६
नहीं सकतीं
उन के नाक तो रहती है पर वे सूंघ
नहीं सकतीं ।
उन के हाथ तो रहते हैं पर वे स्पर्श ७
नहीं कर सकतीं
उन के पांव तो रहते हैं पर वे चल
नहीं सकतीं

और अपने कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं
निकाल सकतीं।
८ जैसी वे हैं तैसे ही उन के बनानेहारे
भी हो जावेंगे
बलिक जितने उन पर भरोसा रखते
हैं सो भी वैसे ही होवेंगे।
९ हे इस्राएलियो यहोवा पर भरोसा
रक्खो
तुम्हारा सहायक और ढाल वही
ठहरा है।
१० हे हारून के घरानेवालो यहोवा पर
भरोसा रक्खो
तुम्हारा सहायक और ढाल वही
ठहरा है।
११ हे यहोवा के डरवैयो यहोवा पर
भरोसा रक्खो
तुम्हारा सहायक और ढाल वही
ठहरा है।
१२ यहोवा ने हम को स्मरण किया वह
आशीष देगा
वह इस्राएल् के घराने को आशीष देगा
और विशेष करके हारून के घराने
को आशीष देवेगा।
१३ क्या छोटे क्या बड़े
जितने यहोवा के डरवैये हैं वह उन्हें
आशीष देवेगा।
१४ यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कों
को भी
अधिक बढ़ाता जावे।
१५ यहोवा जो स्वर्ग और पृथिवी का
कर्त्ता है
उस की ओर से तुम धन्य हो।
स्वर्ग जो है सो तो यहोवा का है १६
पर पृथिवी उस ने आदमवंशियों को
दिई है।
मुर्दे जो हैं और जितने मौनलोक में १७
उतर गये हैं उन में से तो कोई
याह की स्तुति नहीं कर सकता।
पर हम लोग याह् को १८
अब से ले सर्बदा लों धन्य कहते रहेंगे
याह् की स्तुति करो।

११६ मेरे प्रेम उपजा है इस लिये १
कि यहोवा ने
मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।
उस ने जो मेरी ओर कान लगाया है २
इस लिये मैं जीवन भर उस को पुकारा
करूंगा।
मृत्यु की रस्सियां मेरी चारों ओर थीं ३
और अधोलोक की सकेती में पड़ा
मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा।
तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना किई ४
मैं ने कहा हे यहोवा बिनती सुनके
मेरे प्राण को बचा ले।
यहोवा अनुग्रहकारी और धर्म्मी है ५
और वही हमारा परमेश्वर दया
करनेहारा है।
यहोवा भोलों की रक्षा करता है ६
मैं बलहीन हो गया था और उस ने
मेरा उद्धार किया।
हे मेरे मन तू अपने बिश्रामस्थान में ७
फिर आ
क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है।

८ हे यहोवा तू ने मेरे प्राण को मृत्यु से
मेरी आंख को आंसू बहाने से
और मेरे पांव को ठोकर खाने से
बचाया है ।
९ मैं जीवन के लोक में
यहोवा को अपने साम्हने जानके
चलता रहूंगा ।
१० मैं ने जो ऐसा कहा सो बिश्वास
करके कहा
पर मैं तो बहुत ही दुःखित हुआ था ।
११ बलिक मैं ने उतावली से कहा था
कि सारे मनुष्य झूठे हैं ।
१२ पर अब यहोवा ने मेरे जितने उपकार
किये हैं
उन का बदला मैं उस को क्या देऊं ।
१३ मैं उद्धाररूपी कटोरा उठाके
यहोवा से प्रार्थना करूंगा ।
१४ मैं यहोवा के लिये अपनी मनौतियां
पूरी करूंगा
सो प्रगट में उस की सारी प्रजा के
साम्हने करूंगा ।
१५ यहोवा के भक्तों की मृत्यु
उस के लेखे में अनमोल है ।
१६ हे यहोवा बिनती सुन मैं तो तेरा
दास हूं
मैं तेरा दास और तेरी दासी का बेटा हूं
तू ने मेरे बन्धन खोल दिये हैं ।
१७ मैं तुझ को धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा
और तुझ से प्रार्थना करूंगा ।
१८ मैं यहोवा के लिये अपनी मनौतियां
पूरी करूंगा
सो प्रगट में उस की सारी प्रजा के
साम्हने करूंगा ।
अर्थात् यहोवा के भवन के आंगनों में १९
और हे यरूशलेम् तेरे ही मध्य में
करूंगा
याह् की स्तुति करो ।

११७

हे जाति जाति के सब लोगो १
यहोवा की स्तुति करो
हे समाज समाज के सब लोगो उस
की प्रशंसा करो ।
क्योंकि उस की करुणा हमारे ऊपर २
छाई हुई है
और यहोवा की सच्चाई सनातन है
याह् की स्तुति करो ।

११८

यहोवा का धन्यबाद करो १
क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सनातन है ।
इस्राएली लोग कहें २
कि उस की करुणा सनातन है ।
हारून के घरानेवाले कहें ३
कि उस की करुणा सनातन है ।
यहोवा के डरवैये कहें ४
कि उस की करुणा सनातन है ।
मैं ने सकेती में याह् को पुकारा ५
और याह् ने मुझे उत्तर देके बेखटके
किया है ।
यहोवा मेरी ओर है सो मैं न ६
डरूंगा
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ।
यहोवा मेरी ओर और मेरे सहायकों ७
में का है

सो मैं अपने बैरियों पर दृष्टि करके
सन्तुष्ट होऊंगा ।
८ यहोवा की शरण लेनी
मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है ।
९ यहोवा की शरण लेनी
प्रधानों पर भी भरोसा रखने से
उत्तम है ।
१० सब जातियां मुझ को घेरें तो घेरें
पर यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें
नष्ट कर डालूंगा ।
११ वे मुझ को घेरें तो घेरें वे मुझे घेर
रक्खें तो रक्खें
पर यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें
नष्ट कर डालूंगा ।
१२ वे मुझे मधुमक्खियों की नाईं घेरें तो
घेरें पर कांटों की आग की नाईं
बुझ जावेंगे
क्योंकि यहोवा के नाम से मैं निश्चय
उन्हें नष्ट कर डालूंगा ।
१३ हे शत्रु तू ने तो मुझे बड़ा धक्का
दिया था कि मैं गिर पड़ूं
पर यहोवा ने मेरी सहायता किई ।
१४ याहू मेरे बल और गीत का कारण है
और वह मेरा उद्धारकर्त्ता हो गया है ।
१५ धर्म्मियों के तम्बुओं में ऊंचे स्वर का
गान और उद्धार के आनन्द का
शब्द सुन पड़ता है
यहोवा अपने दहिने हाथ से पराक्रम
का काम करता है ।
१६ यहोवा का दहिना हाथ महान्
हुआ है
यहोवा अपने दहिने हाथ से पराक्रम
का काम करता है ।
मैं मरूंगा नहीं जीता रहूंगा १७
और याहू के कामों का बर्णन करता
रहूंगा ।
याहू ने मेरी बड़ी ताड़ना तो किई थी १८
पर मुझे मृत्यु के मुंह में पड़ने नहीं
दिया ।
मेरे लिये धर्म्म के द्वार खोलो १९
मैं उन से प्रवेश करके याहू का धन्य-
बाद करूंगा ।
यहोवा का द्वार यही है २०
उस से धर्म्मी ही प्रवेश करने पावेंगे ।
हे यहोवा मैं तेरा धन्यबाद करूंगा २१
क्योंकि तू ने मुझे उत्तर दिया
और मेरा उद्धारकर्त्ता हो गया है ।
घर के बनानेहारों ने जिस पत्थर को २२
निकम्मा ठहराया था
सो कोने के सिरे का पत्थर हो गया
है ।
यह तो यहोवा ही की ओर से भया २३
यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है ।
यह वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है २४
हम उस में मगन और आनन्दित
होवें ।
हे यहोवा बिनती सुन कृपा करके २५
उद्धार कर
हे यहोवा बिनती सुन कृपा करके
हमारे काम को सुफल कर ।
धन्य है वह जो यहोवा के नाम से २६
आता है

हे आनेहारो हम ने तुम को यहोवा
के घर से आशीर्बाद दिया है ।
२७ यहोवा ईश्वर है और उस ने हम को
प्रकाश दिया है
पर्ब्ब के यज्ञपशुओं को बांधो बल्कि
बेदी के पास लों भी बांधो ।
२८ हे यहोवा तू मेरा ईश्वर है सो मैं
तेरा धन्यबाद करूंगा
तू मेरा परमेश्वर है सो मैं तुझ को
सराहूंगा ।
२९ यहोवा का धन्यबाद करो क्योंकि वह
भला है
और उस की करुणा सनातन है ।

११९

आलेप्[1] ।

१ क्या ही धन्य हैं वे लोग जो खराई से
यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं ।
२ क्या ही धन्य हैं वे लोग जो उस के
चितौनी के बचनों पर चलते
और सारे मन से उस के पास आते हैं ।
३ उन से तो कुटिलता नहीं होती
वे उस के मार्गों में चलते हैं ।
४ हे यहोवा तू ने अपने उपदेश इस
लिये दिये हैं
कि वे यत्न से पाले जावें ।
५ यदि मेरी चालचलन तेरी विधियों
के पालने के लिये दृढ़ हो जावे
तो क्या ही उत्तम होगा ।
जब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर ६
चित्त लगाये रक्खूंगा
तब मैं लज्जित न होऊंगा ।
जब मैं तेरे धर्म्ममय न्यायबचनों को ७
सीखूंगा
तब तेरा धन्यबाद सीधे मन से
करूंगा ।
मैं तेरी विधियों को पालूंगा ८
तू मुझे सर्बथा न तज ।

बेत् ।

जवान अपनी चाल को किस उपाय ९
से शुद्ध करे
तेरे बचन के अनुसार सावधान रहने
से उस को शुद्ध करेगा ।
मैं सारे मन से तेरे पास आया हूं १०
मुझे अपनी आज्ञाओं की बाट से
भटकने न दे ।
मैं ने तेरे बचन को अपने हृदय में ११
रख छोड़ा है
जिस्तें तेरे बिरुद्ध पाप न करूं ।
हे यहोवा तू धन्य है १२
मुझे अपनी सब विधि सिखा ।
मैं ने तेरे कहे हुए सब न्यायबचनों का १३
बर्णन खोल खोलके किया है ।
मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से ऐसा १४
हर्षित हुआ हूं
जैसे कोई जगत भर का धन पाके होवे ।
मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा १५
और तेरे बताये हुए मार्ग की ओर
दृष्टि रक्खूंगा ।

(१) आलेप् बेत् इत्यादि इब्री भाषा के अक्षर हैं और मूल में इस स्तोत्र के एक एक खण्ड के आठों वाक्यों के आदि में वही अक्षर है जिस का नाम हम ने उस खण्ड से पहिले लिखा है ।

१६ मैं तेरी विधियों को सुख का मूल जानूंगा
और तेरे बचन को न भूलूंगा।

गामेल्।

१७ मुझ अपने दास का उपकार कर तब
मैं जीता रहूंगा
और तेरे बचन पर चलता रहूंगा।
१८ मेरे नेत्र खोल कि मैं देख सकूं
तब तेरी व्यवस्था में मुझे अद्भुत बातें
देख पड़ेंगी।
१९ मैं तो पृथिवी पर मुसाफिर हूं
सो अपनी आज्ञाओं को मुझ से गुप्त
न रख।
२० मेरा मन तेरे न्यायबचनों की अभि-
लाषा के कारण
हर समय खेदित रहता है।
२१ तू ने अभिमानियों को जो स्रापित हैं
घुड़का है
क्योंकि वे तेरी आज्ञाओं की बाट से
भटकते हैं।
२२ मेरी नामधराई और अपमान दूर कर
क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हूं।
२३ हाकिम लोग भी बैठे हुए आपस में
मेरे बिरुद्ध बातें करते थे
पर मैं तेरा दास तेरी विधियों पर
ध्यान करता रहा।
२४ फिर तेरे चितौनी के बचन मेरे सुखमूल
और मेरे मंत्री ठहरते हैं।

दालेत्।

२५ मैं मिट्टी में मिल गया हूं
तू अपने बचन के अनुसार मुझ को
जिला।
मैं ने अपनी चालचलन का तुझ से २६
बर्णन किया और तू ने मेरी सुनी
सो तू मुझ को अपनी सब विधि सिखा।
अपने उपदेशों का मार्ग मुझे बता २७
तब मैं तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों पर ध्यान
करूंगा।
मैं उदासी के मारे गल चला हूं २८
सो तू अपने बचन के अनुसार मुझे
सम्भाल।
झूठ का व्यवहार मुझ से दूर कर २९
और करुणा करके अपनी व्यवस्था का
ज्ञान मुझे दे।
मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है ३०
तेरे न्यायबचनों की ओर मैं चित्त
लगाये रहता हूं।
मैं तेरे चितौनी के बचनों में लवलीन हूं ३१
हे यहोवा मुझे लज्जित न कर।
जब तू मेरे मन को बढ़ावेगा ३२
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ता
जाऊंगा।

हे।

हे यहोवा मुझे अपनी विधियों का ३३
मार्ग दिखा दे
तब मैं उसे अन्त लों पकड़े रहूंगा।
मुझे समझ दे मैं तेरी व्यवस्था को ३४
पकड़े रहूंगा
बल्कि सारे मन से उस पर चलूंगा।
अपनी आज्ञाओं की डगर में मुझ को ३५
चला
क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं।
मेरे मन को लोभ की ओर नहीं ३६

पर अपनी चितौनियों ही की ओर फेर।
३७ मेरे नेत्रों को व्यर्थ बस्तुओं की ओर
से फेर दे
तू अपने मार्ग में चलने के लिये मुझे
जिला ।
३८ तेरा जो बचन तेरे भय माननेहारों
के लिये है
उस को मुझ अपने दास के निमित्त
भी पूरा कर ।
३९ जिस नामधराई से मैं डरता हूं सो
होने न दे
क्योंकि तेरे न्यायबचन उत्तम हैं ।
४० देख मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं
सो तू जो धर्म्मी है इस से मुझ को
जिला ।

वाव ।

४१ हे यहोवा तेरी करुणा मुझ पर भी
होवे
अपने बचन के अनुसार मेरा उद्धार
कर ।
४२ तब मैं अपने चिढ़ानेहारे को कुछ
उत्तर दे सकूंगा
क्योंकि मेरा भरोसा तेरे बचन पर है।
४३ सो मैं तेरे सत्य बचन के प्रचार करने
से न रुकूं
मेरी आशा तेरे न्यायबचनों पर है ।
४४ तब मैं तेरी व्यवस्था पर निरन्तर
चलता रहूंगा
और उसे अनन्तकाल लों मानता
रहूंगा ।
४५ और मैं बेखटके चलूंगा
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों की सुधि
रक्खी है ।
और मैं तेरे चितौनी के बचनों की ४६
चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूंगा
और संकोच न करूंगा ।
और मैं तेरी आज्ञाओं को सुख का ४७
मूल जानूंगा
क्योंकि मैं उन में प्रीति रखता हूं ।
और मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन ४८
में मैं प्रीति रखता हूं हाथ फैलाऊंगा
और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा।

जैन् ।

जो बचन तू ने मुझ अपने दास को ४९
दिया है उसे स्मरण कर
क्योंकि तू ने मुझे आशा तो दिई है।
मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है ५०
क्योंकि तेरे बचन के द्वारा मैं जी
गया हूं ।
अभिमानियों ने मुझे अत्यन्त ठट्ठे में ५१
उड़ाया है
पर मैं तेरी व्यवस्था की बाट से नहीं
हटा ।
हे यहोवा मैं ने तेरे प्राचीनकालवाले ५२
न्यायबचनों को स्मरण करके
शान्ति पाई है ।
जो दुष्ट लोग तेरी व्यवस्था को छोड़ ५३
देते हैं
उन के कारण मैं सन्ताप से जलता हूं ।
जहां मैं परदेशी होके रहता हूं तहां ५४
तेरी विधियां
मेरे गीत गाने के कारण बनी हैं ।

५५ हे यहोवा मैं ने रात्रिसमय तेरा नाम
स्मरण किया
और तेरी व्यवस्था को पाला है।
५६ यह मुझ को इसी कारण हुआ
कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था।

हेत्।

५७ मैं ने कहा है कि यहोवा मेरा भाग
ठहरा है
सो मैं ने तेरे बचनों के अनुसार चलना
ठाना है।
५८ मैं ने सारे मन से तुझे मनाया
सो अपने बचन के अनुसार मुझ पर
अनुग्रह कर।
५९ मैं ने अपनी चालचलन को सोचा
और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया।
६० मैं ने तेरी आज्ञाओं के पालने में
बिलम्ब नहीं बल्कि फुर्त्ती किई।
६१ यद्यपि मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध
गया
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।
६२ तेरे धर्म्ममय न्यायबचनों के कारण
मैं आधी रात को तेरा धन्यबाद करने
को उठूंगा।
६३ जितने तेरा भय मानते और तेरे
उपदेशों पर चलते हैं
उन का मैं संगी हूं।
६४ हे यहोवा तेरी करुणा पृथिवी में
भरी हुई है
सो तू मुझे अपनी सब विधि सिखा।

तेत।

६५ हे यहोवा तू ने अपने बचन के अनुसार
मुझ अपने दास के संग भला किया है।
मुझे भली विवेकशक्ति और ज्ञान दे ६६
क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का बिश्वास
किया है।
उस से पहिले कि मैं दुःखित भया मैं ६७
भटकता था
पर अब मैं तेरे बचन को मानता हूं।
तू भला है और भला ही करता भी है ६८
सो मुझे अपनी सब विधि सिखा।
अभिमानियों ने मेरे बिरुद्ध झूठ बात ६९
गढ़ी है
पर मैं तेरे उपदेशों को सारे मन से
पकड़े रहूंगा।
उन का हृदय तो पत्थर हो गया है ७०
पर मैं तेरी व्यवस्था को सुख का मूल
जानता हूं।
मुझे जो दुःख भया सो मेरे लिये भला ७१
ही भया
क्योंकि इस से मैं तेरी विधियों को
सीख सका।
तेरी दिई हुई व्यवस्था मेरे लिये ७२
हजारों रूपैयों और मुहरों से भी
भली है।

याद्।

तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा ७३
गया हूं
सो मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं
को सीखूं।
तेरे डरवैये मुझे देखके आनन्दित होंगे ७४
क्योंकि मैं ने तेरे बचन पर आशा
लगाई है।

७५ हे यहोवा मैं जान गया कि तेरे न्यायबचन धर्म्ममय हैं
और तू ने जो सच्चा है इसी से मुझे दुःख दिया है ।
७६ कृपा कर और मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे
क्योंकि तू ने मुझ अपने दास को ऐसा ही बचन दिया है ।
७७ तेरी दया मुझ पर पूरी पूरी होवे तब मैं जी जाऊंगा
क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरा सुखमूल है ।
७८ अभिमानी लोग लज्जित होवें क्योंकि उन्हों ने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया
पर मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा ।
७९ जो तेरा भय मानते हैं सो मेरी ओर फिरें
तब वे तेरी चितौनियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
८० मैं तेरी विधियों को खराई से पालूं न हो कि मुझे लज्जित होना पड़े ।

काफ् ।

८१ मैं तुझ से उद्धार पाने की आशा करते करते थक गया
पर मुझे तेरे बचन पर आशा रहती है ।
८२ मेरे नेत्र तेरे बचन के पूरे होने की आशा करते करते रह गये
और अब लों मैं कहता आया हूं कि तू मुझे कब शान्ति देवेगा ।
८३ क्योंकि मैं धूएं में टंगी हुई कुप्पी के समान सूख गया हूं
तौभी तेरी विधियों को नहीं भूला ।
मुझ तेरे दास को और कितने दिन ८४
जीता रहना है
तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देवेगा ।
अभिमानी लोग तेरी व्यवस्था के अनु- ८५
सार नहीं चलते
और उन्हों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं ।
तेरी सब आज्ञाएं बिश्वासयोग्य हैं ८६
वे भूल में आके मेरे पीछे पड़े हैं तू मेरी सहायता कर ।
वे मुझ को पृथिवी पर से मिटा डालने ८७
ही पर थे
पर मैं ने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा ।
अपनी करुणा के अनुसार मुझ को ८८
जिला
तब मैं तेरी दिई हुई चितौनी को पालूंगा ।

लामेद् ।

हे यहोवा तेरा बचन ८९
स्वर्ग में सदा लों स्थिर रहता है ।
तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी ९०
रहती है
जब से तू ने पृथिवी को स्थिर किया तब से वह बनी है ।
आकाश और पृथिवी दोनों आज के ९१
दिन लों तेरे न्यायबचनों के अनु-
सार ठहरे हैं
क्योंकि सारी सृष्टि तेरे अधीन है ।
यदि मेरा सुखमूल तेरी व्यवस्था न होती ९२
तो मैं दुःख के समय ही नष्ट हो जाता ।

९३ मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा
क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे
जिलाया है।
९४ मैं तेरा ही हूं तू मेरा उद्धार कर
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को सोचता
रहता हूं।
९५ दुष्ट लोग मेरा नाश करने के लिये मेरी
घात में लगे हैं
पर मैं तेरे उपदेशों को बिचारता हूं
९६ जितनी बातें पूरी जान पड़ती हैं उन
सब को मैं ने अधूरी पाया है
पर तेरी आज्ञा का अति बिस्तार है।

मेम्।

९७ अहा मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति
रखता हूं
दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा
रहता है।
९८ तेरी आज्ञाओं के द्वारा मैं अपने शत्रुओं
से अधिक बुद्धिमान हूं
क्योंकि वे सदा मुझे स्मरण रहती हैं।
९९ मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक
समझ रखता हूं
क्योंकि मेरा ध्यान तेरे चितौनी के
बचनों पर लगा है।
१०० मैं पुरनियों से भी अधिक प्रवीण हूं
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हूं।
१०१ मैं ने अपने को सारी बुरी बाटों से
रोक रक्खा है
जिस्तें तेरे बचन के अनुसार चल सकूं।
१०२ मैं तेरे न्यायबचनों के मार्ग से नहीं
हटा
क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दिई है।
तेरे बचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं १०३
वे मेरे मन को मधु से भी मधुर
लगते हैं।
तेरे उपदेशों से मैं प्रवीण हो जाता हूं १०४
इस कारण मैं सब असत् मार्गों से
बैर रखता हूं।

नून्।

तेरा बचन मेरे पांव धरने के लिये १०५
दीपक
और मेरी डगर के लिये उजियाला
ठहरा है।
मैं ने किरिया खाई और ठाना भी है १०६
कि मैं तेरे धर्म्ममय न्यायबचनों के
अनुसार चलूंगा।
मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हूं १०७
हे यहोवा अपने बचन के अनुसार
मुझे जिला।
हे यहोवा मेरी स्तुतिरूपी स्वेच्छाबलि १०८
कृपा करके अंगीकार कर
और अपने न्यायबचन मुझे सिखा।
मेरा प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर १०९
रहता है
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं
भूला।
दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है ११०
पर मैं तेरे उपदेशों की बाट से नहीं
भटका।
मैं ने तेरी चितौनियों को अपना १११
सदा का निज भाग जानके ले
लिया है

क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का
कारण हैं ।
११२ मैं ने अपने मन को इस बात की
ओर लगाया है
कि अनन्तकाल लों तेरी विधियों पर
चलता रहूं ।

सामेक्

११३ मैं दुचित्तों से बैर रखता
पर तेरी व्यवस्था में प्रीति रखता
हूं ।
११४ तू मेरी आड़ और ढाल ठहरा है
मेरी आशा तेरे बचन पर है ।
११५ रे कुकर्म्मियो मुझ से दूर हो जाओ
जिस्तें मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं
को पकड़े रहूं ।
११६ हे यहोवा अपने बचन के अनुसार
मुझे संभाल और मैं जीता रहूंगा
और मेरी आशा तोड़के मुझे लज्जित
न कर ।
११७ मुझे थांभ रख तब मैं बचा रहूंगा
और निरन्तर तेरी विधियों की ओर
चित्त लगाये रहूंगा ।
११८ जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक
जाते हैं उन सब को तू तुच्छ
जानता है
क्योंकि उन की चतुराई की युक्ति
झूठ ही है ।
११९ तू ने पृथिवी के सब दुष्टों को धातु
के मैल के समान दूर किया है
इस कारण मैं तेरे चितौनी के बचनों
में प्रीति रखता हूं ।

तेरे भय से मेरे रोंए खड़े हुए हैं १२०
और मैं तेरे न्यायबचनों से डरता
हूं ।

ऐन् ।

मैं ने तो न्याय और धर्म्म किया है १२१
सो जो मुझ पर अन्धेर करते हैं तू मुझे
उन के हाथ में कभी न छोड़ ।
मुझ अपने दास की भलाई के लिये १२२
मेरा जामिन हो
अभिमानी लोग मुझ पर अन्धेर न करने
पावें ।
मेरे नेत्र तुझ से उद्धार पाने की ओर १२३
तेरे धर्म्ममय बचन के पूरे होने की
बाट जोहते जोहते रह गये हैं ।
मुझ अपने दास के संग अपनी करुणा १२४
के अनुसार व्यवहार कर
और अपनी सब विधि मुझे सिखा ।
मैं तेरा दास हूं सो तू मुझे समझ दे १२५
तब मैं तेरे चितौनी के बचनों को
समझ सकूंगा ।
हे यहोवा तेरे काम करने का समय १२६
आया है
क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को
निरर्थक किया है ।
इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं में १२७
सोने से बल्कि कुन्दन से भी अधिक
प्रीति रखता हूं ।
इस कारण मैं तेरे सब उपदेशों को १२८
सब विषयों में ठीक जानता हूं
और सब असत् मार्गों से बैर रखता
हूं

१२९ तेरे चितौनी के बचन अनूप हैं
इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हूं ।
१३० तेरे बचनों के अर्थ खुलने से ज्ञान का प्रकाश होता है
उस से भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं ।
१३१ मैं अपना मुंह बाके हांफने लगा
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा था ।
१३२ जैसी तेरी रीति अपने नाम की प्रीति रखनेहारों से है
तैसे ही मेरी ओर भी फिरके मुझ पर अनुग्रह कर ।
१३३ मेरे पैरों को अपने बचनरूपी भूमि पर जमा
तब कोई अनर्थ बात मुझ पर प्रभुता न करने पावेगी ।
१३४ मुझे मनुष्यों के अन्धेर से छुड़ा ले
तब मैं तेरे उपदेशों को पालन करूंगा ।
१३५ अपना प्रसन्न मुख मुझ अपने दास को दिखा
और अपनी सब विधि मुझे सिखा ।
१३६ लोग जो तेरी व्यवस्था को नहीं पालते
इस लिये मेरी आंखों से जल की धारा बहती रहती है ।

सादे ।

१३७ हे यहोवा तू धर्म्मी है
और तेरे न्यायबचन सीधे हैं ।
१३८ तू ने अपने चितौनी के बचनों को
धर्म्म और पूर्ण सत्यता से कहा है ।
मैं जलन के मारे भस्म भया हूं १३९
इस लिये कि मेरे सतानेहारे तेरे बचनों को भूल गये हैं ।
तेरा बचन मानो पूरी रीति से ताया १४०
हुआ है
इस कारण मैं तेरा दास उस में प्रीति रखता हूं ।
मैं तो छोटा और तुच्छ हूं १४१
पर तेरे उपदेशों को नहीं भूला ।
तेरा धर्म्म जो है सो सनातन धर्म्म है १४२
और तेरी व्यवस्था सत्य ही है ।
मैं संकट और सकेती में फंसा हूं १४३
पर तेरी आज्ञाएं मेरा सुखमूल हैं ।
तेरे चितौनी के बचन सदा धर्म्ममय हैं १४४
तू मुझ को समझ दे और मैं जीता रहूंगा ।

कोप़ ।

मैं ने सारे मन से पुकारा है हे यहोवा १४५
मुझे उत्तर दे
और मैं तेरी विधियों को पकड़े रहूंगा ।
मैं ने तुझ को पुकारा है तू मेरा १४६
उद्धार कर
मैं तेरे चितौनी के बचनों को माना करूंगा ।
मैं ने पह फटने से पहिले भी दोहाई १४७
दिई
मेरी आशा तेरे बचनों पर थी ।
मेरे नेत्र रात के एक एक पहर के १४८
आदि में भी खुले रहे

जिस्तें मैं तेरे बचन पर ध्यान करूं ।
१४९ अपनी करुणा से मेरी सुन ले
हे यहोवा अपनी रीति के अनुसार
मुझे जिला ।
१५० जो दुष्टता में प्रीति रखते हैं सो
निकट आ गये हैं
वे तो तेरी व्यवस्था से दूर पड़े हैं ।
१५१ पर हे यहोवा तू निकट है
और तेरी सब आज्ञाएं सत्य ही हैं ।
१५२ बहुत काल से मैं तेरी चितौनियों के
सोचने से जानता हूं
कि तू ने उन की नेव सदा के लिये
डाली है ।

रेश ।

१५३ मेरे दुःख को देखके मुझे छुड़ा
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला ।
१५४ मेरा मुकद्दमा लड़ और मुझे छुड़ा ले
अपने बचन के अनुसार मुझ को
जिला ।
१५५ दुष्टों को उद्धार मिलना दुर्लभ है
क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं
रखते ।
१५६ हे यहोवा तेरी दया तो बड़ी है
अपने न्यायबचनों के अनुसार मुझे
जिला ।
१५७ जो मेरे पीछे पड़े हुए और मुझे
सताते हैं सो बहुत हैं
पर मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से
नहीं हटा ।
१५८ मैं विश्वासघातियों को देखके उदास
भया
क्योंकि वे तेरे बचन को नहीं पालते ।
देख कि मैं तेरे उपदेशों में कैसी १५९
प्रीति रखता हूं
हे यहोवा अपनी करुणा के अनुसार
मुझ को जिला ।
तेरा सारा बचन तो सत्य ही है १६०
और तेरा एक एक धर्म्ममय न्यायबचन
सनातन है ।

शीन ।

हाकिम लोग अकारण मेरे पीछे पड़े हैं १६१
पर मेरा हृदय तेरे बचनों से भयमान
रहता है ।
जैसा कोई बड़ी लूट पाके हर्षित १६२
होता है
तैसा ही मैं तेरे बचन के हेतु हर्षित
हूं ।
झूठ से तो मैं बैर और घिन रखता हूं १६३
पर तेरी व्यवस्था में प्रीति रखता हूं ।
तेरे धर्म्ममय न्यायबचनों के हेतु १६४
मैं दिन दिन सात बेर तेरी स्तुति
करता हूं ।
जो तेरी व्यवस्था में प्रीति रखते हैं १६५
उन को बड़ी शान्ति होती है
और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती ।
हे यहोवा मैं तुझ से उद्धार पाने की १६६
आशा लगाये
तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूं ।
मैं तेरी चितौनियों को अपने जी से १६७
पालता
और उन में बहुत प्रीति रखता आया
हूं ।

१६८ मैं तेरे उपदेशों और चितौनी के बचनों को पालता आया हूं
क्योंकि मेरी सारी चालचलन तेरे सन्मुख प्रगट है।

ताव।

१६९ हे यहोवा मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे
तू अपने बचन के अनुसार मुझे समझ दे।
१७० मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुंचे
तू अपने बचन के अनुसार मुझे छुड़ा।
१७१ मेरे मन से स्तुति का प्रवाह उमंडे
क्योंकि तू मुझे अपनी सब विधि सिखाता है।
१७२ मैं तेरे बचन का गीत गाऊं
क्योंकि तेरी सारी आज्ञाएं धर्म्ममय हैं।
१७३ तेरा हाथ मेरी सहायता करने को लैस रहे
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों को अपनाया है।
१७४ हे यहोवा मैं तुझ से उद्धार पाने की अभिलाषा करता हूं
तेरी व्यवस्था मेरा सुखमूल है।
१७५ मैं जीता रहूं तो तेरी स्तुति करूंगा
तेरे न्यायबचनों से मेरी सहायता होवे।
१७६ मैं तो खोई हुई भेड़ की नाईं भटक गया हूं सो तू मुझ अपने दास को ढूंढ
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को नहीं भूला।

१२० यात्रियों का गीत।

संकट के समय मैं ने यहोवा को पुकारा १
और उस ने मुझे उत्तर दिया।
हे यहोवा मुझ को झूठी
और छल की बात बोलनेहारे से बचा ले।
रे छल की बात बोलनेहारे ३
तुझ को कैसा दण्ड मिले और कितना अधिक दिया जावे।
तुझे तो बीर के नोकीले बाणों से ४
और झाऊ के अंगारों से दण्ड मिलेगा।
हाय हाय क्योंकि मुझे मेशेक् में परदेशी होके रहना ५
और केदार् के तम्बुओं से घिरा हुआ बसना पड़ा है।
बहुत काल से मुझ को ६
मेल के बैरियों के संग बसना पड़ा है।
मैं तो मेल ही चाहता हूं ७
पर जब मैं बोलने लगता हूं तब वे लड़ने को खड़े हो जाते हैं।

१२१ यात्रियों का गीत।

मैं अपने नेत्र पर्वतों की ओर तो लगाऊंगा १
पर मुझे सहायता कहां से मिलेगी।
मुझे तो सहायता यहोवा ही की ओर से मिलती है २
जो स्वर्ग और पृथिवी का कर्ता है।

३ हे यात्री वह तेरे पांव को टलने न देवे
वह जो तेरा रक्षक है सो कभी न ऊंघे।
४ सुन इस्राएल् का रक्षक
न ऊंघेगा न सो जावेगा।
५ यहोवा तेरा रक्षक है
यहोवा तेरी दहिनी ओर तुझ पर
छाया करनेहारा है।
६ न तो दिन को धूप से
और न रात को चान्दनी से तेरी कुछ
हानि होवेगी।
७ यहोवा सारी बिपत्ति से तेरी रक्षा
करेगा
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
८ यहोवा भीतर बाहर निकलने पैठने में
तेरी रक्षा अब से ले सर्बदा लों करता
रहेगा।

१२२

यात्रियों का गीत। दाऊद रचित।

१ जब लोगों ने मुझ से कहा कि हम
यहोवा के भवन को चलें
तब मैं आनन्दित भया।
२ हे यरूशलेम् तेरे फाटकों के भीतर
हमारे पांव जम गये हैं।
३ हे यरूशलेम् तू तो ऐसी नगरी बनी
हुई है
कि तेरे घर एक दूसरे से भली भांति
मिले हुए हैं।
४ तुझ में गोत्र गोत्र के अर्थात् याहू के
गोत्र गोत्र के लोग
यहोवा के नाम का धन्यबाद करने
के लिये जाते हैं
सो इस्राएल् के लिये चितौनी का
नियम करके ठहराया गया है।
तुझ में तो न्याय के सिंहासन ५
दाऊद के घराने के लिये धरे हुए हैं।
हे यरूशलेम् तेरे लिये लोग शान्ति ६
का बर मांगें
तेरे प्रेमी कुशल से रहें।
तेरी शहरपनाहों के भीतर शान्ति ७
और तेरे महलों में कुशल होवे।
अपने भाइयों और संगियों के निमित्त ८
मैं कहूंगा कि तुझे शान्ति होवे।
अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के ९
निमित्त
मैं तेरी भलाई का यत्न करूंगा।

१२३

यात्रियों का गीत।

हे स्वर्ग में बिराजनेहारे १
मैं अपने नेत्र तेरी ही ओर लगाता हूं।
देख जैसे दासों के नेत्र स्वामियों के २
हाथ की ओर
और जैसे दासियों के नेत्र स्वामिन के
हाथ की ओर लगे रहते हैं
तैसे ही हमारे नेत्र हमारे परमेश्वर
यहोवा की ओर लगे हुए हैं
और जब लों वह हम पर अनुग्रह
न करे तब लों लगे ही रहेंगे।
हे यहोवा हम पर अनुग्रह कर हम ३
पर अनुग्रह कर
क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर
गये हैं।
हमारा जीव सुखियों के ठट्ठों से

और अहंकारियों के अपमान से बहुत
ही भर गया है ।

१२४ यात्रियों का गीत । दाऊद रचित ।

१ इस्राएल् को यह कहना योग्य है
कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता ।
२ अर्थात् जिस समय मनुष्य हम पर
चढ़ आये
उस समय यदि हमारी ओर यहोवा
न होता ।
३ तो वे हम को तब ही जीते निगल
जाते
जब उन का कोप हम पर भड़का था ।
४ और हम तब ही मानो जल में डूब
जाते
और धारा में बह जाते ।
५ उमण्डते जल में हम तब ही बह जाते ।
६ धन्य है यहोवा
कि उन्हों ने तो हम को अहेर ही
कर लिया था पर उस ने हम पर
उन के दांत लगने नहीं दिया ।
७ हमारा प्राणपक्षी मानो चिड़ीमार के
जाल से छूट गया
जाल फट गया हम बच निकले ।
८ यहोवा जो स्वर्ग और पृथिवी का
कर्त्ता है
उसी के नाम के प्रताप से हमारी
सहायता होती है ।

१२५ यात्रियों का गीत ।

१ जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं,
सो सिय्योन् पर्वत के समान हैं जो
टलता नहीं बल्कि सदा बना
रहता है ।
जिस प्रकार पहाड़ों से यरूशलेम् घिरा २
हुआ है
उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा की
चारों ओर रहता है
और अब से ले सर्वदा लों रहेगा ।
क्योंकि दुष्टों का राजदण्ड धर्म्मियों के ३
भाग पर बना न रहेगा
ऐसा न होवे कि धर्म्मी लोग अपना
मन कुटिल काम की ओर बढ़ावें ।
हे यहोवा भलों का भला कर ४
अर्थात् सीधे मनवालों का भला कर ।
पर जो टेढ़ी लीकों की ओर मुड़ जाते हैं ५
उन को यहोवा ले जाके अनर्थकारियों
के संग भागी करेगा
इस्राएल् को शान्ति मिले ।

१२६ यात्रियों का गीत ।

जब यहोवा सिय्योन् के फिरनेहारों १
को बन्धुआई से लौटा ले आया
तब हमारी दशा हमें स्वप्न की सी
जान पड़ी ।
तब हम आनन्द से हंसने २
और ऊंचे स्वर के गीत गाने लगे
तब अन्यजातिवाले कहने लगे
कि यहोवा ने तो इन के साथ बड़े
बड़े कार्य्य किये हैं ।
हां यहोवा ने हमारे साथ बड़े बड़े
कार्य्य किये तो हैं

और इस से हम आनन्दित भये ।
४ हे यहोवा हमारे बन्धुवों को लौटा ले
आके देश को उन से ऐसा भर दे
जैसे दक्षिण देश के नाले जल से भर
जाते हैं ।
५ जो आंसू बहाते हुए बोते हैं
सो ऊंचे स्वर से गाते हुए लवने पावेंगे।
६ चाहे बोनेहारा बीज लिये रोता हुआ
चला जावे
पर वह फिर पूलियां लिये ऊंचे स्वर से
गाता हुआ निश्चय लौट आवेगा ।

१२७ यात्रियों का गीत । सुलैमान रचित ।

१ यदि घर का बनानेहारा यहोवा न
होवे
तो उस के बनानेहारों का परिश्रम
व्यर्थ होगा
यदि नगर की रक्षा करनेहारा यहोवा
न होवे
तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही
ठहरेगा ।
२ तुम जो सवेरे उठते और अबेर करके
बिश्राम करते
और दुःखभरी रोटी खाते हो तुम्हारे
लिये यह सब व्यर्थ ही है
क्योंकि यहोवा अपने प्रियों को योंहीं
नींद का सुख देता है ।
३ देखो लड़के यहोवा के दिये हुए भाग हैं
गर्भ का फल उस की ओर से बदला है।
४ जैसे बीर को अपने हाथ के बाणों से
रक्षा होती है
तैसे ही जवान को भी अपने लड़कों से
होती है ।
क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने अपने ५
तर्कशरूपी घर को बाणरूपी लड़कों
से भर लिया हो
क्योंकि वे फाटक के पास शत्रुओं से
बोलते संकोच न करेंगे ।

१२८ यात्रियों का गीत

क्या ही धन्य वे सब हैं जो यहोवा का १
भय मानते
और उस के मार्गों पर चलते हैं ।
हे धर्म्मी तू अपनी कमाई को निश्चय २
खाने पावेगा
तू क्या ही धन्य होगा और तेरा क्या
ही भला होवेगा ।
तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री मानो फल- ३
वन्त दाखलता होगी
तेरी मेज की चारों ओर तेरे बालक
मानो जलपाई के पौधे होवेंगे ।
बलिक जो कोई पुरुष यहोवा का भय ४
मानता है
सो ऐसी ही आशीष पावेगा ।
यहोवा तुझे सिय्योन् से आशीष देवे ५
और तू जीवन भर यरूशलेम् का कुशल
देखता रहे ।
बलिक तू अपने नाती पोतों को देखने पावे ६
इस्राएल् को शान्ति मिले ।

१२९ यात्रियों का गीत

इस्राएल् को यह कहना योग्य है

कि मेरे बचपन से ले आज लों लोगों
ने मुझे बहुत बार क्लेश दिया है।
२ हां मेरे बचपन से ले आज लों उन्हों
ने मुझ को बहुत बार क्लेश दिया
तो है
पर मुझ पर प्रबल नहीं होने पाये।
३ मानो हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर
हल चलाया
और लम्बी लम्बी रेघारियां किई्ं।
४ यहोवा धर्म्मी है
उस ने दुष्टों के फंदों को काट डाला
है।
५ जितने सिय्योन् से बैर रखते हैं
सो सब लज्जित होवें और उन को
पीछे हटना पड़े।
६ वे छत पर की घास के समान होवें
जो बढ़ते न बढ़ते सूख जाती है।
७ जिस से कोई लवैया अपनी मुट्ठी नहीं
भरता
न पूलियों का कोई बांधनेहारा अपनी
अंकवार भर लेता है।
८ और न उस के विषय बटोही लोग
किसानों से कहते हैं
कि यहोवा की आशीष तुम पर होवे
हम तुम लोगों को यहोवा के नाम से
आशीर्बाद देते हैं।

१३० यात्रियों का गीत।

१ हे यहोवा मैं ने गहिरे गड़हों में से
तुझ को पुकारा है।
२ हे प्रभु मेरी सुन
तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर
ध्यान से लगे रहें।
हे याह् यदि तू अधर्म्म के कर्म्मों का ३
लेखा लेवे
तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा।
पर तेरे हृदय में तो पाप क्षमा करने ४
की है
जिस्तें तेरा भय माना जावे।
मैं यहोवा की बाट जोहता हूं बलिक ५
जी से उस की बाट जोहता हूं
और मेरी आशा उस के बचन पर है।
रक्षक जितनी उत्कण्ठा से अरुणोदय ६
की प्रतीक्षा करते हैं
अर्थात् पहरुए जितनी इच्छा से भोर
की बाट जोहते हैं
उस से भी अधिक मैं यहोवा की
बाट जी से जोहता हूं।
इस्राएल् यहोवा की आशा लगाये रहे ७
क्योंकि यहोवा के हृदय में करुणा
करने और पूरा छुटकारा देने की
भी है।
अर्थात् इस्राएल् को सारे अधर्म्म के ८
कर्म्मों से
वही छुटकारा देवेगा।

१३१ यात्रियों का गीत। दाऊद रचित।

हे यहोवा न तो मेरा मन गर्वी है १
और न मेरी दृष्टि घमण्ड भरी
और जो बातें बड़ी और मेरे लिये
अधिक कठिन हैं
उन से मैं काम नहीं रखता।

२ निश्चय मैं ने अपने मन को शान्त और
चुप कर दिया है
जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी
मा की गोद में चुपचाप रहता है
तैसे ही दूध छुड़ाये हुए लड़के के
समान मेरा मन भी रहता है ।
३ इस्राएल् अब से ले सर्बदा लों
यहोवा की आशा लगाये रहे ।

१३२ यात्रियों का गीत ।

१ हे यहोवा दाऊद की खातिर
उस की सारी दुर्दशा को स्मरण कर ।
२ क्योंकि उस ने यहोवा से किरिया खाई
और याकूब के सर्ब्बशक्तिमान ईश्वर
की मनौती मानी ।
३ कि निश्चय जब लों मैं यहोवा के लिये
एक स्थान
अर्थात् याकूब के सर्ब्बशक्तिमान ईश्वर
के लिये निवास न पाऊं ।
४ तब लों मैं न अपने निवास में प्रवेश
करूंगा
न अपने पलंग पर चढ़ूंगा ।
५ न अपनी आंखों में नींद
न अपनी पलकों में झपकी आने
देऊंगा ।
६ देखो हम ने एफ्राता में उस की चर्चा
सुनी
हम ने उस को अरण्य के खेतों में
पाया है ।
७ आओ हम यहोवा के निवास में
प्रवेश करें
हम उस के चरणों की चौकी के आगे
दण्डवत् करें ।
हे यहोवा उठके अपने बिश्रामस्थान ८
में आ
अपने सामर्थ्य के सन्दूक समेत तू
आ ।
तेरे याजक धर्म्म के बस्त्र पहिने रहें ९
और तेरे भक्त लोग ऊंचे स्वर से गीत
गावें ।
अपने दास दाऊद की खातिर १०
अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को सुनी
अनसुनी न कर ।
यहोवा ने दाऊद से सच्ची किरिया ११
खाई
और वह उस से न फिरेगा
कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे ही औरस
पुत्रों में से राजा करके बैठाऊंगा ।
और यदि तेरे बंश के लोग मेरे साथ १२
बन्धी हुई बाचा को पालें
और जो चितौनी का बचन मैं उन्हें
सिखाऊंगा उस पर चलें
तो उन के बंश के लोग भी तेरी गद्दी
पर युगानयुग बैठते चले जावेंगे ।
क्योंकि यहोवा ने सिय्योन् को अपनाया १३
और अपने निवास के लिये चाहा है ।
वह कहता है कि यह तो युगानयुग १४
के लिये मेरा बिश्रामस्थान है
यहीं मैं रहूंगा क्योंकि मैं ने उस को
चाहा है ।
मैं उस में की भोजनबस्तुओं पर अति १५
आशीष देऊंगा

और उस में के दरिद्रों को रोटी से
तृप्त करूंगा।
१६ और मैं उस में के याजकों को उद्धार
का वस्त्र पहिनाऊंगा
और उस में के भक्त लोग अति ऊंचे
स्वर से गावेंगे।
१७ वहां मैं दाऊद के एक बल का सींग
उगाऊंगा
मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक
दीपक सिद्ध कर रक्खा है।
१८ मैं उस के शत्रुओं को तो लज्जा का
वस्त्र पहिनाऊंगा
पर उस के सिर पर उस का मुकुट
शोभायमान रहेगा।

१३३

यात्रियों का गीत। दाऊद रचित।

१ देखो यह क्या ही भली और क्या ही
मनोहर बात है
कि भाई लोग आपस में मिले जुले
रहें।
२ यह तो उस उत्तम तेल के समान है
जो हारून के सिर पर डाला गया
और उस की दाढ़ी पर बहके
उस के वस्त्र के छोर तक भी पहुंच
गया।
३ फिर यह हेर्म्मोन् की उस ओस के
समान होगी
जो सिय्योन् के पहाड़ों पर गिरे
यहोवा ने तो अपनी शक्ति से आशीष
अर्थात् अनन्तजीवन की आशीष वहीं
दिई है।

१३४

यात्रियों का गीत।

हे यहोवा के सब सेवको सुनो १
तुम जो रात्रिसमय यहोवा के भवन
में खड़े रहते हो
तुम यहोवा को धन्य कहो।
अपने हाथ पवित्रस्थान में उठा उठाके २
यहोवा को धन्य कहा करो।
हे यात्री यहोवा जो स्वर्ग और पृथिवी ३
का कर्त्ता है
सो सिय्योन् में से तुझे आशीष देवे।

१३५

याहू की स्तुति करो १
यहोवा के नाम की स्तुति
करो
हे यहोवा के सेवको तुम स्तुति करो।
तुम जो यहोवा के भवन में २
अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के
आंगनों में खड़े रहते हो।
याहू की स्तुति करो क्योंकि यहोवा ३
भला है
उस के नाम का भजन गाओ क्योंकि
वह मनभाऊ है।
याहू ने तो याकूब को अपने लिये चुना ४
अर्थात् इस्राएल् को अपना निज धन
होने के लिये चुन लिया है।
मैं तो जानता हूं कि यहोवा महान् ५
है
और हमारा प्रभु सारे देवताओं से
बड़ा है।
जो कुछ यहोवा ने चाहा ६
सो उस ने आकाश में और पृथिवी

पर और समुद्रों और सब गहिरे
स्थानों में किया है ।
७ वह पृथिवी के छोर से कुहरे उठाता
और वृष्टि के लिये बिजली बनाता
और पवन को अपने भण्डार में से
निकालता है ।
८ वह वही है जिस ने मिस्र में क्या
मनुष्य क्या पशु
सब के पहिलौठों को मार डाला ।
९ हे मिस्र उस ने तेरे मध्य में
फिरौन और उस के सब कर्म्मचारियों
की हानि करने को चिन्ह और
चमत्कार किये ।
१० वह वही है जिस ने बहुत सी जातियां
नष्ट किईं
और सामर्थी सामर्थी राजाओं को
भी घात किया ।
११ अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन्
और बाशान् के राजा ओग् को
और कनान् के सारे राजाओं को
मारा ।
१२ और उन के देश को बांट बांटके
अपनी प्रजा इस्राएल् के भाग होने
के लिये दे दिया ।
१३ हे यहोवा तेरा नाम सनातन है
हे यहोवा जिस नाम से तेरा स्मरण होता
है सो पीढ़ी पीढ़ी बना रहेगा ।
१४ यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय
चुकावेगा
और अपने दासों की दुर्दशा देखके
पछतावेगा ।

अन्यजातियों की प्रतिमाएं तो सोना १५
चान्दी ही हैं
वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं ।
उन के मुंह तो रहता है पर वे बोल १६
नहीं सकतीं
उन के आंखें तो रहती हैं पर वे देख
नहीं सकतीं ।
उन के कान तो रहते हैं पर वे सुन १७
नहीं सकतीं
न उन के कुछ भी सांस चलती ।
जैसी वे हैं तैसे ही उन के बनानेहारे १८
भी हो जावेंगे
बलिक जितने उन पर भरोसा रखते
हैं सो भी वैसे ही होवेंगे ।
हे इस्राएल् के घरानेवालो यहोवा १९
को धन्य कहो
हे हारून के घरानेवालो यहोवा को
धन्य कहो ।
हे लेवी के घरानेवालो यहोवा को २०
धन्य कहो
हे यहोवा के डरवैयो यहोवा को धन्य
कहो ।
यहोवा जो यरूशलेम् में बास करता २१
है
सो सिय्योन् में धन्य कहा जावे
याह् की स्तुति करो ।

१३६

यहोवा का धन्यबाद करो १
क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सनातन है ।
जो सब देवताओं के ऊपर परमेश्वर २
है उस का धन्यबाद करो

क्योंकि उस की करुणा सनातन है।
३ जो सब प्रभुओं का प्रभु है उस का धन्यबाद करो
क्योंकि उस की करुणा सनातन है।
४ उस को छोड़के कोई बड़े आश्चर्य्यकर्म्म नहीं करता
देखो उस की करुणा सनातन है।
५ उस ने अपनी बुद्धि से स्वर्ग बनाया
देखो उस की करुणा सनातन है।
६ उस ने पृथिवी को जल के ऊपर फैलाया
देखो उस की करुणा सनातन है।
७ उस ने बड़ी बड़ी ज्योतियां बनाईं
देखो उस की करुणा सनातन है।
८ अर्थात् उस ने दिन पर प्रभुता करने को सूर्य्य को बनाया
देखो उस की करुणा सनातन है।
९ और रात पर प्रभुता करने को चन्द्रमा और तारागण को बनाया
देखो उस की करुणा सनातन है।
१० उस ने मिस्रियों के पहिलौठों को मारा
देखो उस की करुणा सनातन है।
११ और उस ने उन के बीच से इस्राएलियों को निकाला
देखो उस की करुणा सनातन है।
१२ सो उस ने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से किया
देखो उस की करुणा सनातन है।
१३ उस ने लाल समुद्र को हटाके दो खण्ड कर दिया
देखो उस की करुणा सनातन है।

और उस ने इस्राएल् को उस के बीच से पार कर दिया १४
देखो उस की करुणा सनातन है।
और फिरौन को सेना समेत लाल समुद्र में झटक दिया १५
देखो उस की करुणा सनातन है।
उस ने अपनी प्रजा को बन में चलाया १६
देखो उस की करुणा सनातन है।
उस ने बड़े बड़े राजा मारे १७
देखो उस की करुणा सनातन है।
बल्कि प्रतापी राजा घात किये १८
देखो उस की करुणा सनातन है।
अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन् को १९
देखो उस की करुणा सनातन है।
और बाशान् के राजा ओग् को मारा २०
देखो उस की करुणा सनातन है।
और उन के देश को भाग होने के लिये दे दिया २१
देखो उस की करुणा सनातन है।
अर्थात् अपने दास इस्राएलियों के भाग होने के लिये दे दिया २२
देखो उस की करुणा सनातन है।
उस ने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि लिई २३
देखो उस की करुणा सनातन है।
और हम को द्रोहियों से छुड़ाया है २४
देखो उस की करुणा सनातन है।
वह सारे शरीरधारियों को आहार देता है २५
देखो उस की करुणा सनातन है।

२६ स्वर्गबासी ईश्वर का धन्यबाद करो
क्योंकि उस की करुणा सनातन है ।

१३७

बाबेल् की नहरें जो हैं
उन्हीं के किनारे हम लोग
बैठ गये
और सिय्योन् को स्मरण करके रो
दिये ।
२ बाबेल् के बीच जो मजनूवृक्ष थे
उन पर हम ने अपनी बीणाओं को
टांग दिया ।
३ क्योंकि जो हम को बन्धुवे करके ले गये
थे उन्हों ने वहां हम से गीत के
पद गवाने चाहा
और हमारे रुलानेहारों ने हम से
आनन्द पाने की इच्छा से कहा
सिय्योन् के गीतों में से हमारे लिये
कोई गीत गाओ ।
४ अरे हम यहोवा के गीत को
बिराने के देश में क्योंकर गावें ।
५ हे यरूशलेम् यदि मैं तुझे भूल जाऊं
तो मेरा दहिना हाथ निकम्मा हो
जावे ।
६ यदि मैं तुझे स्मरण न रक्खूं
बरन तुझ यरूशलेम् को अपने सारे
आनन्द से श्रेष्ठ न जानूं
तो मेरी जीभ तालू से चिपट जावे ।
७ हे यहोवा एदोमवंशियों के दण्ड के
लिये
यरूशलेम् की बिपत्ति के दिन को
स्मरण कर
कि क्योंकर वे कहते थे ढाओ ढाओ
उस को नेव से ढा देओ ।
रे बाबेल्बासी प्रजा तू जो उजड़ने- ८
हारी है
क्या ही धन्य वह होगा जो तुझ से
ऐसा ही व्यवहार करेगा
जैसा तू ने हम से किया है ।
क्या ही धन्य वह होगा जो तेरे बच्चों ९
को पकड़के
ढांग पर पटक देवेगा ।

१३८

दाऊद रचित ।

मैं सारे मन से तेरा धन्यबाद करूंगा १
देवताओं के पूजकों के आगे मैं तेरा
भजन गाऊंगा ।
मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर मुंह २
करके दण्डवत् करूंगा
और तेरी करुणा और सच्चाई के हेतु
तेरे नाम का धन्यबाद करूंगा
क्योंकि तू ने ऐसा बचन दिया है जिस
से तेरा बड़ा नाम और भी बड़ा
हो गया ।
जिस दिन मैं ने पुकारा उसी दिन तू ३
ने मुझे उत्तर दिया
और मुझ में बल देके हियाव बं-
धाया ।
हे यहोवा पृथिवी के सारे राजा तेरा ४
धन्यबाद करेंगे
क्योंकि उन्हों ने तेरे बचन सुने हैं ।
बरन वे तेरे मार्गों के विषय गावेंगे ५
क्योंकि हे यहोवा तेरी महिमा बड़ी
है ।

६ क्योंकि यद्यपि तू महान् है तौभी तू
नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता
है
पर अहंकारी को दूर ही से पहि-
चानता है।
७ चाहे मैं संकट के बीच में रहूं तौभी
तू मुझे जिलावेगा
तू मेरे कोपित शत्रुओं के बिरुद्ध हाथ
बढ़ावेगा
और तेरे दहिने हाथ के बल से मेरा
उद्धार होवेगा।
८ हे यहोवा तू मेरे लिये सब कुछ पूरा
करेगा
तेरी करुणा सनातन है
सो तू अपने हाथों के कार्य्यों को
त्याग न कर।

१३९ प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का स्तोत्र।

१ हे यहोवा तू ने मेरे मन की बात
परखके सब कुछ जान लिया है।
२ तू मेरा उठना बैठना जानता
और मेरे बिचारों को दूर से भी समझ
लेता है।
३ मेरे चलने और लेटने की तू भली
भांति छानबीन करता
और मेरी सारी चालचलन का भेद
जानता है।
४ और हे यहोवा मेरे मन में ऐसी कोई
बात नहीं
जिसे तू सर्वथा न जानता होवे!
५ तू ने मुझे आगे पीछे घेर रक्खा
और अपना हाथ मुझ पर रक्खे
रहता है।
तेरा यह ज्ञान मेरे लिये अति अगम्य ६
है
वह मानो ऐसे ऊंचे स्थान पर है कि
मैं वहां लों पहुंच नहीं सकता।
तेरे आत्मा से भागके मैं किधर जाऊं ७
अथवा तेरे साम्हने से किधर भागूं।
यदि मैं स्वर्ग पर चढ़ूं तो तू वहां ८
है
और यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक
में बिछाऊं तो क्या देखूंगा कि वहां
भी तू है।
यदि मैं भोर की लाली की नाईं ९
दौड़ूं
और समुद्र के पिछले भाग में भी जा
बसूं।
तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी १०
अगुवाई करेगा
और अपने दहिने हाथ से मुझे पकड़े
रहेगा।
और यदि मैं कहूं अन्धकार में तो मैं ११
छिप जाऊंगा
और मेरी चारों ओर का उजियाला
रात का अन्धेरा हो जावेगा।
तौभी अन्धकार तेरे लिये अंधियारा १२
न होगा
बल्कि दिन के तुल्य रात्रि भी प्रकाश
देगी
अंधियारा और उजियाला दोनों एक
समान होवेंगे।

१३ मेरे अन्तःकरण का स्वामी तो तू है
तू ने मुझे माता के गर्भ में रच रचके
बनाया ।
१४ मैं तेरा धन्यवाद करूंगा इस लिये
कि मैं भयानक और अद्भुत रीति
से रचा गया
तेरे काम तो आश्चर्य्य के हैं
और मैं इसे भली भांति जानता
हूं ।
१५ जब मैं गुप्त में बनाया जाता
और मानो पृथिवी के नीचे स्थानों में
रचा जाता था
तब मेरी हड्डियां तुझ से गुप्त न थीं ।
१६ तू मेरे पिण्ड को देखता था
और मेरे सब अङ्ग जो दिन दिन
बनते जाते थे
सो रचे जाने से पहिले
तेरी पुस्तक में लिखे जाते थे ।
१७ और मेरे लिये तो हे ईश्वर तेरे बिचार
क्या ही प्रिय हैं
उन की संख्या का जोड़ क्या ही बड़ा
है ।
१८ यदि मैं उन को गिनने लगता तो वे
बालू के किनकों से भी अधिक
ठहरते
जब मैं जाग उठता हूं तब क्या देखता
हूं कि तू मेरे संग है ।
१९ हे परमेश्वर यदि तू दुष्ट का घात करे
तो क्या ही उत्तम होगा
मैं कहता हूं रे हत्यारो मुझ से दूर हो
जाओ ।
वे तो तेरी चर्चा पाखण्ड से करते हैं २०
तेरे द्रोही तेरा नाम झूठी बात पर
लेते हैं ।
हे यहोवा क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न २१
करूं
और तेरे बिरोधियों से रूठ न जाऊं ।
हां मैं उन से पूर्ण बैर रखता हूं २२
मैं उन को अपने शत्रु करके मानता
हूं ।
हे ईश्वर मेरे मन की बात परखके २३
जान ले
मुझे जांचके मेरी चिन्ताओं को जान
ले ।
और देख कि मुझ में कोई सन्ताप करने- २४
हारी चाल तो नहीं है
और सनातन मार्ग में मेरी अगुवाई
कर ।

१४० प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का स्तोत्र ।

हे यहोवा मुझ को बुरे मनुष्य से बचा १
ले
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर ।
क्योंकि उन्हों ने मन में बुरी कल्पनाएं २
किई हैं
वे लगातार लड़ाइयां मचाते हैं ।
उन का बोलना सांप का सा काटना ३
है
उन के मन में नाग का बिष रहता है ।
सेला ।
हे यहोवा मुझे दुष्ट के हाथों से बचा ४
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर

क्योंकि उन्हों ने मेरे पैरों के खसकाने
की कल्पना किई है।
५ घमण्डियों ने मेरे लिये फंदा लगाया
और डगर के किनारे जाल बिछाया
उन्हों ने मेरे लिये फंसरियां लगाई हैं।
सेला।
६ हे यहोवा मैं ने तुझ से कहा है कि तू
मेरा ईश्वर है
हे यहोवा मेरे गिड़गिड़ाने की ओर
कान लगा।
७ हे यहोवा प्रभु हे मेरे सामर्थी उद्धार-
कर्त्ता
तू ने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा
किई है।
८ हे यहोवा दुष्ट की इच्छा को पूरी न कर
उस की बुरी युक्ति को सफल न कर
नहीं तो वह घमण्ड करेगा। सेला।
९ मेरे घेरनेहारों का सिर जो है
उस पर उन्हीं का बिचारा हुआ
उत्पात पड़े।
१० उन के सिर पर अंगारे डाले जावें
वे आग में गिरा दिये जावें
और ऐसे जल भरे गड़हों में गिरें कि
वे फिर कभी सिर उठा न सकें।
११ बकवादी पृथिवी पर स्थिर नहीं
होने का
उपद्रवी पुरुष जो है उस को बुराई
मानो अहेर करके गिरा देवेगी।
१२ हे यहोवा मुझे निश्चय है कि तू दीन
जन का मुकद्दमा निपटावेगा
और दरिद्रों का न्याय चुकावेगा।
निःसन्देह धर्मी लोग तेरे नाम का १३
धन्यबाद करने पावेंगे
सीधे लोग तेरे सन्मुख बास करेंगे।

१४१

दाऊद का स्तोत्र।

हे यहोवा मैं ने तुझे पुकारा है सो १
मेरे लिये फुर्ती कर
जब मैं तुझ को पुकारूं तब मेरी ओर
कान लगा।
मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने सुगन्धधूप २
के समान ठहरे
तेरी ओर मेरा हाथ फैलाना संध्या-
काल का अन्नबलि गिना जावे।
हे यहोवा मेरे मुख पर पहरा बैठाके ३
उस के द्वार से कोई अनुचित बात
निकलने न दे।
मेरा मन किसी बुरी बात की ओर ४
न फिरे
अर्थात् मैं अनर्थकारी पुरुषों के संग
दुष्टता के कार्य्यों में न लगूं
बल्कि मैं उन के स्वादिष्ट भोजनों में
से कुछ न खाऊं।
धर्मी मुझ को मारे तो उस की ओर ५
से मुझ पर कृपा ही होगी
और वह मुझे ताड़ना दे तो मानो
मेरे सिर पर तेल चुपड़ना होगा
मैं अपने सिर के लिये ऐसा तेल लेने
से कभी नाह न करूं
चाहे बुरे लोग बुराइयां करते ही रहें
तौभी मैं प्रार्थना में लवलीन
रहूंगा।

६ जब उन के न्यायी ढांग के आस पास
गिराये गये
तब उन्हों ने मेरे बचन सुनके मान
लिया कि वे मधुर ही हैं।
७ जैसे भूमि में हल चलने और ढेले
फूटने से हड्डियां निकलके छितर
जावें
तैसे ही हमारी हड्डियां अधोलोक के
मुंह पर छितराई गई हैं ।
८ पर हे यहोवा प्रभु मेरे नेत्र तेरी ही
ओर लगे हैं
मैं तेरा ही शरणागत हूं सो तू मेरे
प्राण को जाने न दे ।
९ जो फन्दा उन्हों ने मेरे लिये लगाया
है उस से मुझे बचा ले
अर्थात् अनर्थकारियों की फंसरियों से
मेरी रक्षा कर ।
१० दुष्ट लोग अपने ही जालों में आप
ही फंसें
और उस अवसर में मैं बच निकलूं ।

१४२

दाऊद का मस्कील् नाम स्तोत्र ।
यह प्रार्थना उस ने उस समय
किई जब वह गुफा में था ।

१ मैं ऊंचे स्वर से यहोवा की दोहाई
देऊंगा
मैं ऊंचे स्वर से यहोवा से गिड़गिड़ा-
ऊंगा ।
२ मैं अपने शोक की बातें उस से खोलके
कहूंगा
मैं अपने संकट का हाल उस के आगे
प्रगट करूंगा ।
जब मेरा आत्मा व्याकुल हुआ था तब ३
तू मेरी दशा को जानता था
जिस बाट से मैं जानेहारा था उसी
में उन्हों ने मेरे लिये फंदा
लगाया ।
मेरी दहिनी ओर देख कोई मुझ को ४
नहीं पहिचानता
मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही मुझ
को कोई नहीं पूछता ।
हे यहोवा मैं ने तेरी दोहाई दिई ५
है
मैं ने कहा तू मेरा शरणस्थान है
जीवनलोक में तू ही मेरा अंश है ।
मेरी चिल्लाहट को ध्यान देके सुन ६
क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है
जो मेरे पीछे पड़े हैं उन से मुझे
बचा ले क्योंकि वे मुझ से अधिक
सामर्थी हैं ।
मुझ को बन्दीगृह से निकाल जिस्तें मैं ७
तेरे नाम का धन्यवाद कर सकूं
धर्म्मी लोग आनन्द से मुझे घेर रहेंगे
इस लिये कि तू मेरा उपकार
करेगा ।

१४३

दाऊद का स्तोत्र ।

हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन मेरे १
गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा
तू जो सच्चा और धर्म्मी है सो मुझे
उत्तर दे ।
और मुझ अपने दास से मुकद्दमा न २
उठा

क्योंकि कोई प्राणी तेरे लेखे में निर्दोष
नहीं ठहर सकता ।
३ शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ
उस ने मुझे चूर करके मिट्टी में
मिलाया
और अन्धेरे स्थान में डालके उन के
समान कर दिया जो ढेर दिन भये
कि मर मिटे हैं ।
४ मेरा आत्मा ढया हुआ है
मेरा मन बिकल है ।
५ मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण
आते हैं
मैं तेरे सब अद्भुत कार्य्यों पर ध्यान
करता
और तेरे काम को सोचता हूं ।
६ मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाये हूं
जैसे सूखी भूमि वृष्टि की बाट जोहती
है वैसे ही मैं तेरी बाट जोहता
हूं । सेला ।
७ हे यहोवा मुझे फुर्त्ती करके उत्तर दे
क्योंकि मेरा प्राण निकला चाहता
है
मुझ से मुंह न फेर
ऐसा न होवे कि मैं कबर में पड़े
हुओं के समान ठहरूं ।
८ अपनी करुणा की बात मुझे तड़के
सुना
क्योंकि मैं ने तुझी पर भरोसा रक्खा
है
जिस मार्ग से मुझे चलना है सो मुझ
को बता दे
क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर
लगाता हूं ।
हे यहोवा मुझे शत्रुओं से बचा ले ९
मैं तेरी ही आड़ में आ छिपा हूं ।
मुझ को यह सिखा कि मैं तेरी इच्छा १०
पूरी करूं क्योंकि मेरा परमेश्वर
तू ही है
तेरा आत्मा तो कृपानिधान है सो
मुझ को समथर भूमि पर ले
चल ।
हे यहोवा मुझे अपने नाम के निमित्त ११
जिला
तू जो धर्म्मी है सो मुझ को संकट से
छुड़ा ।
और अपनी करुणा के हेतु मेरे शत्रुओं १२
को बिध्वंस कर
और मेरे सब सतानेहारों को नष्ट
कर
क्योंकि मैं तेरा दास हूं ।

१४४

दाऊद रचित ।

धन्य है यहोवा जो मेरी चटान १
ठहरा है
सो मुझे हाथों से लड़ना
और युद्ध करना सिखाता है ।
वह मेरे लिये करुणानिधान ईश्वर २
और मेरा अगम्य स्थान
मेरा ऊंचा स्थान और छुड़ानेहारा
मेरी ढाल और मेरा शरणस्थान
ठहरा है
मेरी प्रजा को मेरे बश में वही रखता है ।

३ हे यहोवा मनुष्य क्या है कि तू उस
की सुधि लेता है
बिनाशी मनुष्य क्या है कि तू उस का
कुछ लेखा करता है ।
४ मनुष्य तो बुलबुला ही है
उस की आयुर्दा छाया की नाईं ढलती
है ।
५ हे यहोवा अपने स्वर्ग को नीचे करके
उतर आ
पहाड़ों को छू तो उन से धूंआं
उठेगा ।
६ बिजली कड़काके अपने बैरियों को
छिन्नभिन्न कर
अपने बाण चलाके उन को घबरा
दे ।
७ अपने हाथ ऊपर से बढ़ाके मुझे
उबार और महाजलनिधि से
अर्थात् परदेशियों के बश से छुड़ा ।
८ उन के मुंह से तो व्यर्थ बात निकलती है
और उन के दहिने हाथ से असत्कर्म्म
किये जाते हैं ।
९ हे परमेश्वर मैं तेरा नया गीत गाऊंगा
मैं दस तारवाली सारंगी बजा बजाके
तेरा भजन गाऊंगा ।
१० तू वही है जो राजाओं का उद्धार
करता
और मुझ अपने दास दाऊद को नाश
करनेहारी तलवार की मार से
बचाता है ।
११ सो तू मुझ को उबार और परदेशियों
के बश से छुड़ा
जिन के मुंह से व्यर्थ बात निकलती
और जिन के दहिने हाथ से
असत्कर्म्म किये जाते हैं ।
हमारे बेटे पौधों की नाईं लड़कपन १२
में बढ़ें
हमारी बेटियां उन कोनेवाले पत्थरों
के समान हों जो मन्दिर के पत्थरों
की नाईं खोदे जावें ।
हमारे खत्ते भरे रहें और उन में भांति १३
भांति का अन्न धरा जावे
हमारी भेड़ बकरियां हमारे चौगानों
में हजारों लाखों बच्चे जनें ।
हमारे बैल खूब लदे हुए हों १४
न कुछ हम पर शत्रुओं का टूट पड़ना
न कुछ हमारा बन्धुवाई में जाना
और न हमारे चौकों में कुछ रोना
पीटना होवे ।
इस दशा में जो समाज होवे सो क्या १५
ही धन्य होगा
जिस जाति का परमेश्वर यहोवा है
सो क्या ही धन्य है ।

१४५ दाऊद रचित । स्तुति का गीत ।

हे मेरे परमेश्वर हे राजा मैं तुझे १
सराहूंगा
और तेरे नाम को अनन्तकाल लों
धन्य कहता रहूंगा ।
दिन दिन मैं तुझ को धन्य कहा २
करूंगा
और तेरे नाम की स्तुति अनन्तकाल
लों करता रहूंगा ।

३ हे यहोवा तू महान् और स्तुति के अति योग्य है
और तेरी बड़ाई अनन्त है।
४ तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे पराक्रम के कर्म्मों का बर्णन
पीढ़ी पीढ़ी होता चला जावेगा।
५ मैं तेरे ऐश्वर्य्य की महिमा और प्रताप पर
और तेरे भांति भांति के आश्चर्य्यकर्म्मों पर ध्यान करूंगा।
६ और लोग तेरे भय और शक्ति के कर्म्मों की चर्चा करेंगे
और मैं तेरे बड़े बड़े कर्म्मों का बर्णन करूंगा।
७ लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उस की चर्चा करेंगे
और तेरे धर्म्म के विषय ऊंचे स्वर से गावेंगे।
८ यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु
धीरज के साथ कोप करनेहारा और करुणासागर है।
९ यहोवा सभों के लिये भला है
और उस की दया उस की सारी सृष्टि पर है।
१० हे यहोवा तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यबाद करेगी
और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे।
११ वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे
और तेरे पराक्रम के विषय बोलेंगे।

जिस्तें वे आदमवंशियों को तेरे पराक्रम के कर्म्म १२
और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें।
तेरा राज्य युगानयुग का है १३
और तेरी प्रभुता सारी पीढ़ियों में बनी रहेगी
यहोवा सब गिरनेहारों को सम्भालता १४
और बोझ से सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है।
सभों के नेत्र तेरी बाट की ओर लगे हैं १५
और तू उन को आहार समय पर देता है।
जब तू अपनी मुट्ठी खोलता है १६
तब सब प्राणी मनमानते आहार पाते हैं।
यहोवा अपनी सारी गति में धर्म्मी १७
और अपने सब कामों से स्नेही जान पड़ता है।
जितने यहोवा को पुकारते हैं उन सभों के वह निकट आता है १८
अर्थात् वह उन सब के निकट आता है जो उस को सच्चाई से पुकारते हैं।
वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा १९
और उन की दोहाई सुनके उन का उद्धार करेगा।
यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करेगा २०

पर सब दुष्टों को बिध्वंस करेगा ।
२१ मेरे मुंह से यहोवा की स्तुति निकला करेगी
सारे शरीरधारी उस के पवित्र नाम को अनन्तकाल लों धन्य कहते रहें ।

१४६

याह् की स्तुति करो
हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर ।
२ मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूंगा
जब लों मैं बना रहूंगा तब लों मैं अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा ।
३ हे लोगो तुम हाकिमों पर भरोसा न रखना
बल्कि किसी आदमबंशी पर भी न रखना क्योंकि उस में उद्धार करने की शक्ति नहीं ।
४ ज्यों उस का प्राण निकलता है त्यों ही वह मिट्टी में मिल जाता है
मरते ही उस की सब कल्पनाएं नष्ट हो जाती हैं ।
५ क्या ही धन्य वह है जिस का सहायक याकूब का ईश्वर हो
और जिस का आसरा अपने परमेश्वर यहोवा पर होवे ।
६ क्योंकि स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र
और उन में जो कुछ है सब का कर्त्ता यहोवा ही है
और वह सदा लों सच्चा ठहरा रहेगा ।
वह अन्धेर सहनेहारों का न्याय चुकाता ७
और भूखों को रोटी देता है
यहोवा बन्धुओं को छुड़ाता है ।
यहोवा अन्धों को आंखें देता है ८
यहोवा बोझ से झुके हुओं को सीधा करता है
यहोवा धर्म्मियों से प्रेम रखता है ।
यहोवा परदेशियों की रक्षा करता ९
और बपमूए और बिधवा को सम्भालता है
पर दुष्टों के मार्ग को वह टेढ़ा मेढ़ा करता है ।
यहोवा सदा लों राज्य करता रहेगा १०
हे सिय्योन् तेरा परमेश्वर पीढ़ी पीढ़ी राजा रहेगा
याह् की स्तुति करो ।

१४७

याह् की स्तुति करो १
क्योंकि हमारे परमेश्वर का भजन गाना भला काम है
बल्कि यह मनभावनी बात है स्तुति करनी फबती है ।
यहोवा यरूशलेम् को बसा रहा है २
वह धकियाके निकाले हुए इस्राएलियों को एकट्ठा कर रहा है ।
वह वही है जो खेदित लोगों का खेद दूर करता ३
और उन के शोकरूपी घावों पर शान्तिरूपी पट्टी बांधता है ।

४ वह तारागण की गिनती करता
और उन में से एक एक का नाम
रखता है।
५ हमारा प्रभु महान् और अति सामर्थी
है
उस की बुद्धि अपार है।
६ यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता
और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता
है।
७ हे लोगो धन्यबाद करते हुए यहोवा
का गीत गाओ
बीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर
का भजन गाओ।
८ वह वही है जो आकाश को मेघों से
छा देता
और पृथिवी के लिये मेंह बरसाने
की तैयारी करता
और पहाड़ों पर घास उगाता है।
९ वह पशुओं को आहार देता
बल्कि कौवे के बच्चे जब पुकारते हैं
तब वह उन को भी भोजन देता
है।
१० न तो वह घोड़े के बल की ओर
चित्त लगाता है
और न पुरुष के पैरों की दृढ़ता की
ओर।
११ पर यहोवा अपने डरवैयों ही पर
चित्त लगाता है
अर्थात् उन से जो उस की करुणा की
आशा लगाये रहते हैं।
१२ हे यरूशलेम् यहोवा की प्रशंसा कर
हे सिय्योन् अपने परमेश्वर की स्तुति
कर।
क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के बेण्डों १३
को दृढ़ किया
और तेरे निवासियों को आशीष
दिई है।
वह वही है जो तेरे लोगों में सन्धि १४
कराता
और उन को उत्तम से उत्तम गेहूं से
तृप्त करता है।
वह वही है जो पृथिवी पर अपनी १५
आज्ञा सुनाता है
उस का बचन अति बेग से दौड़ता
है।
वह वही है जो हिम ऊन का काम १६
देने को देता
और पाला राख की नाईं छितराता
है।
वह बरफ टुकड़े टुकड़े करके गिराता १७
है
उस की किई हुई ठण्ड को कौन सह
सकता है।
फिर वह अपनी आज्ञा से हिम १८
गलाता
जब वह वायु बहाता है तब जल
बहने लगता है।
वह याकूब को अपना बचन बताता १९
अर्थात् इस्राएल् को अपनी सब विधि
और न्यायबचन देता है।
किसी और जाति से उस ने ऐसा २०
व्यवहार नहीं किया

और उस के न्यायबचन जो हैं उन
को तो औरों ने जाना भी नहीं
याह् की स्तुति करो ।

१४८ याह् की स्तुति करो
यहोवा की स्तुति स्वर्ग में
करो
उस की स्तुति ऊर्द्धलोक में करो ।
२ हे उस के सारे दूतो उस की स्तुति करो
हे उस की सारी सेनाओ उस की
स्तुति करो ।
३ हे सूर्य्य और चन्द्रमा उस की स्तुति
करो
हे सारे ज्योतिमय तारो उस की स्तुति
करो ।
४ हे सारे स्वर्गों के ऊपरवाले स्वर्ग
और हे आकाश के ऊपरवाले जल तुम
दोनों उस की स्तुति करो ।
५ यें सब यहोवा के नाम की स्तुति करें
क्योंकि उस के बचन ही से वे बन
गये ।
६ और उस ने उन को युगानयुग के लिये
स्थिर किया
और ऐसी विधि ठहराई जो टलने
की नहीं ।
७ हे पृथिवीबासियो तुम भी यहोवा की
स्तुति करो
हे मगरमच्छो और गहिरे सागर के
सब जलजन्तुओ तुम भी स्तुति
करो ।
८ हे अग्नि और ओले हे हिम और
कुहरे
हे प्रचण्ड बयार तू जो उस के बचन
को मानती है ।
हे पहाड़ो और सब टीलो ९
हे फलदाई वृक्षो और सब देवदारुओ ।
हे बनपशुओ और सब ग्रामपशुओ १०
हे रेंगनेहारो और आकाशचारी
पक्षियो ।
हे पृथिवी के राजाओ और जाति ११
जाति के सब मनुष्यो
हे हाकिमो और पृथिवी के सब
न्यायियो ।
हे जवानो और कुमारियो १२
हे पुरनियो और बालको ।
तुम सब के सब यहोवा के नाम की १३
स्तुति करो
क्योंकि केवल उसी का नाम महान्
है
उस का ऐश्वर्य्य पृथिवी और स्वर्ग के
ऊपर है ।
और उस ने अपनी प्रजा के लिये बल १४
का एक सींग ऊंचा किया है
जो उस के सारे भक्तों
अर्थात् उस के समीप रहनेहारी
इस्राएली प्रजा के स्तुति करने के
योग्य है
याह् की स्तुति करो ।

१४९ याह् की स्तुति करो १
यहोवा का नया गीत
गाओ
उस की स्तुति भक्तों की सभा में हुआ
करे ।

२ इस्राएल् अपने कर्ता के हेतु आनन्दित
होवे
सिय्योन् के निवासी अपने राजा
यहोवा के कारण मगन होवें ।
३ वे नाचते हुए उस के नाम की स्तुति
करें
और डफ और बीणा बजाते हुए उस
का भजन गावें ।
४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न
रहता है
वह नम्र लोगों का उद्धार करके शोभाय-
मान करेगा ।
५ भक्त लोग अपनी महिमा के हेतु
प्रफुल्लित होवें
और अपने अपने बिछौनों पर पड़े पड़े
भी ऊंचे स्वर से गावें ।
६ उन के कण्ठ से ईश्वर की सराहना
होवे
और उन के हाथ में दोधारी तलवार
रहे ।
७ जिस्तें वे अन्यजातियों से पलटा लेवें
और सब लोगों को ताड़ना देवें ।
८ और उन के राजाओं को सिकड़ियों
से
और उन के प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे
की बेड़ियों से जकड़ रक्खें ।
९ और इस रीति उन को लिखे हुए के
अनुसार दण्ड देवें
उस के सारे भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा
होवेगी
याह् की स्तुति करो ।

१५०

याह् की स्तुति करो १
ईश्वर के पवित्रस्थान में उस
की स्तुति करो
उस के सामर्थ्य के चिन्हों से भरे हुए
आकाशमण्डल में उस की स्तुति
करो ।
उस के पराक्रम के कर्मों के हेतु उस २
की स्तुति करो
उस की अत्यन्त बड़ाई के अनुसार
उस की स्तुति करो ।
नरसिंगा फूंकते हुए उस की स्तुति ३
करो
सारंगी और बीणा बजाते हुए उस
की स्तुति करो ।
डफ बजाते और नाचते हुए उस की ४
स्तुति करो
तारवाले बाजे और बांसुली बजाते
हुए उस की स्तुति करो ।
ऊंचे शब्दवाली झांझ बजा बजाके ५
उस की स्तुति करो
आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजा
बजाके उस की स्तुति करो ।
जितने सांस लेनेहारे हैं ६
सब के सब याह् की स्तुति करें
याह् की स्तुति करो ॥